छत्तीसगढ़ी भाषा अउ बियाकरण

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण हेतु

संरक्षक

श्री पी. दयानंद (IAS)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक

श्री डी.के. बघेल
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

समन्वय

श्री वेंकट रमण मूर्ति
व्याख्याता, डाइट दुर्ग

लेखक मंडल

श्री राम कुमार वर्मा (प्रधान पाठक) शा.पूर्व.मा.शाला कोलिहापुरी, जिला–दुर्ग, श्री द्रोण कुमार सार्वा (शिक्षक) शा.पूर्व.मा.शाला चिचबोड़ वि.खं. गुण्डरदेही, जिला–बालोद, श्री जयकांत पटेल (व्याख्याता पं.) शा.उ.मा.वि. कोड़ेकसा, जिला–बालोद

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 पराथमिक किलास के पढ़ई–लिखई बर लइका मन के घर के भाखा म देबर कहिथे। हमर देस के महान बिद्वान महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद घलो पराथमिक इसकूल के पढ़ई–लिखई ल महतारी भाखा म दे के अड़बड़ समरथन करे हे। महतारी भाखा म पढ़ई–लिखई ले लइका मन के अंतस के झिझक दूरिहाथे अऊ भाखा ले जुड़े ऊकर डर ह भगा जाथे। ओमन अपन बात अऊ बिचार ल बने सरलगहा ढंग ले रख पाथे अऊ ऊकर बिकास के रद्दा ह चतरा जथे।

महतारी भाखा म पढ़ई–लिखई बर ए बात के बिसेस धियान रखे ल परही कि पाठ के पाछू के धारणा अऊ गियान के समझ ऊकर भाखा म ऊकर समझ के हिसाब ले दे जावय। हमन भाखा के गियान ले लइकामन ल जोड़त जादा ले जादा अवसर देवन। तभे हमन पढ़ई–लिखई के नवा उदीम म सिरतोन ढंग ले सफल हो पाबो।

''बियाकरण'' ह कोनो भाखा के परान होथे। इही बात के हियाव करत छत्तीसगढ़ी भाखा अऊ बियाकरन ल नान्हे लइका मन के तीर उकर गाँव गुड़ी के आखर ले जोड़ के राखे के हमर एक उदीम में जेकर मन के मिलिस ओमन ला हमन सहुँरावत हन। हमला बिसवास हे कि ''छत्तीसगढ़ी भाषा अऊ बियाकरण'' के ये माई कोठी ह सबो बर बड़ काम के होही।

डी.के. बघेल
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
(डाइट) अछोटी, दुर्ग छ.ग.

अनुक्रमणिका

बियाकरन के विषयवस्तु

क्र.	बियाकरन के विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमाँक	क्र.	बियाकरन के विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमाँक
1	भाषा/वर्णमाला	1-3	13	शब्द रूप	41-42
2	लिपि	4	14	संधि	42-44
3	संज्ञा	5-6	15	समास	45-48
4	सर्वनाम	6-8	16	अनकार्थ शब्द	49-54
5	विशेषण	8-11	17	पर्यायवाची	55-57
6	क्रिया	12-17	18	अनेक शब्द के लिए एक शब्द	57-66
7	काल	17-18	19	विलोम शब्द	67-77
8	अव्यय	19	20	अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द	78-91
9	लिंग	20-23	21	लोकोक्ति/मुहावरें	92-96
10	वचन	24-34	22	वाक्य विचार	96-97
11	कारक	34-39	23	संदर्भ	98-101
12	शब्द रचना	40-41			

छत्तीसगढ़ी भाषा अऊ बियाकरण

भाषा

अपने मन के विचारों, भावों की बोलकर, लिखकर या संकेतों द्वारा अभिव्यक्त करना ही भाषा है।

भाषा तीन प्रकार के होते हैं। (अपन मन के बिचार, भाव ल बोल अऊ लिख परगट करई ह भाखा ए। भाखा तीन किसम के होथे :

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
1. सांकेतिक भाषा –	इसारा के भाखा
2. मौखिक भाषा –	मुँहअखरा भाखा
3. लिखित भाषा –	लिखे भाखा

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
1. **सांकेतिक भाषा** : जब हम अपने मन के भाव या विचार शरीर के अंगों के इशारों से समझाते हैं तो यह सांकेतिक भाषा कहलाती है।	कोनो किसम ले इसारा करके समझई हा इसारा के भाखा कहाथे।
2. **मौखिक भाषा** : जब हम अपने भाव या विचार को ध्वनि के उच्चारण द्वारा अर्थात बोलकर अभिव्यक्त करते हैं तो उसे मौखिक भाषा कहते हैं।	अपन भाव अऊ बिचार ला कोनो बोली ले परगट करथन त ओहा मुँह अखरा भाखा होथे।
3. **लिखित भाषा** : अपने भाव या विचार को कुछ चिन्हों (लिपि) द्वारा प्रकट करना लिखित भाषा हैं।	अपन भाव अऊ बिचार ला कोनो चिन्हा (लिपि) ले परगट करथन त ओहा लिखित भाखा होथे।

छत्तीसगढ़ी भाषा

छत्तीसगढ़ी भाषा का विकास भारतीय आर्य भाषाओं की मध्यवर्ती शाखा अर्धमागधी से हुआ। इस भाषा को बघेली, अवधि के साथ पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत शामिल किया जाता है। यह छत्तीसगढ़ प्रदेश की समृद्ध भाषा है। छत्तीसगढ़ी भाषा में लोक साहित्य की प्रचुरता है। सरगुजा से बिलासपुर, दुर्ग से बस्तर अंचल तक आंचलिक प्रभावों से युक्त होते हुए संपूर्ण छत्तीसगढ़ को एक सूत्रता में यह भाषा जोड़कर रखती है।	छत्तीसगढ़ी भाखा के विकास भारतीय आर्य भाषा मंझोत भाग अर्धमागधी ले होय हे। ये भाखा ल बघेली, अवधि के संगे संग उत्ती डाहर के हिन्दी मं मिंझारे जाथे। ये छत्तीसगढ़ के पोठ भाखा ये। छत्तीसगढ़ी भाखा ह लोक साहित्य के छलकत माई कोठी ए। सरगुजा ले बिलासपुर, दुर्ग ले बस्तर तक ले अपन अतराब के असर ले भरे होय ले ये भाखा ह छत्तीसगढ़ ला एक सुतरी मं बाँध के राखथे।

वर्णमाला

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिसका विभाजन नहीं किया जा सकता, उस ध्वनि को 'वर्ण' व उसके समूह को 'माला' कहते हैं। अर्थात् वर्णों के क्रम को 'वर्णमाला' कहते हैं। जैसे :– अ, इ, य, क **प्रकार**– वर्ण दो प्रकार के होते हैं।	जेला बाँटे नइ जा सके, ओ आरो ल 'बर्ण' अऊ ओकर कड़ी मन ल 'माला' केहे जाथे। माने बर्ण मनके कड़ी ल 'बर्णमाला' केहे जाथे। जइसे :– अ, इ, य, क **किसम** – बर्ण दु किसम के होथे।

i) स्वरः— जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता लिए किया जाता है, उनको स्वर कहा जाता है। इनकी संख्या 11 है :—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

ii) व्यंजनः— जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहा जाता है :—

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्
य्	र्	ल्	व्	
श्	ष्	स्	ह्	
ड़	ढ़			
क्ष	त्र	ज्ञ		

अयोगवाह :— अं, अः

i) स्वरः— जेन बर्ण ल कोनो दूसर बर्ण ल संघेरे बिगर बोले जाथे, ओला स्वर केहे जाथे। येहा 10 ठन हे :—

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

ii) व्यंजनः— जेन बर्ण ल स्वर ल संघेर के बोले जाथे, ओला व्यंजन बर्ण केहे जाथे। येहा 32 ठन हे :—

क्	ख्	ग्	घ्		
च्	छ्	ज्	झ्		
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ड़	ढ़
त्	थ्	द्	ध्	न्	
प्	फ्	ब्	भ्	म्	
य्	र्	ल्	व्		
स्	ह्				
ड़	ढ़				

(ङ, ञ, ण् , श् , ष् , क्ष् , ज्ञ, अः , त्र् , श्र् बोल–लिखे नइ जाए।
जइसे :—दुःसासन = दुसासन, त्रिसूल = तिरसूल, श्रीराम = सिरीराम / स्रीराम

लिपि

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
भाषाओं को लिखने के लिए जिन संकेतों चिन्हों का उपयोग किया जाता हैं, उसे 'लिपि' कही जाती है। इसकी शुरूआत चित्रों से हुई है। हिन्दी को देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। यह 5वीं सदी ई.पूर्व से प्रचलित है और ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। इसी लिपि में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, नेपाली, सिंधी आदि भाषाओं को लिखी जाती है। इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है।	भाखा ल लिखे बर जेन चिनहा, बनाए जाथे, ओला 'लिपि' केहे जाथे। येकर चित्र बनाये ले सुरू होए हे। छत्तीसगढ़ी ल देवनागरी लिपि मं लिखे जाथे। येहा 5वीं सदी ई.पूर्व. ले चले आए हे। इही लिपि ले संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपश्रंश, हिन्दी, नेपाली, सिंधी ल घलोक लिखे जाथे। येहा ब्राह्मी लिपि ले जनमे हे।
जैस :– लड़का, मिठाई, रात, बरामदा, दादा, कुदाली, मेंढक, चमगादड़, तोता, मुर्गा, नमक, टमाटर, रोटी	जइसे :– लईका, मिठई, रतिहा, परछी, कुदारी, मेचका, चमगेदरी, मिट्ठू, कुकरा, नून, पताल, रोटी,

संज्ञा

<table>
<tr><th>हिन्दी</th><th>छत्तीसगढ़ी</th></tr>
<tr><td>
परिभाषा:– किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे:–

व्यक्ति – राम, मोहन, राधा आदि।
वस्तु – पुस्तक, कलम, कुर्सी आदि।
स्थान – दिल्ली, भोपाल, छत्तीसगढ़ आदि।
भाव – ईमानदारी, सहजता आदि।

संज्ञा के प्रकार
संज्ञा पाँच प्रकार के होते हैं –

(1) व्यक्ति वाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी एक वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध होता है उसे 'व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – देवकी नंदन, हिन्दी पुस्तक, चांदनी चौक आदि।

(2) जाति वाचक संज्ञा – जिन शब्दों से एक ही प्रकार की वस्तुओं या प्राणियों को बोध होता है उन्हें 'जाति वाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे – मनुष्य, वृक्ष, पत्थर आदि।

(3) पदार्थ वाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी ऐसी वस्तु को ज्ञान हो जिसका नाप–तौल किया जा सके उसे 'पदार्थ वाचक' संज्ञा कहते हैं। जैसे – लोहा, सोना, दूध, शक्कर, चाँवल आदि।
</td><td>
परिभाषा:– कोन्हो मनखे, जिनिस, ठउर (जघा) या भाव के नाम ला 'संज्ञा' केहे जाथे। जइसे:–

मनखे – रामलाल, रमेसर, सुखियारिन।
जिनिस – कुरता, कलम, खटिया।
ठउर – रइपुर, बलउद, दुरूग।
भाव – मइलहा, सुघरई, भलई।

संज्ञा के किसम (प्रकार)
हिन्दी सहि छत्तीसगढ़ी मा घलो संज्ञा हा पाँच किसम के होथे –

(1) व्यक्ति वाचक संज्ञा – जेन सब्द ले कोन्हो एक जिनिस, मनखे नइ ते जघा के पता चलथे, वोला 'व्यक्ति वाचक संज्ञा' केहे जथे। जइसे।– अंगरेजी कापी, सीताराम, तांदुला बाँध, गंगा मइया मंदिर।

(2) जाति वाचक संज्ञा – जेन सब्द ले एकेच किसम के जिनिस या परानी के पता चलथे वोला 'जाति वाचक संज्ञा' केहे जाथे।
जइसे – मनखे, माईलोगन, बइला, चिरई, पथरा।

(3) पदार्थ वाचक संज्ञा – जउन सब्द ले कोन्हो अइसे जिनिस जेला हम नाप तउल सकथन तेकर पता चलथे वोला 'पदार्थ वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे – सोना, चाँदी, चँउर, दार, दूद, सक्कर, चाय।
</td></tr>
</table>

(4) समूह वाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी प्राणी या वस्तु के समूह को ज्ञान हो उसे 'समूह वाचक' संज्ञा कहते हैं। जैसे – सेना, जनता, कक्षा आदि।	**(4) समूह वाचक संज्ञा** – जेन सब्द ले कोन्हो परानी या जिनिस के दल, झोरका, गुच्छा के पता चलथे वोला 'समूह वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे – बरदी, बरात, कोरी, पँचहर।
(5) भाव वाचक संज्ञा – जिस भाब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, धर्म, दशा या भाव आदि का ज्ञान होता है उसे 'भाव वाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे – सरलता, परोपकार, सेवा, दुष्टता आदि।	**(5) भाव वाचक संज्ञा** – जउन सब्द ले कोन्हो मनखे या जिनिस के बने, गिनहा नई ते हाव–भाव के पता चलथे वोला 'भाव वाचक संज्ञा' केहे जाथे। जइसे – लइकई, चतुरई, हदरही, सियानी, गुरूतर मिठ निक अम्मठ।

सर्वनाम

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
परिभाषाः– संज्ञा के बदले आने वाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं। सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है सबका नाम। अर्थात् संज्ञा का बार–बार प्रयोग न करते हुए उसके स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे सर्वनाम कहा जाता है।	परिभाषाः– संज्ञा के बदला अवइया सब्द ला 'सर्वनाम' केहे जाथे। सर्वनाम मानेसबके नाम। केहे जाय ता संज्ञा ला घेरी–बेरी न लिख बोल के ओखर जघा मे जउन सब्द ला काम मे लाए जाथे, उही ला सर्वनाम केहे जाथे।
सर्वनाम के प्रकार –	**सर्वनाम के किसम (प्रकार)**
(1) पुरूष वाचक सर्वनाम – वक्ता, श्रोता और अन्य (जिसके सम्बंध में बात हो) का बोध कराने वाला सर्वनाम पुरूष वाचक सर्वनाम कहलाता है।	**(1) पुरूष वाचक सर्वनाम** – गोठियइया, सुनइया अउ कोन्हो आने के जानकारी देवइया सर्वनाम ल 'पुरूष वाचक सर्वनाम' केहे जाथे।
अ) उत्तम पुरूष – इसमें लेखक या वक्ता आता है। सर्वनामः– मैं, मेरा, हम, हमारा।	**अ) उत्तम पुरूष** – ये मा लिखइया या कहइया मन आथे। सर्वनामः– मे, में, मोर, मेहा, हम, हमन, हमर।

ब) मध्यम पुरूष – इसमें पाठक या श्रोता आते हैं। सर्वनामः– तुम, तुम्हारा, आप, आपका।	**ब) मध्यम पुरूष** – ये मा पढ़इया अउ सुनइया मन आथे। सर्वनाम :– ते, तँय, तुँहर, तोर, तुम्हार, तुमन, तुइमन, तुम्हारमन।
स) अन्य पुरूष – इसमें लेखक, वक्ता, पाठक, श्रोता को छोड़कर अन्य लोग आते हैं। सर्वनामः– वह, वे, उनके, इनके, उसके, इसके।	**द) अन्य पुरूष** – **येमा** लिखइया, गोठियइया, पढ़इया, सुनइया ला छोड़के कोन्हों आने हा आथे। सर्वनामः– ए, ये, इन, एकर, ए–मन, ई–मन, इन, ए–कर, इन्हर।
(2) निजवाचक सर्वनाम – वक्ता या लेखक अपने लिए जिन सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है, उन्हें 'निजवाचक सर्वनाम' कहते हैं। जैसे– अपना, स्वयं, स्वतः, आप, खुद। उदा.– मैं अपना कार्य स्वयं कर लेता हूँ।	**(2) निजवाचक सर्वनाम** – गोठियइया या लिखइया अपन बर जोन सर्वनाम सब्द ला काम में लाथे वोला 'निजवाचक सर्वनाम' केहे जाथे। जइसे– अपन, सियम, खुदे, सवांगे। उदा.– अपन बुता में खुदे कर डारथों।
(3) प्रश्नवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनामों से किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के सम्बंध में प्रश्न का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – कब, कहाँ, किसे, कौन, किसने, क्या आदि। उदाहरण :– आप रायपुर कब जा रहे हैं ?	**(3) प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जेन सर्वनाम ले कोन्हों मनखे, जिनिस या घटना ले सम्बंधित प्रस्न के बात पता चलथे वोला प्रश्नवाचक सर्वनाम केहे जाथे। जइसे– कब, कहाँ, केती, कोन हा, कोन ला, केते कर, कइसे। उदाहरण :– आपमन रइपुर कब जावत हौं ?
(4) सम्बंधवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनाम शब्दों से दो भिन्न बातों का सम्बंध प्रकट होता है, उन्हें सम्बंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– जो, जिसे, जिसका, वो, उसे, जैसे, वैसे। उदाहरण :– उसे चार रोटी देना।	**(4) सम्बंधवाचक सर्वनाम** – जेन सर्वनाम सब्द ले दू अलग–अलग बात के जुड़े के पता चलथे, वोला सम्बंधवाचक सर्वनाम केहे जाथे। जइसे– जउन–तउन, जेखर–तेखर, जइसन–तइसन, जे, जेहर, जोन, जिन, जउन, ते, ते–हर, तऊन। उदाहरण :– जेन आही तेन पाही।
(5) निश्चयवाचक सर्वनाम – किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, घटना या कर्म के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे– यह, ये, इन्हें, इनका, वह, वे, उन्हे, उनका। उदा.– वह अच्छा है।	**(5) निश्चयवाचक सर्वनाम** – कोन्हो तय मनखे, जिनिस, घटना या करम बर लगे सर्वनाम निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाथे। जइसे– ए, एहर, वो, वोहर, एकर, वोकर। उदा.– वो ओग्गर हे।

(6) अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– कोई, कुछ। उदा.– कोई आ रहा है।	**(6) अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – जेन सर्वनाम सब्द ले कोन्हों तय जिनिस के पता नइ चले, वोला अनिश्चयवाचक सर्वनाम केहे जाथे। जइसे– कोन्हों, कोइ, कुछु। उदा.– मे कुछु खाय रतेंव।

विशेषण

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण–दोष या विशेषता का पता चलता है, उसे 'विशेषण' कहा जाता है। विशेषण के प्रयोग से विशेषता पूरी तरह से मर्यादित व अर्थ सीमित हो जाती है। जैसेः– **i)** रमौतीन 'पतली' शरीर की है। **ii)** मेरे पास 'लाल' गुलाब है। यहाँ 'पतली' व 'लाल' शब्द संज्ञा की विशेषता एकदम से मर्यादित कर दिए हैं। विशेषणों की रचना :– रूप–रचना की दृष्टि 'हिन्दी' में विशेषणों के दो भाग किये जा सकते हैं :– **क) मौलिक विशेषण** :– जो शब्द उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य शब्दों को जोड़े बिना ही संज्ञा या सर्वनाम की किसी विशेषता को बताते हैं, उसे 'मौलिक विशेषण' कहते हैं। जैसे :– कच्चा ठंडा	जेन सबध संज्ञा अउ सर्वनाम के गुन–दोष अउ बिसेसता ल बताथे, ओला बिसेसन केहे जाथे। बिसेसन ककरो बिसेसता सब्बो किसम ले मरजाद मं हो जाथे। जइसे :– **i)** रमौतीन ह 'पातर' देह के हे। **ii)** मोर मेर 'लाल' गुलाब हे। इहाँ 'पातर' अऊ 'लाल' सबद संज्ञा के बिसेसता ल एकदमेच मरजाद मं रख दे हे। बिसेसन मनके रचना (सिरजन) :– रूप–रचना के मुताबिक 'छत्तीसगढ़ी' में बिसेसन मनके दु भाग केहे जा सकथे :– **क) निमगा बिसेसन** :– जेन सबद ल उपसर्ग, प्रत्यय नइते दूसर सबद के बिगर संज्ञा अऊ सर्वनाम के बिसेसता ल बताथे ओला निमगा बिसेसन कहे जाथे। जइसे :– कइंच्चा / काचा जूड़

ख) यौगिक विशेषण :– जो शब्द उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य शब्द के साथ जुड़ने से विशेषण बनते हैं, उन्हें 'यौगिक विशेषण' कहते हैं। ये मूल शब्द की विशेषता को व्यक्त करते हैं।

जैसे :– देन + दार – देनदार (देनेवाला)

पालन + हार– पालनहार (पालनेवाला)

प्र + चार – प्रचार (फैलाना)

अध + मरा – अधमर (घायल)

पहरा + दार – पहरादार (पहरा देनेवाला)

विशेषण के प्रकार :–

विशेषणों का परिणाम, गुण एवम् संख्या के आधार पर पाँच प्रकार है।

1) गुणवाचक विशेषण
2) संख्यावाचक विशेषण
3) परिणामवाचक विशेषण
4) संकेतवाचक विशेषण
5) व्यक्तिवाचक विशेषण

आइए, अब इन प्रकारों को थोड़ा विस्तार से जानें।

1) **गुणवाचक विशेषण** :– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष को व्यक्त करते हैं, उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं।

जैसेः–(क) गिलास में 'गर्म' दूध है।

ख) यौगिक बिसेसन :– जेन सब्द उपसर्ग, प्रत्यय नइ ते दूसर सबद के संग जुरे ले बिसेसन बनथे। ओला 'मिझरा' केहे जाथे। येहा निमगा सब्द के बिसेसता ल परगट करथे।

जइसे :– देंह + उतार – देंहउतार (सुस्त बैठे रहने वाला।)

कन + घटोर – कनघटोर (सुनकर अनसुना करने वाला)

जोतन +दार – जोतनदार (जुताई करने वाला)

गुना + गार – गुनागार (गुनाह करने वाला)

तारन + हार – तारनहार (पार लगाने वाला)

बिसेसनमन के परिनाम गुन अऊ गिनती के मुताबिक पाँच किसम हे।

1) गुनबाचक बिसेसन
2) संख्याबाचक बिसेसन
3) परिणामबाचक बिसेसन
4) संकेतबाचक बिसेसन
5) मनखेबाचक बिसेसन

आवव, अब ये प्रकार मन ल थोरिक बिस्तार ले जानन।

1. **गुनबाचक बिसेसनः**– जे सब्द संज्ञा अउ सर्वनाम के गुन दोस ल परगट करथे, ओला गुनबाचक बिसेसन केहे जाथे।

जइसे :– (क) गिलास मं 'गरम' दूध हे।

(ख) बगीचा में 'लाल' गुलाब है। (ग) पेड़ के फल 'मीठे' हैं। (घ) नदी का पानी 'साफ' है।	(ख) बगीचा मं 'लाली' गुलाब हे। (ग) रूख के फर 'मीठ' हे। (घ) नंदिया के पानी 'फरी' हे।
गर्म खाली सामने पीछे	तात रिता / रित्ता आघू पाछू
2) **संख्यावाचक विशेषण** :— जिन शब्दों से किसी वस्तु की संख्या संबंधी विशेषता प्रकट होती हैं, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते है।	2) **संख्याबाचक बिसेसन** :— जेन सब्द ले कोनो जिनिस के गिनती के बारे मं बिसेसता परगट होथे, ओला संख्याबाचक बिसेसन केहे जाथे।
जैसे :— (क) मेरे पास चार पुस्तक है। (ख) कल चार मेहमान आये। (ग) गुच्छा में बीस केले थे। (घ) मुझे सतरंगी फीता खरीदनी है।	जैसे :— (क) मोर मेर चार किताब हे। (ख) काली चार सगा आइन। (ग) झोथ्था मं बीस केरा रिहिस। (घ) मोला सतरंगी फीता बिसाना हे।
3) **परिणामवाचक विशेषण** :— जिस शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की नाप—तौल से जुड़ी विशेषता प्रकट होती है, उसे परिणामवाचक विशेषण कहते हैं।	3) **परिणामबाचक बिसेसन** :— जेन सबद मन ले संज्ञा अऊ सर्वनाम के नाप—जोख ले जुड़े बिसेसता परगट होथे, ओला परिणामबाचक बिसेसन केहे जाथे।

जैसे :— (क) घर में रोज तीन लीटर दूध लगता है।

(ख) मेरी प्यास दो गिलास पानी से बूझेगी।

(ग) घर से स्कूल दो किलामीटर है।

(घ) इस साड़ी की लम्बाई पाँच मीटर है।

4. संकेतवाचक विशेषण :— जब किसी वाक्य में सर्वनाम शब्द विशेषण की भाँति प्रयोग किया जाता है, तब वह संकेतवाचक विशेषण कहलाता है। इसमें किसी अन्य की ओर संकेत मिलता है।

जैसे :—

क) वहाँ 'कौन' गा रहा है ?
ख) 'यह' कमीज मेरे भाई की है।
ग) 'किसका' घोड़ा जा रहा है।
घ) 'उसे' रायपुर जाना पड़ेगा।

5. व्यक्तिवाचक विशेषण : जो शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनते हैं उसको व्यक्तिवाचक विशेषण कहा जाता हैं।

जैसे:

क) मैं मैत्रीबाग घूमने जा रहा हूँ।
ख) 'तोतापल्ली' आम मीठा होता है।
ग) 'रायपुर' की बिछिया प्रसिद्ध है।
घ) 'राजिम' संगम में नहा कर लोग आनंदित होते हैं।

जैसे :— (क) घर मं रोजे तीन लीटर दूध लागथे।

(ख) मोर पियास दु गिलास पानी ले बुझाही।

(ग) घर ले स्कूल दु किलामीटर हे।

(घ) ये लुगरा ह पाँच मीटर लम्हरी हे।

4. संकेतवाचक विसेषण :— कोनो डाड़ मं 'सर्वनाम' सब्द बिसेसन जइसे बाले जाथे, त ओला संकेत वाचक बिसेसन कहाथे। येमा कोनो दूसर के इसारा मिलथे।

जइसे :

क) उहाँ 'कोन' गावत हे ?
ख) 'ये' कुरथा मोर भाई के आय।
ग) 'काखर' घोड़ा जावत हे।
घ) 'ओला' रायपुर जाये बर परही।

5. व्यक्तिवाचक विसेषण : जने सब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा मन ले बनथे, ओला व्यक्तिवाचक बिसेसन केहे जाथे।

जइसे :

क) 'मेहा' मैत्रीबाग घूमे बर जावत हौं।
ख) 'तोतापल्ली' आमा मीठ होथे।
ग) 'रायपुर' के बिछिया जग जाहिर हे।
घ) 'राजिम' संगम मं असनान ले मनखेमन मगन होथें।

क्रिया

<table>
<tr><th>हिन्दी</th><th>छत्तीसगढ़ी</th></tr>
<tr><td>जिन शब्दों से किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध होता है, उन शब्दों को क्रिया कहते हैं।
जैसे : गाना, नाचना, खेलना, चलना, जागना, चढ़ना, तैरना आदि
प्रकार : क्रिया दो प्रकार की होती है :–
1) सकर्मक
2) अकर्मक

आइए, इनकी परिभाषा और भेद को जानें।
1) सकर्मक क्रिया :– जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ कर्म लगा रहता है, तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे :– क) मैं ढोल बजा रहा हूँ।
ख) गीता पानी ला रही है।
ग) रमेश आम खा रहा है।
घ) मीना केला खा रही है।
2) अकर्मक क्रिया :– जब किसी वाक्य मं क्रिया के साथ कर्म नहीं होता है, तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे :–
क) मैं नहाता हूँ।
ख) वह खाता है।
ग) बच्चा खेलता है।
घ) मैं लिखता हूँ।</td><td>जेन सब्द ले कोनों काम होय नइ ते करे के बोध, जानबा होथे, ओला क्रिया कहिथे।
जइसे: गाबो, नाचबो, खेलबो, रंगबो, जागबो, चढ़बो, तउरबो
'क्रिया' दु किसम के होथे –
1) सकर्मक
2) अकर्मक

आवव, होकर परिभाषा अऊ भेद ल जानन।
1) सकर्मक क्रिया :– कोनो डाड़ मं क्रिया के संग कर्म लगे रहिथे, त ओला सकर्मक क्रिया कहिथें।
जइसे : क) मेहा ढोल बजावत हौं।
ख) गीता पानी लावत हे।
ग) रमेस आमा खावत हे।
घ) मीना केरा खावत हे।</td></tr>
</table>

इन वाक्यों में 'क्रिया' के साथ 'कर्म' नहीं है।

अकर्मक क्रिया –

क्रिया निर्माण विधि :– छत्तीसगढ़ी में निम्नानुसार क्रिया निर्माण होता है :–

1) क्रिया के अंतिम अक्षर 'ना' की जगह 'बो' या 'बे' का प्रयोग होता है।

जैसे :–

हिन्दी	**छत्तीसगढ़ी**
करना	करबो
कहना	कहिबो
पकड़ना	पकड़बो
पटकना	पटकबो
काटना	काटबो
रहना	रहिबो

2) शब्द के अंत में आया 'ओ' का उच्चारण 'ए' में बदल जाता है।

जैसे –

हिन्दी	**छत्तीसगढ़ी**
लो	ले
दो	दे
खाओ	खा ले (खाए)
पीओ	पी ले (पीए)
देखो	देख ले, देखे

3) शब्द के अंत में आकारांत अक्सर 'र' उच्चारित होता है या मूल शब्द में भी परिवर्तित हो जाता है। 'आ' की मात्रा लुप्त हो जाती है, तो कहीं पर मात्राओं में वृद्धि भी हो जाती है।
जैसे :–

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
भरा	भरे
टपका	टपके
गिरा	गिर
कूदा	कूद
गीला	गील
ढीला	ढील
होता	होत
गया	गे

4) 'क्या' के लिए अकेला 'का' बोला जाता है।
जैसे:

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
क्या कर रहे हो ?	का करत हस ?
क्या काट रहे हो ?	का काटत हस ?
क्या रख रहे हो ?	का राखत हस ?
क्या ठोंक रहे हो ?	का ठेंसत हस ?

5) कई जगह पर छत्तीसगढ़ी वाक्यों के शब्दों में 'आ, ओ, 'ई' और 'ऐ' की मात्राएँ शब्दों में लुप्त हो जाती हैं तथा कहीं–कहीं पर इनमें वृद्धि भी हो जाती है।
जैसे :

हिन्दी	**छत्तीसगढ़ी**
लज्जा	लाज
जाना	जा
खाओ	खा
फूँकते	फूँकत
फूटती	फूटत
लाई	लानेस
गिरती	गिरत

6) हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में मूल धातु के साथ 'ना' प्रत्यय जोड़कर क्रिया बनायी जाती है।
जैसे –

धातु	प्रत्यय	क्रिया
अँइठ	ना	अँइठना
छिटका	ना	छिटकना
ठहिर	ना	ठहिरना
बिलम	ना	बिलमना

7) छत्तीसगढ़ी में अनेक क्रियाएँ मूल धातु में 'ब' युक्त होने से बनती हैं। ये 'बांत' क्रियाएँ कहलाती हैं, क्योंकि इन शब्दों के अंत में 'ब' वर्ण का उच्चारण होता है।

जैसे :–

धातु	प्रत्यय	क्रिया
जा	ब	जाब
रेंग	ब	रेंगब
पसर	ब	पसरब
हबर	ब	हबरब

8) छत्तीसगढ़ी में क्रिया शब्द अधिकरण कारक के विभक्ति चिन्ह के साथ प्रयुक्त होने पर नांत क्रियाओं के 'ना' प्रत्यय का लोप हो जाता है और धातु के साथ 'ए' जुड़कर एकारांत को जाता है। जबकि बांत क्रियाएँ अपनी मूलावस्था में रहती हैं।

नांत क्रियाएँ	
क्रिया	**विभक्ति युक्त रूप**
खाना	खाए मा (खाने में)
गाना	गाए मा (गाने में)
इतराना	इतराए मं (शरारत करने में)
जाना	जाए मां (जाने में)
मतलाना	मतालाए मा (गंदा करने में)

बांत क्रियाएँ	
क्रिया	**विभक्ति युक्त रूप**
खाब	खाब मा
गाब	गाब मा
इतराब	इतराब मा
जाब	जाब मा
मतलाब	मतलाब मा

9) हिन्दी की भाँति छत्तीसगढ़ी में भी धातुओं के अलावा संज्ञा व विशेषण से भी क्रियाएँ बनती हैं।

जैसे :–

संज्ञा	प्रत्यय	क्रिया
लाज	आना	लजाना (शर्माना)
काम	आना	कमाना (कार्य करना)
मोह	आना	मोहाना(मुग्ध होना)
गोठ	इयाना	गोठियाना (बातें करना)

विशेषण	प्रत्यय	क्रिया
करिया	ना	करियाना (काला होना)
गोरिया	ना	गोरियाना (गोरा होना)
चिकना	ना	चिकनाना (चिकना करना)
ढरवा	ना	ढरवाना (ढलवाना)

काल

परिभाषाः— सामान्यतः समय को ही 'काल' कहा जाता है। किसी वाक्य में क्रिया का वह स्वरूप जो कार्य के होने अथवा कार्य के करने का बोध कराता है, काल कहलाता है। काल तीन प्रकार के होते हैं : 1. **वर्तमान काल**— जो क्रिया शब्द कार्य के अभी–अभी होने का बोध कराते हैं, वे वर्तमान काल कहलाते हैं। उदाहरणः— (1) सूर्य निकल रहा है। (2) मैं खेल रहा हूँ।	**परिभाषाः**— वइसे देखे जाय त समे ल ही काल केहे जाथे। कोन्हों डांड़, वाक्य में क्रिया के वो रूप जे काम के होय या काम के करे के जनकारी कराथे, उही ला काल केहे जाथे। काल तीन किसम ले होथे 1. **बरतमान काल**— जेन क्रिया सब्द काम के अभी–अभी होय के जनकारी देथे, वो हा बरतमान काल कहाथे। उदाहरनः— (1) बेर उवत हे। (2) में खेलत हँव।

(3) मैं पढ़ाई करता हूँ। (4) हम प्रतिदिन विद्यालय जाते हैं। (5) तुम बाजार जाते हो। जान लें, जिन वाक्यों के अंत में रहा है, रही है, रहे हैं, ता है, ती है, ते हैं या हो आदि होता है, वे वर्तमान काल के सूचक हैं।	(3) हमन रोज इसकूल जाथन। (4) ते गाना गाथस। ये बात जान लेवन कि जेन वाक्य के आखिर में हे, हँव, हन, थन, थस आथे, वो हा बरतमान काल के पहिचान कराथे।
2. **भूतकाल**— जो शब्द बीत चुके समय में काम के होने का बोध कराता है, उसे भूतकाल कहते हैं। उदाहरणः— (1) मैं कल मंदिर गया था। (2) राम ने मारीच का वध किया था। (3) मैनें खाना खाया। (4) हम पुस्तक पढ़ रहे थे। (5) तुम घर पहुँच चुके थे। जान लें, जिस वाक्य की क्रिया में था, थी, थे, चुका, चुकी, चुके आदि हों, वे भूतकाल होते हैं।	2. **भूतकाल**— जोन सब्द बीते बेरा–बखत में काम के होय के पहिचान कराथे, वोला भूतकाल केहे जाथे। उदाहरनः— (1) काली में मंदिर गे रेहेंव। (2) राम ह रावन ला मारे रिहिस। (3) हमन जाम टोरे ल गे रेहेन। (4) ते गिनती लिखत रेहेस। ये बात ला जान लेवन कि जेन वाक्य के आखिर में रेहेंव, रेहेन, रिहिस या कहन कि 'इस', 'एन', या 'इन' प्रत्यय वाले सब्द आथे वो हा भूतकाल के पहिचान कराथे।
3. **भविष्यत काल**— जिस क्रिया शब्द से भविष्य (आगे आने वाले समय) का बोध होता है, उसे भविष्य काल कहा जाता है। उदाहरणः— (1) हम कल चिड़ियाघर घूमने जाएंगे। (2) मैं कल रायपुर जाऊँगा। (3) सीता गाना गाएगी। (4) मैं रोटी खाऊँगा। जान लें, जिन क्रिया के अंत में, गा, गे, गी जुड़ा हो, उनसे यह पता चलता है कि काम भविष्य में होगा। यही भविष्य काल का सूचक है।	3. **भबिसत काल**— जेन क्रिया सब्द ले भबिस या आघू अवइया बेरा के पता चलथे, वो हा भबिसत काल होथे। उदाहरणः— (1) हमन काली मैतरी बाग घूमे ल जाबो। (2) काली मोर नाना आही। (3) में हा अँगाकर खाहूँ। (4) ते केते डाहर ले आबे? ये बात ला जानन कि जेन क्रिया के आखरी में आबे, आही, आहूँ, आबो प्रत्यय वालो सब्द आथे वो हा भबिसत काल के पहिचान कराथे।

अव्यय (अविकारी शब्द)

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
परिभाषाः— जिन शब्दों पर लिंग, वचन, काल का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता, जो हमेशा एक से रहते हैं, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं। जैसे— यहाँ, वहाँ, धीरे–धीरे, थोड़ा, तथापि, और, क्योंकि, अरे, जो आदि। उदाहरण— 1) मैं घर जाऊंगा **और** हाथ पैर धोऊँगा। 2) परिश्रम करो **क्योंकि** परिश्रम का फल मीठा होता है। उपरोक्त उदाहरणों में 'और' एवं 'क्योंकि' शब्द के प्रयोग से वाक्य के लिंग, वचन, काल में कोई परिवर्तन नहीं आया। इसलिए ये अव्यय या अविकारी शब्द हैं।	**परिभाषाः**— जेन सब्द के उप्पर लिंग, वचन काल के कोई असर नइ पड़े, जेन हा सबो जघा एक जइसे रहिथे, वोला अव्यय केहे जाथे। जइसे— अउ, इहाँ, उहाँ, अउ, काबर कि आदि। उदाहरनः— 1) में नास्ता करहूँ **अउ** स्कूल जाहूँ। 2) मेहनत कर **काबर कि** मेहनत के फल मीठ होथे। उप्पर के उदाहरन में 'अउ' के संग 'काबर कि' सब्द के लगे ले वाक्य के लिंग, वचन या काल में कोन्हों बदलाव नइ आय हे। ओकरे सेती ये मन हा अव्यय शब्द हरे। वइसे हमला एक बात अउ जानना जरूरी हे के छत्तीसढ़ी के क्रिया मन में लिंग के भेदभाव नइ हे। जइसे हिन्दी मा लड़का कहे त 'मैं पुस्तक पढ़ता हूँ' इही बात ला लड़की कहे त 'मैं पुस्तक पढ़ती हूँ' फेर छत्तीसगढ़ी में नोनी–बाबू दूनो हा एक्के कही 'में पुस्तक पढ़थों'।
अव्यय के भेद **1) क्रिया विशेषण**— प्रतिदिन, कम, तेज, कहाँ, यहाँ, अभी, कल, आज, परसों, ऐसे, वैसे, झूठ, सच, थोड़ा, उतना, कितना, बहुत आदि। **2) सम्बंधबोधक**— पर, के ऊपर, के सामने, के अंदर, के यहाँ, से पहले आदि। **3) समुच्चयबोधक (योजक)**— और, लेकिन, तथा, ताकि, तो, अतः, अन्यथा, या, अथवा, एवं, व, ताकि, क्योंकि आदि। **4) विस्मयादिबोधक**— वाह!, अरे!, हाय!, शाबाश!, छीं छीं!, अच्छा!, ओ!, रे!, हे!, हाय–हाय!, बाप रे!, क्या!, सच! आदि।	**अव्यय के भेद** **1) क्रिया विशेषण**— काली, पउर, बिहनिया, एती, लिंघा, घलो, नइ, लटपट, सिरतोन, चिटिक, थोरकुन, बेसी (अधिक), रंचक (रंच मात्र) आदि। **2) सम्बंधबोधक**— खातिर, खाल्हे, माँझ, मेर, ले, सन आदि। **3) समुच्चयबोधक**— अउ, पुन, फेर, के, जेमा, जोन, काबर कि, चाहे, झन, धन, पाके, भलुक आदि। **4) विस्मयादिबोधक**— अरे ददा रे!, बबा रे!, गजब होगे!, ये दई!, ये ददा!, छी दई!, थू!, धूर रे!, अच्छा! आदि।

लिंग

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
शब्द के जिस रूप से पुरूष अथवा स्त्री जाति का पता चलता है, वह लिंग कहलाता है। उदाहरण :– 1. राम जाता है। 2. सीता जाती है।	सब्द के जेने रूप ले पुरूष (मरद) नई ते नारी (स्त्री) जात के पता चलथे लिंग कहलाथे। जइसे :– 1. राम जावत हे। 2. सीता जावत हे।
यहाँ राम पुरूष जाति का और सीता स्त्री जाति का बोध कराती है।	इहाँ राम ह पुरूष जात ल बतावत हे अऊ सीता लिखे ले नारी जात के पता चलथय, त राम पुल्लिंग अऊ सीता ह स्त्रीलिंग सब्द हरे।
इस प्रकार लिंग दो प्रकार के होते है :–	**लिंग के प्रकार** लिंग दु परकार के होथे :–
1. **पुल्लिंग** – जिन शब्दों से पुरूष जाति का बोध होता है। जैसे :– रामलाल, कुकरा, घोड़वा, डोकरा।	1. **पुल्लिंग** :– जेन शब्द ले पुरूष (मरद) जात के पहिचान होथे। जइसे :– रामलाल, कुकुरा, घोड़वा, डोकरा, मास्टर।
2. **स्त्रीलिंग** – जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है। जैसे :– रामबती, कुकरी, घोड़वी, डोकरी	2. **स्त्रीलिंग** – जेन शब्द ले नारी (स्त्री) जात के पहिचान होथे। जइसे :– रामबली, कुकरी, घोड़वी, डोकरी, मास्टरिन।
छत्तीसगढ़ी में कुछ संज्ञा उभयलिंगी होते हैं नपुसंकलिंग नहीं होते हैं। जैसे – जहुरियाँ (समवयस्क स्त्री या पुरूष) परानी (पति या पत्नि) चिरई, लइका, गरूवा, आदि।	छत्तीसगढ़ी म कोनो–कोनो शब्द मन दूनो लिंग म परयोग होथे जइसे – जहुरियाँ (समन्वयक पुरूष या स्त्री) परानी (पति या पत्नि) चिरई, लइका, गरूआ, आनि–आनिं

छत्तीसगढ़ी में लिंग परिवर्तन सामान्य नियम :–

1. छत्तीसगढ़ी में बहुत से संज्ञा अपने मूल रूप में पुरूष लिंग और स्त्रीलिंग रूप में है जिसमें :–

पुल्लिंग रूप में – पुरूषों के नाम (मंगलू, चैतू), जीव – जानवर के नाम, (भइसाँ, कउवाँ), ग्रह (शनि, राहु), पहाड़ (काबरा, सिहावा) अन–धन (गेहूँ, चना, धान) धातु (सोना, ताँबा)

स्त्रीलिंग रूप में नारियों नाम (सुकारो, मनटोरा) आखिर में ई से जुड़े शब्द (माटी, लउठी, खेखर्री, भुसड़ी) नदी के नाम (शिवनाथ, महानदी,) अन – धन (उरीद–मूँग) आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा शब्द के आखिर म –इन– जोड़ के पुल्लिंग ने स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।
   जैसे :– किसान–किसानिन, मास्टर – मास्टरिन, देवार ले देवारिन
3. 'वा' या ' रू' प्रत्यय वाला शब्द में 'इया' जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाते है।
   जैसे :– बछुआ/बछरू – बछिया, पड़वा – पंड़िया
4. आखिर म 'ई' जुड़े संज्ञा शब्द में 'निन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनाए जाते है।

जैसे :– नाती–नतनिन, ऊँट –उटनिन, बघवा–बघनिन
ऐसे ही 'ईया' प्रत्यय वाले शब्दों में
गऊँटियाँ – गउटनिन

छत्तीसगढ़ी म लिंग बदलना :–
सामान्य नियम

1. छत्तीसगढ़ी म बहुत अकन संज्ञा मन अपन सिरतोन रूप म पुरूष लिंग अऊ स्त्रीलिंग रूप म हवय जेमा :–

पुल्लिंग रूप म – मरद मन के नाव (मंगलू, चैतू), जीवन–जिनावर के नॉव, (भइसाँ, कउवाँ), ग्रह (शनि, राहु) पहाड़ (कबरा, सिहावा) अन–धन (गेहूँ, चना, धान) धातु म (सोना, ताँबा)

अइसनहा स्त्रीलिंग रूप मा नारी परानी के नाव (सुकारो, मनहोरा) आखिर म ई ले जुड़े सब्द (माटी, लउठी, खेखर्री, भुसड़ी) नदी के नाव (शिवनाथ, महानदी) अन–धन (उरीद–मूँग) आनि–आनि।

2. जातिवाचक संज्ञा सब्द के आखिर म 'इन' जोड़ के घला पुल्लिंग ले स्त्रीलिंग बनाए जाथे।

जइसे :– किसान–किसानिन, मास्टर–मास्टरिन, देवार ले, देवारिन

3. 'वा' या 'रू' प्रत्यय वाला सब्द म 'इया' जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।
   जइसे :– बछुवा/बछरू– बछिया, पड़वा – पंड़िया
4. आखिर म 'ई' जुड़े संग्या सब्द म 'निन' प्रत्ययलगा के स्त्रीलिंग बनाए जाथे।
   अइसे 'ईया' प्रत्यय वाले सब्द मन मा घलोक।
   गउँटियाँ – गऊँटनिन
   पहाटिया – पहाटनिन

5. कुछ संज्ञा शब्दों में 'आइन' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाए जाते है। जैसे :– ठाकुर – ठाकुराइन साहेब–साहेबाइन	5. कोनो–कोनो संग्या म 'आइन' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनाए जाथे। जइसे :– ठाकुर – ठकुराइन साहेब – साहेबाइन
6. इसी प्रकार आकारांत संज्ञाओं में 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं। जैसे :– दुल्हा–दुलही, डउका–डउकी, टूरा–टूरी	6. आखिर म 'आ' लगे संग्या सब्द म 'ई' प्रत्यय लगा के स्त्रीलिंग बनाए जाथे। जइसे :– दुलहा – दूलही, डउका – डउकी, कोंदा–कोंदी, भोभला–भोभली, टूरा–टूरी
7. कुछ पशु–पक्षियों में लिंग पहचानने के लिए नाम के पूर्व नर या मादा लगा दिया जाता है। जैसे :– नर गुड़ेला–मादा गुड़ेला	7. जीवन जिनावर म लिंग के पहिचान बर उकर नाव के आघू म नर/मादा लगाए जाथे। जइसे :– नर गुड़ेला–मादा गुड़ेला
8. ऐसे ही कुछ 'अकारांत' शब्दों के पीछे आ के मात्रा जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाते है। जैसे :– मान–माना, श्याम – श्याम	8. अइसने 'आ' आखिर वाले सब्द मन के पाछु मा आ के मातरा जोड़ के स्त्रीलिंग बनाए जाथे। जइसे :– मान–माना, सयाम–सयामा

छत्तीसगढ़ी के कुछ पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
टूरा	टूरी	बाबू	नोनी
दाई	ददा	भाई	बहिनी
फुफा	फुफु	मोसा	मोसी
देवर	देरानी	जेठ	जेठानी
मरद	तिरिया	बेटा	बेटी
ससुर	सास	बोकरा	बोकरी
सोनार	सोनारिन	तेली	तेलीन
कका	काकी	ममा	मामी
भाँचा	भाँची	भतीजा	भतीजी
चाँटा	चाँटी	गाड़ा	गाड़ी
गदहा	गदही	घोड़ा	घोड़ी
पँड़वा	पँड़िया	सारा	सारी
हाथी	हथनिन	बेंदरा	बेंदरी
कुकरा	कुकरी	भइँसा	भइँसी
नाऊ	नवाइन	कोलिहा	कोलिहाइन
जोजवा	जोजवी	घरवाला	घरवाली

वचन

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन शब्दों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों से संख्या का ज्ञान होता है, उसे वचन कहते हैं। जैसे :– लड़का पुस्तक फूल फल रंग	'हिन्दी' जइसन छत्तीसगढ़ी मं घलोक बचन दो किसम के होथे :– जेन सब्द ले संज्ञा, सर्वनाम, बिसेसन अक्रिया के रूपमन के संख्या के बोध जानबा होथे, ओला बचन केहे जाथे। टूरा फूल पुस्तक / किताब फर रंग प्रकार :– हिन्दी की भाँति छत्तीसगढ़ी में भी वचन दो प्रकार हैं :–
(1) एक वचन :– शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एक वचन कहते हैं। जैसे :– लड़का खाट बैल बकरी नाला मैं वहाँ	**1) एक बचन** – सब्द के जेन रूप ले कोनो एक जिनिस के बोध होथे, ओला एक वचन केहे जाथे। जइसे :– टूरा खटिया बइला छेरी नरवा मेहा / में ओहा / वो

(2) **बहुवचन** :– शब्द के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :–

लड़कों –	टूरा मन
खाटों –	खटिया मन
बैलों –	बइला मन
बकरियों –	छेरी मन
नालों –	नरवा मन
हम –	हमन
वे –	ओमन / वोम

(अ) छत्तीसगढ़ी मं बहुवचन बनाये के नियम :–

छत्तीसढ़ी मं बहुवचन बनाये बर कतको कन 'प्रत्यय' के प्रयोग होथे :–

1) 'न' प्रत्यय

मूल सब्द मं 'न' प्रत्यय लगाये ल एक वचन ह बहुवचन बन जाथे –

जइसे :–

एकवचन	बहुवचन
लोग	लोगन
घर	घरन
फर	फरन
पान	पानन

2) 'अन', 'यन', 'स्वन' प्रत्यय

स्वरांत शब्द मं 'अन' प्रत्यय के अलगे–अलग रूप के प्रयोग होथे। अकारांत के पाछू 'अन', ईकारांत के पाछू 'यन' अऊ उकारांत के पाछू वन के प्रयोग होथे –

जइसे :–

एकवचन	बहुवचन
डोकरा	डोकरन
बइला	बइलन
डोकरी	डोकरियन
मोटरी	मोटरियन
लाड़ू	लड़ूवन
नाऊ	नउवन

3) 'इन', 'एन' प्रत्यय

बोलब मं व्यंजनांत, लिखब मं अकरांत संज्ञा मन मं 'इन', 'एन' प्रत्यय लगथे।

जइसे –

एकवचन	बहुवचन
कान	कानिन
कोस	कोसिन
गाँव	गाँवेन
दाँत	दाँतेन

4) 'मन' प्रत्यय

छत्तीसगढ़ी मं 'सजीव' अऊ 'निर्जीव' सबो अऊ संज्ञा सर्वनाम मन मं 'मन' प्रत्यय लगथे।

जइसे –

एकवचन	बहुवचन
लइका	लइका मन
मनखे	मनखे मन
बइला	बइला मन
भइसा	भइसा मन
गाय	गाय मन
रूख	रूख मन
मास्टर	मास्टर मन
ओ (वह)	ओमन (वे)

5. 'न' अऊ 'मन' प्रत्यय के संघरा प्रयोग घलोक छत्तीसगढ़ी मं होथे। येला बहुत्व के बलात्मकता केहे जाथे।

जइसे :– लोगनमन

लइकनमन

6. एकरे संगे – संग कोनो –कोनो मेर 'मन' के पाछू मं 'न' प्रत्यय जुड़ के 'मनन' के रूप मं घलोक बोले लिखो जाथे।

जइसे :–

एकवचन	बहुवचन
नौकर	नौकर मनन
देरानी	देरानी मनन
बराती	बराती मनन

7. 'लोग' / लोगन

मनखे संज्ञामन के पाछू 'लोग', लोगन के प्रयोग बहुवचन मं होथे।

जइसे :–

मोई लोगन – माई लोग

भाई लोगन – भाई लोग

(ब) छत्तीसगढ़ी मं संज्ञा के आघु मं बहुवचन सूचक खुल्ला सब्द लगा के बहुवचन बनाये जाथे।

(i) 'गंज' (बहुत)

चिरई–चुरगुन के नाव के आघु मं 'गंज' जोड़ के बहुवचन बनाये जाथे।

गंज – तितुर

गंज – छेरी

गंज – पड़की

गंज – फाफा

(ii) 'गजब'

सजीव–निर्जीव संज्ञा मन के आघु मं 'गजब' लगा के बहुवचन बनाये जाथे।

गजब – लइका

गजब – धान

गजब – मनखे

(iii) 'खूब'

इसका उपयोग सजीव–निर्जीव सहित अन्य वस्तुओं के लिए भी किया जाता है।

जैसे :– खूब – मछली

खूब – आम

(iii) 'खूब'

येकर उपयोग सजीव–निर्जीव के सगे–संग दूसर जिनिस बर घलोक करे जाथे।

जइसे :– खूब – मछरी

खूब – आमा

खूब – पानी
खूब – धूप
खूब – ठंड

(iv) अड़बड़ / अब्बड़ / बड़

यह सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों के पहले प्रयुक्त होता है।

जैसे :– बहुत – आम
बहुत – लोग
बहुत – सियार
बहुत – लड़कियाँ
बहुत – चींटियाँ

(v) बड़ अकन / अब्बड़ अकन / बड़ अक

इसका प्रयोग केवल निर्जीव वस्तुओं की ज्यादा संख्या व मात्रा को बताने के लिए किया जाता है।

जैसे :– बहुत – सारा – आम
बहुत – सारी – इमली
बहुत – सारी – गुठली
बहुत – सारा – भौंरा
बहुत – सारा – बीज

खूब – पानी
खूब – घाम
खूब – जाड़

(iv) अड़बड़ / अब्बड़ / बड़

ये सबो प्रकार के संज्ञा सब्द के आघु मं लगाये जाथे।

जैसे :– अड़बड – आमा
अड़बड – मनखे
अब्बड – कोलिहा
अब्बड – टूरी
बड़ – चाँटी

(v) बड़ अकन / अब्बड़ अकन / बड़ अक

येकर प्रयोग सिरिफ निर्जीव जिनिस के जादा अकल बताये बर करे जाथे।

जइसे :– बड़ – अकन – आमा
अब्बड़ – अकन – अमली
बड़ – अक – गोही
बड़ – अकन – भौंरा
बड़ – अकन – बीजा

(3) छत्तीसगढ़ी में बहुवचन को बताने के लिए अन्य प्रत्ययों और स्वतंत्र शब्दों के साथ–साथ द्विरूक्ति या पुनरूक्ति शब्दों का प्रयोग किया जाता है।	**(3)** छत्तीसगढ़ी में बहुवचन ल बोध कराये बर दूसर प्रत्यय अऊ सब्द के संगे–संग द्विरूक्ति नइ ते पुनरूक्ति सबद बोले जाथे।
जैसे :– बच्चे ही बच्चे बकरी ही बकरी सिपाही ही सिपाही कीड़ा ही कीड़ा	जैसे :– लईका च लईका छेरी च छेरी पुलिसे च पुलिस कीरा च कीरा
(4) हिन्दी में परिणाम वाचक शब्द संज्ञा के पहले लगाने से एक से अधिक वस्तु होने का बोध कराता है।	**(4)** हिन्दी भाषा जइसे छत्तीसगढ़ी मं परिणाम वाचक सब्द संज्ञा के आघु मं लगाके एक ले जादा जिनिस होय के बोध कराथे।
जैसे :– थोड़ा सा धान थोड़ी सी सब्जी थोड़ा सा दाल चुटकी भर नमक खचाखच भीड़ ठूँस ठूँक कर भरा हथेली भर प्रसाद मुट्ठी भर चना थैला भर बेर	जैसे :– थोड़कन धान थोरिक साग थोरिक दार चुटकी भर नून खचखच ले भीड़ ठसठस ले भरे पसर भर परसाद मुठा भर चना झोला भर बोईर जघा अऊ जिनिस के मुताबिक 'थोड़कन', 'थोरकन', 'थोरकिन', 'थोर अकन', 'थोरिक' के उपयोग करे जाथे।

(5) जोड़ी (युग्मक) शब्दों के लिए हिन्दी में 'जोड़ा', 'जोड़ी', 'जाँवर – जीवन' आदि का प्रयोग संज्ञा शब्द के पहले होता है।

जैसे :– जोड़ी हाथी

जोड़ी बैल

जुड़वा लड़का

(6) हिन्दी भाषा में कर्ता के वचन का प्रभाव क्रिया–रूप पर पड़ता है।

जैसे :–

पुरूष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं चला	हम चले
	मैं खाया	हम खाये
मध्यम	तू चला	तुम चले
	तू खाया	तुम खाये
अन्य	वह चला	वे चले
	वह खाया	वे खाये

(5) 'जोड़ी' मं बताये बर (एक ले जादा)'जोड़ा' 'जोड़ी' 'जाँवर–जीयर' के उपयोग संज्ञा सब्द के आघु मं करे जाथे।

जैसे :– जोड़ा हाथी

जोड़ी बइला

जाँवर–जीयर टूरा

(6) छत्तीसगढ़ी मं कर्ता के बचन के असर क्रिया रूप मं होथे।

जइसे :–

पुरूष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	में/मेहा चलेंव	हमन चलेन
	में/मेहा खादेंव	हमन खायेन
मध्यम	तें/तेहा चलेस	तुमन चलेव
	तें/तेहा खायेस	तुमन खायेव
अन्य	ओ/ओहा चलिस	ओमन चलिस
	ओ/ओहा खाइस	ओमन खाइन

(7) छत्तीसगढ़ी भाषा मं 'वचन' बनाये के बहुत अकन नियम समें, जघा अऊ जिनिस के मुताबिक पक्का होथे।

जइसें :– (i) दु ले जादा मनखे के संबंध एकेझन ले रहिथे, उहाँ 'एकवचन' होथे।

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
(क) कुश के दादा महाराजा दशरथ है।	(क) कुस के बबा महाराज दसरथ आय।
(ख) सुरेश का भाई रमेश आया है।	(ख) सुरेस के भाई रमेस आए हे।
(ग) आग देवता है।	(ग) आगी देवता आय।
(घ) हवा, आग और पानी के समान ताकतवर है।	(घ) हवा, आगी अऊ पानी जइसे बल वाला हे।

(ii) छत्तीसगढ़ी मं कोनो–कोनो 'संज्ञा' 'सब्द मन दुनों बचन में एके जइसे रहिथें।

जइसे :–

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
(क) रावन की बीस आँखे थीं।	(क) रावन के बीस आँखी रिहिस।
(ख) मेरी नजरों से दूर हटो।	(ख) मोर नजर ले दुरिहा हट।
(ग) बाल नाई ने काटा।	(ग) चूँदी ल नाऊ काटिस।
(घ) बातें शुरू हुई।	(घ) गोठ सुरू होइस।

श्वाँस (साँसा), प्राण (परान), हवा (हावा), कीमत (किम्मत), साहस (हिम्मत), सुविचार (सुम्मत), ओंठ (होठ), दर्शन (दरसन), रक्त (लहू), घलोक इंकर उदाहरण ए।

(iii) छत्तीसगढ़ी मं गुनबाचक 'संज्ञा' एक बचन में रहिथे।
जइसे :–

हिन्दी

(क) रामायण में बहुत विशेषताएँ हैं।
(ख) आजादी में बड़ी खुशी है।
(ग) उसका सीधापन मेरा मन मोह लिया।

छत्तीसगढ़ी

(क) रमायेन मं बड़कन बिसेसता हे।
(ख) आजाद रेहे मं बड़ सुख हे।
(ग) ओकर सिधाई मोर मन ल मोह डारिस।

(iv) द्रव्य वाचक संज्ञा शब्द मनके प्रयोग एक बचन मं होथे।
जइसे :–

हिन्दी

(क) इस वर्ष बहुत पानी गिरा।
(ख) उसकी पूरी संपत्ति बरबाद हो गई।
(ग) खून की धार बह गई।
(घ) उसके पास बहुत सोना है।

छत्तीसगढ़ी

(क) एसो अब्बड़ पानी गिरिस।
(ख) ओकर जम्मो पूँजी नठागे।
(ग) लहू के धार बोहागे।
(घ) ओकर करा बिक्कट सोना हे।

(v) कोनो मेर जिनिस (द्रव्य), ह बंटाये अऊ नान–नान भागा मं होथे, त आहा बहुवचन मं हाथे।
जइसे :–

हिन्दी

(क) अपनी अँगुठियों को बेच डाला।
(ख) लोहा इधर–उधर पड़ा है।
(ग) प्याज का भाव बढ़ गया है।
(घ) कंचा बिखर गया है।

छत्तीसगढ़ी

(क) अपन मुंदरी मन ल बेंच डरिस।
(ख) लोहा मन एति–ओति परे हे।
(ग) गोंदली मन के भाव बढ़गे हे।
(घ) बाँटी मन बगर गे हे।

(vi) हिन्दी का 'प्रत्येक' सभी और 'हर एक' को छत्तीसगढ़ी में 'परतेक' 'हर' व 'हरेक'भी सदैव एकवचन में होता है।
जइसे :–

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
(क) प्रत्येक बच्चे को पुस्तक मिला।	(क) परतेक लईका ला पुस्तक मिलिस।
(ख) प्रत्येक व्यक्ति का घर होगा।	(ख) हर मनखे के घर होही।
(ग) हर एक घर में खोजना।	(ग) हरेक घर मां खोजहू।
(घ) हर व्यक्ति को काम काज है।	(घ) हर मनखे के काम–बुता हे।

कारक

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जो शब्द किसी वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, वे कारक कहलाते हैं।	जेन शब्द ले कोनो डाड़ मं संज्ञा अऊ सर्वनाम के क्रिया के संबंध ल परगट करथे ओहा कारक कहाथे।
जैसे :–	जइसे :–
1. राधा ने आम खरीदे।	1. राधा 'ह' आमा बिसाइस।
2. पेड़ से पत्ते गिरे।	2. रूख 'ले' पत्ता गिरिस।
भेद :– कारक के आठ भेद हैं :–	भेद :– कारक के आठ भेद हे :–
1. कर्ता कारक	1. कर्ता कारक
2. कार्य/कर्म कारक	2. कार्य/कर्म कारक
3. करण कारक	3. करण कारक
4. सम्प्रदान कारक	4. सम्प्रदान कारक
	5. अपादान कारक

5. अपादान कारक 6. संबंध कारक 7. अधिकरण कारक 8. सम्बोधन कारक विभक्ति चिन्ह :– वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए जिन चिन्हों का उपयोग किया जाता है, उसे विभक्त या परसर्ग कहा जाता है।	6. सम्बंध कारक 7. अधिकरण कारक 8. सम्बोधन कारक विभक्ति चिन्ह :– डाड़ मं संज्ञा अऊ सर्वनाम के क्रिया ले संबंध ल बताये बर जेन चिनहा ल लगाये जाथे, ओला विभक्ति केहे जाथे।

कारक के चिन्ह

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
1. कर्ता ने	हा, हर
2. कर्म/को	ला
3. करण/से,के, द्वारा	ले
4. सम्प्रदान/को, के, लिए	बा, बर, ला, के खातिर, के कारन, हर, खातिर, सेती, संग, डाहर, किन, ले, अस, छोड़, अन, साम्हू,
5. अपादान/से	ले
6. सम्बन्ध/का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने	के/कर
7. अधिकरण/में, पर	मां, म, करा, कना (ऊपर, तरी, बाहिर, भीतर, खाल्हे, कारन, जिन, सेती, बूते, पाछू, पार, कोती, लंग, आगू, बीच, तीर)
8. सम्बोधन/हे ! अरे! ओ!	ए, ऐ, ओ, वो, रे एगा, एगो, अगो, गो, गोई, अवो, एवो हों, एजी, अजी, एया

<table>
<tr><td>1) कर्ता कारक :– शब्द के जिस स्वरूप से क्रिया करने वाले को ज्ञान होता है, उसको कर्ता कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'ने' है।
जैसे :–
1. कमल ने खाना खाया।
2. राधा ने शरारत की।
3. मैं मंदिर गया।</td><td>1) कर्ता कारक :– सब्द के जे रूप ले क्रिया काम करे के बोध होथे ओला 'कर्ता कारक' कहिथे। येकर चिनहा 'न' हे।
जइसे :–
1. कमल ह जेवन करिस।
2. राधा ह उतईल करिस।
3. मे हा मंदिर गेंव।</td></tr>
<tr><td>2) कार्य/कर्म कारक :– कर्ता को अपने काम को करने के लिए जिसकी ज्यादा जरूरत होती है, वह 'कर्म या कार्य' कारक कहलाता है। इसका चिन्ह 'को' है।
जैसे :–
1. किसान ने धान को काटा
2. कुत्ता ने बच्चे को काटा।
3. रमेसर ने पेड़ को काटा।

3) करण कारक :– कर्ता जिस साधन चीज से कार्य को पूरा करता है, उसको कारण कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'से' है।
जैसे :–
1. किसान ने टंगिया से पेड़ काटा।
2. सिपाही ने चोर को डंडे से मारा।
3. राधा ने साँप को पत्थर से मारी।
4. हम लोग गुड़ से चाय बनाते हैं।</td><td>2) कार्य/कर्म कारक :– कर्ता ल अपन काम करे बर जेकर जादा जरूरत होथे, ओहा कार्य अउ कर्म कारक कहाथे। येकर चिन्हा 'ला' हे।
जइसे :–
1. किसान ह धान ला काटिस।
2. कुकुर ह लईका ला काटिस।
3. रमेसर ह पेड़ ला काटिस।

3) कारण कारक :– कर्ता हा जेन जिनिस ले अपन काम बुता ल पूरा करथे, ओला 'करण' कारक केहे जाथे। येकर चिन्हा 'से' हे।
जइसे :–
1. किसान हा टंगिया ले रूख काटिस।
2. पुलिस चोर ल डंडा ले मारिस।
3. राधा ह साँप ले पथरा ले मारिस।
4. हमन गुड़ ले चाहा बनाथन।</td></tr>
</table>

4) सम्प्रदान कारक :– जिन शब्दों से कर्ता द्वारा किसी दूसरे के लिए कार्य करने का बोध होता है, उसे 'सम्प्रदान' कारक कहा जाता है। इसका चिन्ह 'के लिए' है।

जैसे :–

1. राजगीर ने सेठ जी के लिए मंदिर बनाया।
2. मूर्तिकार को रहने की जगह दी।
3. मैंने अपनी बेटी के लिए झुमका बनवाया।
4. मुझे तुम्हारे कारण डाँट पड़ी।
5. गाँव के विकास के लिए मेहनत करनी होगी।
6. गुड़ के लिए गन्ना बोया।

5) अपादान कारक :– वाक्य में जिस शब्दों से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'से' है।

जैसे :–

1. कोयला खान से मिलता है।
2. पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
3. नदियाँ पर्वत से निकलती हैं।
4. बोधन छत से कूद गया।
5. फल से बीज निकलता है।

4) सम्प्रदान कारक :– जेन सब्द ले कर्ता के कोनो दूसर बर काम–बुता करे के जानबो अऊ बोध होथे, ओहा 'सम्प्रदान' कारक कहाथे। येकर चिन्हा 'ब', बर, 'ला' के खातिर 'के कारन,' 'सेती', 'हर', 'खातिर' हे।

जइसे :–

1. राजगीर ह सेठ बर मंदिर बनाइस।
2. मूर्तिकार ल रहे बर जघा दिस।
3. में हा अपन नोनी खातिर झुमका बनवायेंव।
4. मोला तोर कारन डाँट परिस।
5. गाँव के बिकास खातिर मिहनत करे ल पड़ही।
6. गुड़ खातिर कुसियार लगायेंव।

5) अपादान कारक :– डाड़ मं जेन सब्द ले कोनो जिनिस के अलग होय के बोध होथे ओला अपादान कारक कहिथें। येकर चिनहा 'ले' हे।

जइसे :–

1. कोइला ह खदान ले निकलथे।
2. रूख ले पाना गिरथे।
3. नदिया पहार ले निकलथे।
4. बोधन छत ले गिर गे।
5. फल ले बीजा निकलथे।

6) सम्बंध कारक :– किसी वाक्य में एक संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध बताने वाले कारक को सम्बन्ध कारक कहा जाता है। इसका चिन्ह का, की, के, ना, नी, ने, रा, री, रे है। जैसे :– 1. राधे का खेत बहुत बड़ा है। 2. यह मोहन का घर है। 3. वह अपने घर के पास था। 4. यह दान–पुण्य की गाय है। 5. यह धान की कोठी है।	**6) सम्बंध कारक** :–कोनो डाड़ मं एक संज्ञा नइ ते सर्वनाम के कोनो दूसर संज्ञा सर्वनाम ले सम्बन्ध बतइया कारक ल संबंध कारक केहे जाथे। जेकर चिनहा का, की, के, ना, नी ने, रा, री, रे, हे। जइसे :– 1. राधे के खेत बहुते बड़का है 2. ये हा मोहन के घर ये। 3. ओ हा अपने घर के तिर मं रिहिस। 4. येहा दान–पुन के गाय ये। 5. यहा धान के कोठी ये।
7) अधिकरण कारक :– किसी वाक्य में शब्द के जिस स्वरूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसको अधिकरण कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'पर' है। जैसे :– 1. किताब आलमारी में रखी है। 2. गहने पेटी में है। 3. गुडियाँ रसोईघर में है। 4. गहने संदूक में है। 5. मछली पानी में रहती है। 6. पैसा रास्ते पर पड़ा मिला 7. लोटे को पत्थर पर रख दिया। 8. मेरे पास चकमक पत्थर है। 9. मेरे पास मोहरी बाजा है।	**7) अपादान कारक** :– कोनो डाड़ मं सब्द के जेन रूप ले कोनो काम के कारन के बोध होथे, ओला अधिकरण कारक केहे जाथे। येकर चिनहा मं, मा, करा, कर, कना, कोती, लंग, आगू, बीज, मंझोत, छोर, कोर, तीर, ऊपर, तरी, बाहिर, भीतर, खाल्हे हे। जइसे :– 1. किताब आलमारी मं रखाये हे। 2. गहना मन संदुक मं हे। 3. हउला मन रंधनी मं हे। 4. गहना मन संदुक मं हे। 5. मछरी पानी मं रहिथे। 6. पइसा रद्दा मा परे मिलिस। 7. लोटा ल पथरा मं राख दिस। 8. मोर करा चकमक पथरा हे। 9. मोर कना मोहरी बाजा हे।

8) संबोधन कारक :– किसी वाक्य में शब्द के जिस रूप से किसी को संबोधित किया जाता है, उसको संबोधन कारक कहते हैं। इसके चिन्ह हे !, अरे !, ओ !, ओह! जैसे :– 1. ओ ! लड़का इधर आ। 2. ओजी! तुम्हारी लाठी वहाँ पर पड़ी है। 3. ओ दादा ! आप कहाँ जा रहे हैं। 4. ओ जी ! चलो भोजन करना। 5. ओ बच्ची की माँ ! 6. ओ रमौतीन ! राजू को भेजो तो।	8) संबोधन कारक :– कोनो डाड़ मं सब्द के जेन रूप ले कोनो लं हुँत करे जाथे ओला संबोधन कारक कहे जाथे। येकर चिनका ए, ऐ, ओ, वो, रे, एगा, एगो, एवो, अगो, वो, गोई, अवे, एओ, अहो, हो, एजी, अजी, एया हे। जइसे :– 1. ए ! टूरा। एति आ। 2. ए जी! तोर लउठी ओमेर परे हे। 3. अगा बबा ! तुमन कहाँ जात हो ? 4. एगो ! चल जेवन करबे। 5. एवो नोनी के दाई ! 6. अवो रमौतीन! राजू ल पठो तो।

शब्द रचना

हिन्दी

परिभाषाः— दो या दो से अधिक वर्ण मिलकर किसी अर्थ को स्पष्ट करते हैं तो वह शब्द होता है। जैसे— घर, जल, कमल, कलश आदि। शब्दों के प्रकार :—

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द भेद

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	विदेशज शब्द
कर्ण	कान	पगड़ी	टिकिट
ग्राम	गाँव	थैला	दुकान
आम्र	आम	गाड़ी	पेन

2. रचना (बनावट) के आधार पर शब्द भेद

मूल या रूढ़ शब्द	यौगिक शब्द	योगरूढ़
घर	पाठशाला	पंकज
फल	राजपुत्र	नीलकंठ
दूध	रसोईघर	लम्बोदर

3. अर्थ के आधार पर शब्द भेद

एकार्थी शब्दः— भारत, जनवरी, हिन्दी, गाय।

अनेकार्थी शब्दः— पत्र – पत्ता, चिट्ठी।

कर – हाथ, टेक्स।

पर्यायवाची या समानार्थी शब्दः—

ईश्वर – प्रभु, परमात्मा, भगवान।

रात – निशा, रजनी, रात्रि।

विपरीतार्थक (विलोम) भाब्दः—

रात – दिन

हानि – लाभ

छत्तीसगढ़ी

परिभाषाः— दू या दू ले जादा आखर मिलके कोन्हो अरथ ला परगट करथे त विहि हा सब्द होथे। जइसे— फर, जर, हमर, तुँहर आदि। सब्द दू किसम ले होथे —

1. **सारथक सब्दः—** अमली, आमा, आजा, आजी, बबा।
2. **निररथक (फालतू) शब्दः—** माआ, मकल, बाब।

सब्द रचना खातिर उपसर्ग

1. तत्सम अउ तद्भव उपसर्ग

अ – अकाम (कार्य से रहित), असमझ (नासमझ), असाध (असाध्य)

अइत – अइताचार (अत्याचार)

अन – अनचिन्हार (अपरिचित), अनचेंतहा (असावधान)

स – सभाव (स्वभाव), सरूप (स्वरूप)

2. देसी उपसर्ग

अक— अकबक (स्तब्ध, हक्का—बक्का)

कठ— कठबेटा (सौतेला बेटा)

कर— करलई (विलाप, क्रंदन), करजीबा (जी भर कर रोनेवाला)।

दर— दरचबहा (दरदरा), दरचुरा (अधपक्का)

3. बिदेसी उपसर्ग

अइन— अइनजबानी (भरी जवानी), अइनबेरा (ठीक समय पर)

कम— कमउमर (कमउम्र), कमजोर (कमजोर)

सर— सरकार (मालिक), सरपंच (मुखिया)

हाप— हापपेन्ट (हाफपैन्ट), हापसट (हाफ शर्ट)

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
4. **प्रयोग के आधार पर शब्द भेद** **सामान्य शब्द:** – खाना, मेहनत, लड़का, अध्यापक। **तकनीकी शब्द:** – प्रबंधन, अन्वेषण, कम्प्यूटर, डाटा।	4. **सब्द बनाय खातिर प्रत्यय** अंग – झोलंग (झोले के समान, ढीला–ढाला) अइया, वइया– जवइया (जानेवाला), बतइया (बतानेवाला) अइता – करमइता (कर्म करनेवाला) अउका – ठउका (ठीक) मान – हिनमान (अपमान), कोपमान (कोपपूर्ण)

शब्द रूप

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
रूप या शब्द रूप किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द को कहते हैं। शब्दों के दो रूप होते हैं। एक तो शुद्ध रूप जो कोश में मिलते हैं और दूसरा वह रूप जो किसी प्रकार के संबंध सूत्र से युक्त होते हैं। दूसरा वाक्य में प्रयोग के योग्य रूप ही 'पद रूप' या 'शब्द रूप' कहलाता है।	कोनो वाक्य मे आए सब्द ल सब्द रूप कहिथे। सब्द के दू रूप होथे पहिली शुद्ध रूपअ ऊ दूसरइया वाक्या के हिसाव ले परयोग मं आए सब्द। परयोग म आए सब्द मन लाही 'पद रूप' नइते 'सब्द रूप' कहिथे। छत्तीसगढ़ी म संज्ञा सब्द मन के रूप रचना कारक चिनहा (परसर्ग) लगाके करे जाथे।

छत्तीसगढ़ी से संज्ञा शब्दों की रूप रचना परसर्ग लगाकर की जाती है।

छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त कारक चिन्ह परसर्ग है।

विभक्ति	एकवचन/बहुवचन
प्रथमा	हर
द्वितीया	ला
तृतीया	ले (कारण, मारे, संग सेती, बूते

चतुर्थी	ला, बर, लिए, खातिर
पंचमी	ले
षष्ठी	के / कर
सप्तमी	मा, में, करा

संधि

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
दो वर्णो के मेल से जो विकास (परिवर्तन) उत्पन्न होता है उसे संधि कहते है। जैसे :– राम + अवतार = रामावतार छत्तीसगढ़ी में हिन्दी भाषा की तरह ही तीन प्रकार की संधि माने गए हैं। 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि 1. **स्वर संधि** :– जब स्वर वर्ण के बाद कोई दूसरा स्वर के आने से शद में परिवर्तन होता है, तब वहाँ स्वर संधि होता है जैस :– राम + अधार = रामाधार (अ+ अ = आ) यहाँ अ + अ मिलकर आ बना रहा है।	दू आखर के मिले ले जेन बिकार (बदलाव) होथे उही ल संधि कहिथे। जइसे : गज अऊ आनंद = गजानंद छत्तीसगढ़ी मं संधि तीन परकार के माने गे हे। 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि 1. **स्वर संधि** : – जब स्वर आखर के बाद कोनो दूसर स्वर के आए ले शब्द म बदलाव हो जाथे त उहाँ स्वर संधि होथे। जैसे : राम + आधार = रामाधार (अ + अ = आ) यहाँ अ + अ मिलकर आ बना रहा है।

स्वर संधि के पाँच प्रकार होते है।

1) दीर्घ स्वर संधि – जब स्वजातीय स्वर के मेल से कोई विकार (परिवर्तन) होता है, तब वहाँ दीर्घस्वर संधि होता है
(अ के बाद अ या आ, इ के बाद इ या ई, उ के बाद उ या ऊ)

जइसे :– परिमारथ – परम + अरथ अ + अ = आ

सिवालय – सिव + आलय   अ + आ = आ
परमानंद – परम + आनंद   अ + आ = आ
गिरीस – गिरि + ईस   इ + ई = ई
कपील – कपि + ईल   इ + ई = ई
भानूदय – भानु + उदय   उ + उ = ऊ

2) गुण स्वर संधि :– छत्तीसगढ़ी में हिन्दी के समान ही जब अ के बाद इ आए तो 'ए' व अ के बाद 'उ' आने पर 'ओ' हो जाता है। यहाँ आने पर अर् हो जाता है।

जैसे :–

सुर + इश = सुरेश (अ + इ = ए)
महा + इश = महेश (आ + इ = ए)
सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र (अ + इ = ए)
लं + उदर = लंबोदर (अ + उ = ओ)
महा + उत्सव = महोत्सव (आ+उ = ओ)
देव + ऋषि = देवर्षि (आ + ऋ = अर्)

3) वृद्धि स्वर संधि :– जब 'अ' के बाद 'ए' व 'ओ' आए तो वह 'ए' व 'ओ' रूप में बदल जाता है।

हिन्दी से योग भिन्न छत्तीसगढ़ी भाषा में वृद्धि संधि में 'ऐ' व 'औ' का सामान्यतः प्रयोग नहीं होता है।

स्वर संधि पाँच परकार के होथे।

1) दीर्घ स्वर संधि :– जब एके जाति के स्वर आखर के मेल (जइसे अ के बाद अ/आ) होए ले सब्द म बदलाव होथे त उहाँ दीर्घ स्वर संधि होथे।

जइसे :– परमारथ – परम + अरथ अ + अ = आ

सिवालय – सिव + आलय   अ + आ = आ
परमानंद – परम + आनंद   अ + आ = आ
गिरीस – गिरि + इस   इ + ई = ई
कपील – कपि + ईल   इ + ई = ई
भानूदय – भानु + उदय   उ + उ = ऊ

2) गुण स्वर संधि :– जब 'अ' के बाद 'इ' आय ले 'ए' अऊ 'अ' के बाद 'ऊ' के आय ले 'ओ' हो जाथे त उहाँ गुण स्वर संधि होथे।

जइसे :–

सुर + इस = सुरेस (अ + इ = ए)
महा + इस = महेस (आ+इ = ए)
सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र (अ + इ = ए)
लंब + उदर = लंबोदर (अ + उ = ओ)

3) वृद्धि स्वर संधि :– जब 'अ' के बाद म 'ए' अऊ 'ओ' आथे त ओहा 'ऐ' अऊ 'ओ' म बदल जाथे।

हिन्दी ले थोरिक अलगेज छत्तीसगढी भाखा म 'वृद्धि संधि' म 'ऐ' अऊ 'औ' के परयोग मिलथे।

जैसे :–

एक + एक = एकेक (अ + ए = ए)
वन + ओसधि = वन – ओसधि
महा + ओजस्वी = महा – ओजस्वी
सदा + ऐव = सदैव (आ + ए =ऐ)
महा + ओज = महा–ओज

4) यण स्वर संधि :– हिन्दी की तरह छत्तीसगढ़ी में इस संधि में 'इ' के बाद अ, आ ऊ तथा उ के बाद अ, आ आते है। परंतु इसमें अय, आव, आय आदि रूपों में परिवर्तन न होकर दोनों शब्दों को जोड़कर लिखा जाता है।

जैसे :–

अति + अधिक = अत्याधिक
देवी + आगम = देवीआगम
प्रति + उत्तर = प्रति – उत्तर
नदी + उद्गम = नदी – उद्गम
सु + आगत = सुआगत
भू + आदि = भूआादि
मातृ + इच्छा = मातृ – इच्छा

5) अयादि स्वर संधि :– 'ए' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'अय' 'ऐ' का 'आय', ओ का 'अव', और का 'आव' हो जाता है।

जैसे :–

ने + अन = नयन
भो + अन = भवन
गे + अक = गायक
पौ + अन = पवन
पौ + अक = पावक

जइसे :–

एक + एक = एकेक (अ + ए = ऐ)
वन + ओसधि = वन – ओसधि
महा + ओजस्वी = महा – ओजस्वी
सदा + ऐव = सदैव
(आ + ए = ऐ)
महा+ ओज = महा – ओज

4) यण स्वर संधि :– हिन्दी असन छत्तीसगढ़ी म 'ऐ' संधि म 'इ' के बाद अ, आ, ऊ अऊ 'उ' के बाद 'अ' 'आ' आथे फेर एहा अय, आव, आय रूप म नइ बदल के जेव के तेव दूनों सबद ल जोड़ के लिखे जाथे।

जइसे :–

अति + अधिक = अति – अधिक
देवी + आगम = देवीआगम
प्रति + उत्तर = प्रति – उत्तर
नदी + उद्गम = नदी – उद्गम
सु + आगत = सुआगत
भू + आदि = भूआदि
मात् + इच्छा = मात् – इच्छा

5) अयादि स्वर संधि :– 'ए' के बाद कोई दूसर स्वर के आये ले 'ऐ' के 'अय' 'ऐ' के 'आय' 'औ' के 'आव' हो जाथे।

जइसे –

ने + अन = नयन
भो + अन = भवन
गे + अक = गायक
पौ + अक = पावक
पौ + अन = पवन

समास

हिन्दी

परिभाषा :– दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को समास कहते हैं।

जैसे – रसोईघर – रसोई का घर

पुस्तकालय – पुस्तकों का घर

हिन्दी
रसोईघर
धरमशाला
परबुधिया

समास विग्रह = समासिक पदों का समास से पृथक करना समास विग्रह कहलाता है।

उदाहरण : कुल बोरूक में दो पद हैं।

1. कुल 2. बोरूक

इसका विग्रह करने पर हम लिखेंगे 'कुल के बोरूक'

समास के प्रकार :

समास छः प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित है :–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरूष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुब्रीहि समास
6. द्वंद समास

छत्तीसगढ़ी

परिभाषा : दु या दु ले जादा सब्द के मिल ले नवा शब्द के बनना समास कहिलाथे। दुनों सब्द अलगेच सामासिक पद कहिलाथे अऊ समासिक पद ल समास ले अलगे करना समास विग्रह कहिलाथे।

छत्तीसगढ़ी
रंधनीघर
करमछड़का
परलोखिया

जइसे : कुल–बोरूक म दू पद हवय

1. कुल 2. बोरूक

इकर विग्रह करें में हम लिखबो 'कुल के बोरूक'

समास के प्रकार : समास छः प्रकार के होथय :–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरूष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुब्रीहि समास
6. द्वंद समास

1. **अव्ययी भाव समास** : छत्तीसगढ़ी मं समास का प्रथम पद प्रधान होता है संपूर्ण पद विशेषण क्रिया विशेषण अव्यय की भाँति प्रयोग में आता है।

जैसे :

जल्दी–जल्दी
दिन के बाद दिन
बिना काम का
मन ही मन

2. **तत्पुरूष समास** : इस समास में उत्तर पद का पद प्रधान होता है तथा पूर्व पद गौण होता है। बीच – बीच में विभक्तियों का लोप होता है।

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
गुनहगरा	गुन ल नइ मनइया	गुण उपकरा को न मानने वाला
रोगहा	रोग में परे	रोग से ग्रसित
रंधनी कुरिया	राँधे के कुरियाँ	रसोई के लिए घर
मनखे बाहिर	मनख`ले बाहिर	मनुष्य से अलग
तुलसी चऊँरा	तुलसी के चऊँरा	तुलसी का चबूतरा
बइला–गाड़ी	बइला के गाड़ी	बैल का गाड़ी

3. **कर्मधारय समास** : इस समास का एक पद विशेषण व दूसरा पद विशेष्य होता है।

1. **अव्ययी भाव समास** : ए समास म पहिली पद ह परधान अउ अवयव होथे। अउ पद क्रिया विसेसन अवयव के रूप में उपयोग आथे।

जइसे :

लकर – लकर
दिने – दिन
बेकाम
मनेमन

2. **तत्पुरूष समास** : एक समास म दूसरइया पद परधान होथे अउ पहिली पद ह उकर सहायक। इकर बीच म विभक्ति चिनहा मन ह छिपे रहिथे।

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
गुनहगरा	गुन ल नइ मनइया	गुण को मानने वाला
रोगहा	रोग में परे	रोग से ग्रसित
रँधनी कुरिया	राँधे के कुरियाँ	रसोई के लिए कमरा
मनखे बाहिर	मनखे ले बाहिर	मनुष्य से अलग
तुलसी चऊँरा	तुलसी के चऊँरा	तुलसी का चबूतरा
बइला – गाड़ी	बइला के गाड़ी	बैल का गाड़ी

3. कर्मधारय समास : ए समास म एक पद ह विसेसन होथे जेन ह दूसर पद के विसेसता बताथय।

जैसे :

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
करिया बादर	करिया रंग के बादर	काला बादल
छितका कुरिया	छोट कुन कुरिया	छोटा कमरा
लमचोचवा	लंबा चोंच वाला	लंबे चोंच से युक्त
धवँरा–बइला	धवँरा रंग के बइला	सफेद बैल
बड़े – बहुरियाँ	बड़की बहु	बड़ी बहू
लम गोड़वा	लंबा गोड़ वाला	लंबा पैर वाला

4. **द्विगु समास** – इस समास का पहला पद संख्यात्मक होता है। साथ ही इससे समूह वाची भाव का बोध होता है।

जैसे :

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
सतबहिनी	सात झन बहिनी	सात बहन
चउमास	चार महीना के बेरा	चार माह का समय
चरगोड़िया	जेकर चार झन गोड़ हो	चार पैर वाला
पंचरंगा	पाँच ठन रंग वाला	पाँच रंगों से युक्त
तितरी	तीन बेटा के बाद बेटी	तीन पुत्र के बाद पुत्री
सतपुरखा	सात पुरखा	पूर्वजों की सात पीढ़ी

5. **द्वंद समास** :– इस समास का दोनो पद प्रधान होता है। इसमें भिन्न दो पदों का जोड़ा बनता है। उनके बीच अऊ यानी और आता है।

जइसे :–

करिया बादर	करिया रंग के बादर	काला बादल
छितका कुरिया	छोट कुन कुरिया	छोटा कमरा
लमचोचवा	लंबा चोंच वाला	लंबे चोंच से युक्त
धवँरा – बइला	धवँरा रंग के बइला	सफेद बैल
बड़े – बहुरियाँ	बड़की बहु	बड़ी बहू
लम गोड़वा	लंबा गोड़ वाला	लंबा पैर वाला

4. **द्विगु समास** : ए समास के पहिली पद संख्यावाची विसेसन होथे। एकरे संगे एमा समूहवाची भाव होथे।

जइसे :

सतबहिनी	सात झन बहिनी	सात बहन
चउमास	चार महीना के बेरा	चार माह का समय
चारगोड़िया	जेकर चार ठन गोड़ हो	चार पैर वाला
पंचरंगा	पाँच ठन रंग वाला	पाँच रंगो से युक्त
तितरी	तीन बेटा के बाद बेटी	तीन पुत्र के बाद पुत्री
सतपुरखा	सात पुरखा	पूर्वजों की सात पीढ़ी

5. **द्वन्द्व समास** :– ए समास के दुनो पद परधान होथे। जेमा अलगेच–अलगेच दू पद के जोड़ी बनथे अउ उकर बीच म अउ, नइते, जइसन जोडइया शब्द छिपे रइथे।

जैसे :– 'नइते' जैसे योजक शब्द का लोप होता है।

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
दाई – ददा	दाई अऊ ददा	माता और पिता
डारा – पाना	डारा अऊ पाना	डाल और पत्ती
घर – दुवार	घर अऊ दुवार	घर और दरवाजा

6. **बहुब्रीही समास** : इस समास में दोनों पद प्रधान न होकर तीसरे व्यक्ति या पदार्थ की ओर संकेत करते हैं।

जैसे :–

- मुरलीधर (मुरली धारण करथे जे अर्थात् सिरी किसन)
- तिरलोकी (तीन लोक के स्वामी जेन अर्थात् सिरी बिस्नु)
- दस मुड़ (दस मुड़ी वाला जे) रावण
- दुख–हरण (दुख हरने वाला जेन) (भगवान)
- माटीपुत्र (माटी के सेवा करथे जेन) (किसान)
- तिरलोचन (तीन ठन आँखी हे जेकर) (शंकर)

जइसे :–

समास	छत्तीसगढ़ी विग्रह	हिन्दी विग्रह
दाई – ददा	दाई अऊ ददा	माता और पिता
डारा – पाना	डारा अऊ पाना	डाल और पत्ती
घर – दुवार	घर अऊ दुवार	घर और द्वार

6. **बहुब्रीहि समास** : ए समास म दूनों पद परधान नइ होके कोनो तीसर के बारे म बताथय।

जैइसे:–

- मुरलीधर (मुरली धारण करथे अर्थात् सिरी किसन)
- तिरलोकी (तीन लोक के स्वामी जेन अर्थात् सिरी बिस्नु)
- मुड़ (दस मुड़ी वाला जे) रावण
- दुख–हरण (दुख हरने वाला जे (भगवान)
- माटीपुत्र (माटी के सेवा करथे जेन) (किसान)
- तिरलोचन (तीन ठन आँखी हे जेकर) (शिवशंकर)

अनेकार्थ शब्द

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन शब्दों का एक से अनेक अर्थ स्थान, प्रयोग, समय, प्रसंग के अनुसार होता है, उसे अनेकार्थक शब्द कहा जाता है। कुछ प्रचलित शब्द इस प्रकार है –	जेन सब्द के एक ले जादा अर्थ जघा, बोले मं, समे के मुताबिक अलगेच हो जाथे ओला अनकार्थक सब्द केहे जाथे। जादा बोले जवइया सब्द अइसन हे :–
अँकुस	निगरानी (नियंत्रण)। रोका (रोक)। हाँथी ला बस मा राखे बर लोहा के नोंकदार छँड़ (हाथी को वश में करने के लिए लोहे की नुकीली छड़)
अँखफट्टी	ईरखा (ईष्या) कनवी (कानी)। नीयत डोलइया माइलोगिन (नीयतखोरी करने वाली)।
अँटियाना	अँइठना (ऐंठना)। गुमान करना (घमंड करना)। अँगरई लेना (अँगड़ाई लेना)।
अंडबंड	बड़बड़ई (व्यर्थ प्रलाप)। गारी –गल्ला (गाली–गलौच)। टेरगा–पेचका (टेढ़ा–मेढ़ा)।
अड़ानी	अटकाए बर टेकाथे तउन जिनिस (अटकाव के लिए प्रयुक्त वस्तु)। कुस्ती के एक दाँव (मल्ल युद्ध का एक दाँव)। अगियानी (अज्ञानी)।
अदर–कचर	बिन सुवाद के (स्वादहीन)। अधचुरहा (अधपका)। जतर–कतर (अस्त–व्यस्त)।
अपसोसी	सुवारथी (स्वार्थी)। पेटमाँहदुर (अधिक खाने वाला)। कोनो जिनिस ला जादा ले जादा धरे के उदिम करइया (किसी वस्तु को अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करने वाला)।
अभरना	संघरना (मिलना) मुलाकात करना या होना (भेंट होना)। छुआना (स्पर्श होना)। गड़ना (चुभना)।

अमर	अमरित (अमृत)। धर (पकड़)। छुए के भाव (स्पर्श)। पहुँच (यथावत)
अरझना	फसड़ना (फँसना) लटकना (यथावत) गुरमेटाना (उलझना)। अटकना (यथावत)।
अलकर	दुखदई (कष्ट दायक)। साँकुर जगा (संकीर्ण जगह)। तन के ओ भाग जउन ला देखाय नइ जा सके (गुप्तांग)।
आरा	लकड़ी चीरे बर लोहा के दाँतादार पट्टी (लकड़ी चीरने के लिए लोहे की दाँता वाली पट्टी)। बइला गाड़ा के चक्का मा लगे ठाढ़ लकड़ी। (बैलगाड़ी के पहिये में लगी खड़ी लकड़ी)। पानी बोहाय के रद्दा (जल प्रवाह मार्ग)।
उठाना	ठाड़ करना (खड़ा करना) उचाना (जगाना)। बोझा उचाना (भार वहन करना) बढ़ाना (उन्नत करना)।
उसनइया	जरइया (जरने वाला)। जरवइया (जलाने वाला)। भुँजइया (भूनने वाला) उसनइया (उबालने वाला)। उसनवइया (उबालने वाला)।
उसलइया	उचइया (उठने वाला)। उचवइया (उठाने वाला)। उखनइया (उखाड़ने वाला)। हटवइया (हटाने वाला)। हटइया (हटने वाला)।
ऐंठना	अँइठाना (मुड़ जाना) ठगा जाना (यथावत)।
ओरियाना	ओरी–ओरी करना (क्रमबद्ध करना)। गाँजना (थप्पी करना)। बिगराना (फैलाना)। बीते बात ला दुहराना (बीती बातों को प्रस्तुत करना)।
ओसरी	घर के परबित जगा (घर का पवित्र स्थान) घर के परमुख जगा (घर का मुख्य भाग)। पारी (पाली)।
कड़कना	कड़–कड़ के आवाज करना (कड़–कड़ की आवाज करना)। तेल, घीव आदि के तीपना (तेल, घी आदि का तपना)। तेल मा लसुन, जीरा आदि ला भूँजना (तेल में लहसुन, जीरे आदि का भुनना) । रोहिना मारना (बिजली चमकना)।
कढ़इया	कड़ाही (छोटी कड़ाही)। गियान ला बुता–बेवहार मा उपयोग करइया (ज्ञान को प्रकट करने वाला)।
कलगी	पागा मा लगाए फूल के गुच्छा (पगड़ी में लगाय जाने वाला पुष्प–गुच्छ)। मंजूर नइते कुकरा के मुँड़ी के मुकुट (मोर या मुर्गे के सिर की चोटी)। चूँदी मा लगाए, जाथे तउन कंघी (बाल में लगाया जाने वाला कंघा)।
कसाना	खाए के जिनिस हा करूवा जाना (भोज्य पदार्थ में कसैलापन आना)। खींचा जाना (खींच जाना)। सोचे – बिचारे के नइते अनभो के मुताबिक बुता करे के गुन आना (गंभीरता या अनुभव – शीलता आना)।

कहिना	समझाइस (यथावत)। उपदेस (उपदेश)। बोल (कथन)।
काठी	घोड़ा के पीठ मा मड़ाथे तउन आसनी (घोड़े की पीठ पर रखने की जीन)। तन के ठाठा (शरीर का ढाँचा)। मुरदा लेगे खातिर बाँस के बनाए खटोला (शव ले जाने के लिए बाँस का बना ठाठ)। माटी दे बर जाए के बुता (मृतककर्म)।
कुसी	गेहूँ, जौ आदि के फोकला (गेहूँ, जौ आदि का छिलका)। पँड़री–भूरी रंग के (सफेद – भूरे रंग की 'गाय, बिल्ली')। नान–नान आँखी वाली (छोटी–छोटी आँखों वाली)।
खरोना	ओहाँ धोए खातिर पानी तिपोना (कपड़ा धोने के लिए पानी गरम करना)। सक्खार करना (अधिक नमकीन करना)। घीव नइते तेल ला जरो डारना (घी या तेल को जला डालना)।
खिरना	नानचुन होना (छोटा होना)। गवाँ जाना (गुमजाना)। नँदा जाना (प्रचलन समाप्त होना)। घीसा जाना (घीस जाना)
गचकाना	झंझेटना (हिचकोलना)। मरई–धमकई करना (प्रताड़ित करना)।
गजरा	गाजा (झाग)। फूल के गोप्फा (पुष–गुच्छ)। ढोल के डेरी ताल (ढोलक की बाईं ताल)। ताल के कोर मा लगे चमड़ा के गोल पट्टी (ताल पर लगी किनारे वाली चमड़े की गोल पट्टी)। साबुन के झाग (साबुन का झाग/फेन)
गाज	बिपत (विपत्ति) बाफुर (झाग)। पानी भीतरी के एक पउधा (एक जलीय पौधा)।
गुम्जा	कलेचुप रहइया (शांत रहने वाला)। अलाल (आलसी)। मिंझरल (मिश्रित)।
चढ़ाव	बिहाव बखत दूलहा डाहर ले भेजे गहना, ओनहाँ अउ आने सिंगार के जिनिस (विवाह के समय वर पक्ष से भेजे जाने वाले आभूषण, वस्त्र एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुएँ)। ऊँच भुइयाँ (ऊँची भूमि)। कोनो जिनिस के किम्मत नइते नदिया के पानी बढ़ई (किसी वस्तु के मूल्य में अथवा नदी के जल में वृद्धि)। देवी–देवता मन ला चढ़ाए जाथे तउन जिनिस (देवी–देवताओं को अर्पित की जाने वाली वस्तु)।
चपकना	मसकना (दबाना)। लुकाना (छिपाना)। चटकना (चिपकना)।
चरकना	गुँसियाना (गुस्सा होना)। कुड़कना (चिढ़ना)। टूटना (यथावत)। दर्रा फाटना (दरार पड़ना)।
चर्राना	दर्रा फाटना (दरार पड़ना) चिरा जाना (फट जाना)। घाम चरचराना (तेज धूप लगना)। मार परे ले दरद होना (चोट लगने से दर्द होना)।

चलाना	निभाव करना (निभाना)। उपयोग करना (व्यवहत करना)। चालू करना (यथावत)। मुरूख बनाना (बेवकूफ बनाना)। रोपा लगाना (रोपाई करना)। चन्नी चलवाना (चलनी कराना)।
चापा	पुरूत (तह)। साँकुर (संकीर्ण)। चपाट (चिपका हुआ)। चिपचिपहा (चपचपा)। लट बँधाए (लटा हुआ)। काँटा के ढेरी (काँटों का ढेर)।
चुरना	पछताना (यथावत)। जेवन चुरना (भोजन का पकना)। बिपत ला सहना (विपत्ति झेलना)। नंगत के मिहिनत करना (कठोर परिश्रम करना)।
चूरा	हाँत के एक गहना (हाथ में पहनने का कड़ा)। कोनो जिनिस मा लगाए खातिर लोहा आदि ले बने चूरी (किसी वस्तु में लगाने के लिए लोहे आदि की बनी गोल पट्टी)। साँकुर (सकरा)। नानकुन (छोटा)। भूरका (चूर्ण)।
चोभा	काँटा (यथावत)। पीकी (अंकुरण)। चोभी (ठूँठ)।
छनकना	डर्रा के भागना (बिदकना)। भुरका के उड़ियाना (चूर्ण का उड़ना)। पानी गिरना, नइते कोनो जिनिस के कड़ा वस्तु मा टकराए ले बारिक – बारिक कन मा बँट के छिटकना (गिरते हुए पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ का कठोर जिनिस से टकराकर छोटे–छोटे कणों में विभक्त होकर बिखरना)। बरखा के फुहार परना (वर्षा की फुहारें पड़ना)।
छराना	मार खाना (यथावत)। छरा जाना (क्षतिग्रस्त होना)। नान–नान कुटका होना (टुकड़ों में विभक्त होना) कुटाना (यथावत)
जनाना	तिरिया (स्त्री)। याद देवाना (स्मरण कराना)। अनभो कराना (अनुभव करना)। बताना (यथावत)।
जिपरहा	गोठ–गोठ मा कीरिया खवइया (बात–बात में सौगंध खाने वाला)। कीरा खवइया (कीट–भक्षी) सूम (कृपण)। जिद्दी (हठी)।
जोरना	जोंड़ना (जोड़ना)। सकेलना (संचित करना)। डरना (भरना)। भेंट कराना मिलाना या आमने–सामने करना।
झार	बिख (विष) पेंड़ (पेड़)। खूब गमकना (तीखी गंध करना)। गुँस्सा (गुस्सा)।
झोइला	अंगार वाले कोइला (जलता हुआ कोयला)। झोलंगा (ढीला–ढाला)। कोचरहा (कुंचित)।
झोरहा	रसहा (रसीला)। झोलंगा (ढीला–ढाला)। पसरल (फैला हुआ)।

ठसना	मोल–भाव होना (सौदा तय होना)। जोम देना (भीड़ना)। ठेस लागना (टकराना)।
ठुर्रा	ढूरू (अंकुरित न हो पाने वाला बीज)। झुक्खा (शुष्क)। टाँठ (कड़ा)। बंठा (बौना)।
डँटना	चिपकना (सटना)। भीड़ना (प्रवृत्त होना)। सकलाना (एकत्रित होना)।
डोलना	हालना (हिलना)। बात ले हटना (वचन बद्ध न रहना)। गलती होना (गलत होना)। सुध बिसराना (भूल होना)।
ढारना	उलदना (ढालना)। गिराना (यथावत)। थिराना (विश्राम करना)।
ढोकरना	लकर–लकर पीना (जल्दी–जल्दी पीना)। घेरी–बेरी गोहराना (बार–बार अनुनय करना)। अथक होना (असमर्थ होना)। मँड़िया के पाँव परना (घुटने के बल बैठकर प्रणाम करना)।
ढोढ़िहा	पानी के रहइया एक ठन साँप (पानी में रहने वाला एक सर्प)। साँप के अकार मा एक परकार के करधन (सर्प के जैसा दिखने वाला एक प्रकार का कटिबंध)। कोनो पीये के जिनिस ला बिक्कट के पियइया (किसी पेय पदार्थ को अधिक पीने वाला)।
तनना	अँटियाना (अकड़ना) बल बाँधना (हिम्मत करना)। झिंकाना (खिंचवाना)। बाढ़ना (फैलना)।
ताव	गुँस्सा (क्रोध)। रोस (जोश)। गुमान (अहंकार)। आँच (ताप)।
दररना	लस खाना (पस्त होना)। थकना (यथावत)। ओनहाँ आदि के चिराना (कपड़ा आदि का फटना)।
धँसना	खुसरना (गढ़ना)। गोभाना (चुभाना)। फसड़ना (फँसना)।
धनी	गोसइयाँ (पति)। मालिक (स्वामी)। धनमान (धनवान)।
धमकना	मुँड़ पिराना (सिर दर्द होना)। आना (यथावत)। जाना (यथावत)।

नजराना	टोनहाना (जादू–टोना करना)। अँखियाना (नेत्र से संकेत करना)।
निमगा	जुच्छा (खाली)। आरूग (शुद्ध)। सिरिफ (सिर्फ)।
नेतना	आँकना (अनुमान लगाना)। बुता नेमना (कार्य सौंपना)। भँउरा मा नेती लपेटना (भौंरे में रस्सी लपेटना)। मकान–मा छान्हीं छाए खातिर भदरी पीटना (मकान में खप्पर छाने के लिए लकड़ी का ढाँचा तैयार करना)।
पकलाना	पाक जाना (पक जाना)। पिंउराना (पीला पड़ जाना)। बिमारी के सेती झिटक जाना (बिमारी से कमजोर हो जाना)।
पटिया	खटिया–पाटी (खाट की पाटी)। बाजवट (तखत)। छान्हीं के बीचों–बीच एक लंभा अउ मोट्ठा लकड़ी जउन हा कड़ी जइसे काम करथे (छप्पर के नीचे की एक लंबी एवं मोटी लकड़ी जो कड़ी के जैसा काम करती है)।
पटियाना	इंतकाल होना (मर जाना)। सुत जाना (सो जाना)। अल्लर पर जाना (शिथिल पड़ जाना)। पाटी पारना (कंघी करना)।
पठवाना	भेजवाना (भेजवाना) चिक्कन हो जाना (चिकना हो जाना) काई रच जाना (काई जम जाना)।
परपराना	जीभ का जलन होना (जीभ में जलन होना)। जाड़ के सेती चमड़ी मा झुर्री आना (ठंड के कारण त्वचा में खिंचवा होना)। पेंड़–पउधा ऊ मा नंगतेहे फर धरना (पेड़–पौधे आदि में अधिक फल लगना)। पेड़ ले फर मन के नंगतेहे झरना (वृक्ष से फलों का अधिक मात्रा में झड़ना)।
पाना	पतई (पत्ता)। पना (यपना)। कोरा मा पाना (गोद मे लेना)। मिलना (प्राप्त करना)।
पार	जात बिसेस के खंझा (जाति विशेष का टुकड़ा)। नदिया–नरवा के कोर (नदी–नाले का कूल)। कुआँ के पार (कुएँ की जगत)। गम नइते हिआव (पता या जानकारी)।
पेलना	मछरी पकड़े के तीनकोनियाँ झोलनी (मछली पकड़ने का एक तिकोना जाल)। मछरी पकड़े बर पानी मा झोल्ली डारना (मछली पकड़ने के लिए पानी में जाल डालना)। धकियाना (धक्का देना) अपनेच बात ला मनवाना (अपनी ही बातों को मनवाना)।
पोक्खाना	फर मा बीजा के पोक्खो होना (फल्ली में दाने का पुष्ट होना)। कोनो जिनिस के उपयोग नइते जादा होए ले अघा जाना (किसी वस्तु के उपयोग या अधिकता से तृप्त होना। धनवंता होना (धनवान होना))।
पोट्ठ	मजबूत (यथावत) पोक्खा दाना वाला (पुष्ट दानों वाला)।

पर्यायवाची

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
जिन 'शब्दों' के अर्थ में समानता हो उन्हें 'पर्यायवाची' शब्द कहते हैं। पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग आवश्यकता, सुविधा एवम् प्रसंग के अनुसार किया जाता है।	जेन 'सब्द' मन के अरथ एके बरोबर नइते एके जइसे होथे ओला 'पर्यायवाची' शब्द केहे जाथे। पर्यायवाची सब्द ल जरूरत, सुभिता, प्रसंग देख के बोले अऊ लिखे जाथे।
पाट	पठेरा, आरा, फूला, घनौची
जादू	नजरडीठ, कसरहा, कारूनारू, करंज
झुकना	निहरना, लीदर, लोर, नव, लहस
जिद्दी	घेख्खर, अप्पत, अरदली,
धूल	धुर्रा, गरदा, फुतकी, भांस, कुधरी, कुधरील,
ठोंस	टांठ, उमठ, पट्ठल, किचरा, कड़ा, ठाहिल, ठोंसहा, ठोंसलग, मट्ठर, पोट्ठ,
रास्ता	रद्दा, धरसा, रावन, डाहर
शरारती	उतलईन, अलवईन, उपई,
अति	लाहो, उतलंग, अतलंग, तपना
सबेरा	बिहनिया, मुंदरहा, पहट, फजर, भिनसरहा, सुरूजउत्ती, बेरा फाटत, कुकरा बासत, मउहा झरत
समय	समे, जुवार, बेरा, पईत्त, कून, बखत

दल	झोरफा, दर्रहा, गोफ्फा, झोथ्था, गोहड़ी, टेन, डोमहा, खाप, खेमा, पार
कमजोर	कमसल, मरहा, हिनहर, लुदरा, अल्लर, लरबा, डगडग ले,
नष्ट	खुआर, मुड़ियामेट, खइता, गउदन, नास
कामचोर	अलाल, डायल, कोढ़िया, ओतिहा
अशिक्षित	अदरा, थेथला, अड़हा, अप्पड़
बाधा	रोका, छेका, आड़, अडंगा, बेंझा, बिलकोर, भेंगराजी
छिद्र	टोड़कू, भोड़ू, बेधा, भोंगरा, साँसी
बातुनी	चटरहा, लपरहा, चटघउला, छेरिया, गोटकाहरा, पटर्रा, अनदेखना, जलनहा
ईर्ष्यालू	कयरहा, खटकायर, खैराहा, खंइटाहा, जलकुकरा
उन्नति	बाढ़, बरकत, बिकास, पोक्खाना, बढ़त, बढ़ोत्तरी, पनकवा, रउती, पनकती, जामंती, बढ़ती
अकेला	अकेल्ला, एकसरूवा, एकलौता
अमीर	बड़े आदमी, धन्नासेठ, धनवान, चीजवाला, दाऊ, गौंटीया, मंडल
गंदा	अद्दर, असाद, मईलाहा, अद्दर, कचरा
खट्टा	अम्मठ, अमसूर, चुरूक,
मीठा	गुरतुर, मीठ, नीक, गुरहा
गरम	तात, तीप, ओकला

टूकड़ा	टूसा, चानी, कुटका
पुराना	जुन्ना, खिनहा, दिन्नी, पुरखौती
नरम	सेवर, सेवरी, कोरमुहा, केंवची, कोंवर, डोहर
पुस्तक	किताब, पोथी

अनेक शब्दों के लिए शब्द

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
कभी–कभी किसी घटना, विचार व भाव को गंभीरता एवम् स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए एक शब्द सदा बोला जाता है। वहाँ पर एक सामाजिक शब्द का उपयोग किया जाता है। इससे कम शब्दों में ज्यादा बातें कह दी जाती है।	कभु–कभु कोनो घटना विचार नइ ते भाव ल गंभीर अऊ बरिया के परगट करे बर एक सब्द बोले जाथे। ओमेर एक सामाजिक सब्द के उपयोग करे जाथे। येकर ले काम सब्द मं जादा असरके बात कहे जाथे।

अँकुस	– निरापानी (नियंत्रण)। रोका (रोक)। हाँथी ला बस मा राखे बर लोहा के नाकदार छड़ (हाथी को वश में करने के लिए लोहे की नुकीली छड़)।
अँखफुट्टी	– ईरखा (ईष्या)। कनवी (कानी)। नीयत डोलइया माइलोगिन (नीयतखोरी करने वाली)।
अँटाना	– कमती होना (घटना)। अईठ चघना (ऐंठन चढ़ना)। उरक जाना (समाप्त होना। झुक्खा होना (खाली होना)।
अँटियाना	– अँइठना (ऐंठना)। गुमान करना (घमंड करना)। अँगरई लेना (अँगड़ाई लेना)।

अंडबंड – बड़बड़ई (व्यर्थ प्रलाप)। गारी–गल्ला (गाली–गलौच)। टेरगा–पेचका (टेढ़ा–मेढ़ा)।

अड़ानी – अटकाए बर टेकाथे तउन जिनिस (अटकाव के लिए प्रयुक्त वस्तु)। कुस्ती के दाँव (मल्ल युद्ध का एक दाँव)। अगियानी (अज्ञानी)।

अदर–कचर – बिन सुवाद के (सुवादहीन)। अधचुरहा (अधपका)। जतर–कतर (अस्त–व्यस्त)

अपसोसी – स्वारथी (स्वार्थी) पेटमाँहदुर (अधिक खाने वाला)। कोनो जिनिस ला जादा ले जादा धरे के उदिम करइया (किसी वस्तु को अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयास करने वाला)।

अभरना – संघरना (मिलना)। धर (पकड़)। छुए के भाव (स्पर्श)। पहुँच (यथावत)।

अरझना – फसड़ना (फँसना)। लटकना (यथावत)। गुरमेटाना (उलझना)। अटकना (यथावत)।

अलकर – दुखदई (कष्ट दायक)। साँकुर जगा (संकीर्ण जगह)। तन के ओ भाग जउन ला देखाय नइ जा सके (गुप्तांग)।

आरा – लकड़ी चीरे बर लोहा के दाँतादार पट्टी (लकड़ी चीने के लिए लोहे की दाँता वाली पट्टी)। बइला गाड़ा के चक्का मा लगे ठाढ़ लकड़ी। (बैलगाड़ी के पहिये में लगी खड़ी लकड़ी)। पानी बोहाय के रद्दा (जल प्रवाह मार्ग)।

उठाना – ठाड़ करना। (खड़ा करना)। उचाना (जगाना)। बोझा उचाना (भार वाहन करना)। बढ़ना (उन्नत करना)।

ऐंठना – अँइठाना (मुड़ जाना)। ठगा जाना (यथावत)।

ओरियाना – ओरी–ओरी करना (क्रमबद्ध करना)। गाजना (थप्पी करना)। बिगराना (फैलाना)। बीते बात ला दुहराना (बीती बातों को प्रस्तुत करना)।

ओसरी – घर के परबित जगा (घर का पवित्र स्थान) घर के परमुख जगा (घर का मुख्य भाग)। पारी (पाली)।

कड़कना – कड़–कड़ के आवाज करना (कड़–कड़ की आवाज करना)। तेल, घीव आदि के तीपना (तेल, घी आदि का तपना)। तेल मा लुसन, जीरा आदि ला भूँजना (तेल में लहसुन, जीरे आदि का भुनना)। रोहिना मारना (बिजली चमकना)।

कलगी – पागा मा लगाए फूल के गुच्छा (पगड़ी में लगाया जाने वाला पुष्प–गुच्छ)। मंजूर नइते कुकरा के मुँड़ी के मुकुट (मोर या मुर्गे के सिर की चोटी)। चूँदी मा लगाए, जाथे तउन कंघी (बाल में लगाया जाने वाला कंघा)।

कसाना	– खाए के जिनिस हा करूवा जाना (भोज्य पदार्थ में कसैलापन आना)। खिंचा जाना (खींच जाना)। सोंचे–बिचारे के नइते अनभो के मुताबिक बुता करे के गुन आना (गंभीरता या अनुभव–शीलता आना)।
काठी	– घोड़ा के पीठ मा मड़ाथे तउन आसनी (घोड़े की पीठ पर रखने की जीन)। तन के ठाठा (शरीर का ढाँचा)। मुरदा लेगे खातिर बाँस के बनाए खटोला (शव ले जाने के लिए बाँस का बना ठाठ)। माटी दे बर जाए के बुता (मृतककर्म)।
कुसी	– गेहूँ, जौ आदि के फोकला (गेहूँ, जौ आदि का छिलका)। पँड़री–भूरी रंग के (सफेद–भूरे रंग की (गाय, बिल्ली))। नान–नान आँखीं वाली (छोटी–छोटी आँखों वाली)।
खरोना	– ओनहाँ धोए खतिर पानी तिपोना (कपड़ा धोने के लिए पानी गरम करना)। सखार करना (अधिक नमकीन करना)। घीव नइते तेल ला जरो डारना (घी या तेल को जला डालना)।
खिरना	– नानचुन होना (छोटा होना)। गवाँ जाना (गुमजाना)। नँदा जाना (प्रचलन समाप्त होना)।
गचकना	– झंझेटना (हिचकोलना)। मरई–धमकई करना (प्रताड़ित करना)। ठठाना (मारना)। दगा देना (धोखा देना)।
गजरा	– गाजा (झाग)। फूल के गोप्फा (पुष्प–गुच्छ)। ढोल के डेरी ताल (ढोलक की बाईं ताल)। ताल के कोर मा लगे चमड़ा के गोल पट्टी (ताल पर लगी किनारे वाली चमड़े की गोल पट्टी)।
गाज	– बिपत (विपत्ति)। बाफुर (झाग)। पानी भीतरी के एक पउधा (एक जलीय पौधा)।
गुम्जा	– कलेचुप रहइया (शांत रहने वाला)। अलाल (आलसी)। मिंझरल (मिश्रित)।
चढ़ाव	– बिहाव बेखन दूलहा डाहन ले भेजे गहना, ओनहाँ अउ आने सिंगार के जिनिस (विवाह के समय वर पक्ष से भेजे जाने वाले आभूषण, वस्त्र एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुएँ)। ऊँच भुइयाँ (ऊँची भूमि)। कोनो जिनिस के किम्मत नइते नहिदया के पानी बढ़ई (किसी वस्तु के मूल्य में अथवा नदी के जल में वृद्धि)। देवी–देवता मन ला चढ़ाए जाथे तउन जिनिस (देवी–देवताओं को अर्पित की जाने वाली वस्तु)।
चपकना	– मसकना (दबाना)। लुकाना (छिपाना)। चटकना (चिपकना)।
चकरना	– गुँसियाना (गुस्सा होना)। कुड़कना (चिढ़ना)। टूटना (यथावत)। दर्रा फाटना (दरार पड़ना)।

चर्राना – दर्रा फाटना (दरार पड़ना)। चिरा जाना (फट जाना)। घाम चरचराना तेज धूप लगना। मार परे ले दरद होना (चोट लगने से दर्द होना)।

चलाना – निभाव करना (निभाना)। उपयोग करना (व्यवहत करना)। चालू करना (चालू करना)। मुरख बनाना (बेवकूफ बनाना)। रोपा लगाना (रोपाई करना)। चन्नी चलवाना (चलनी कराना)।

पुरूत – पुरूत (तह)। साँकुर (संकीर्ण)। सपाट (चिपका हुआ)। चिपचिपहा (चपचपहा) लट बँधाए (लटा हुआ)। काँटा के ढेरी (काँटों का ढेर)।

चुरना – पछताना (पछताना)। जेवन चुरना (भोजन का पकना)। बिपत ला सहना (विपत्ति झेलना)। नंगत के मिहिनत करना (कठोर परिश्रम करना)।

चूरा – हाँत के एक गहना (हाथ में पहनने का कड़ा)। कोनो जिनिस मा लगाए खातिर लोहा आदि ले बने चूरी (किसी वस्तु में लगाने के लिए लोहे आदि की बनी गोल पट्टी)। साँकुर (सकरा)। नानकुन (छोटा)। भूरका (चूर्ण)।

चोभा – काँटा (काँटा)। पीकी (अंकुरण)। चोभी (ठूँठ)।

छनकरना – डर्रा के भागना (बिदकना)। भुरका के उड़ियाना (चूर्ण का उड़ना)। गिर पानी नइते कोनो तरल जिनिस के कड़ा वस्तु मा टकराए ले बारिक–बारिक कन मा बँट के छिटकरना (गिरते हुए पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ का कठोर वस्तु से टकराकर छोटे–छोटे कणों में विभक्त होकर बिखरना)। बरखा के फुहार परना (वर्षा की फुहारें पड़ना)।

छपहा – दू किलो अनाज नापे के काठा (दो किलो अनाज आदि का आकारमापी–काठा)। छपल (छपा हुआ)। नान्हें (छोटा)।

छराना – मार खाना (मार खाना)। छरा जाना (क्षतिग्रस्त होना)। नान–नान कुटका होना (टुकड़ों में विभक्त होना)। कुटाना (कुटाना)।

जनाना – तिरिया (स्त्री)। याद देवाना (स्मरण कराना)। अनभो कराना (अनुभव कराना)। बताना (बताना)।

जिपरहा	– गोठ–गोठ मा किरिया खवइया (बात–बात में सौगंध खाने वाला)। कीरा खवइया (कीट–भक्षी)। सूम (कृपण)। जिद्दी (हठी) काम–बुतस ल धीरलगना करइया (टालमटोल करना)
जोरना	– जोंड़ना (जोड़ना)। सकेलना (संचित करना)। डारना (भरना)। भेंट कराना (मिलाना या आमने–सामने करना)।
झार	– बिख (विष)। पेंड़ (पेड़)। खूब महकना (तीखी गंध करना)। गुँस्सा (गुस्सा)।
झोइला	– अंगार वाले कोइला (जलता हुआ कोयला)। झोलंगा (ढीला–ढाला)। कोचरहा (कुंचित)।
ठसना	– मोल–भाव होना (सौदा तय होना) जोम देना (भीड़ना)। ठेस लागना (टकराना)।
ठुर्रा	– ढूरू (अँकुरित न हो पाने वाला बीज)। झुक्खा (शुष्क)। टाँठ (कड़ा)। बंठा (बौना)।
डँटना	– चिपकना (सटना)। भीड़ना (प्रवृत्त होना)। सकलाना (एकत्रित होना)।
डोलना	– हालना (हिलना)। बात ले हटना (वचन बद्ध न रहना) गलती होना (गलत होना)। सुध बिसराना (भूल होना)।
ढारना	– उलदना (ढालना)। गिराना (गिराना)। थिराना (विश्राम करना)।
ढोकरना	– लकर–लकर पीना (जल्दी–जल्दी पीना)। घेरी–बेरी गोहराना (बार–बार अनुनय करना)। अथक होना (असमर्थ होना)। मँड़िया के पाँव परना (धुटने के बल बैठकर प्रणाम करना)।
ढाढ़िहा	– पानी के रहइया एक ठन साँप (पानी में रहने वाला एक सर्प)। साँप के अकार मा एक परकार के करधन (सर्प के जैसा दिखने वाला एक प्रकार का कटिबंध)। कोनो पीये के जिनिस ला बिक्कट के पियइया (किसी पेय पदार्थ को अधिक पीने वाला)।
तनना	– अँटियाना (अकड़ना)। बल बाँधना (हिम्मत करना)। झिंकाना (खिंचाना)। बाढ़ना (फैलना)।
ताव	– गुँस्सा (क्रोध)। रोस (जोश)। गुमान (अहंकार)। आँच (ताप)।
दररना	– लस खाना (पस्त होना)। थकना (थकना)। ओनहाँ आदि के चिराना (कपड़ा आदि का फटना)।

धँसना – खुसरना (गड़ना)। गोभाना (चुभना)। फसड़ना (फँसना)।

धनी – गोसइयाँ (पति)। मालिक (स्वामी) धमान (धनवान)।

धमकना – मुँड़ पिराना (सिर दर्द होना)। आना (आना)। जाना (जाना)।

नजराना – टोनहाना (जादू–टोना करना)। अँखियाना (नेत्र से संकेत करना)।

निमगा – जुच्छा (खाली)। आरूग (शुद्ध)। सिरिफ (सिर्फ)।

नेतना – आँकना (अनुमान लगाना)। बुता नेमना (कार्य सौपना)। भँउरा मा नेती लपेटना (भौरे में रस्सी लपेटना)। मकान मा छान्हीं छाए खातिर भदरी पीटना (मकान में खप्पर छाने के लिए लकड़ी का ढाँचा तैयार करना)।

पकलाना – पाक जाना (पक जाना)। पिंउराना (पीला पड़ जाना)। चूँदी पाक जाना (बाल का सफेद हो जाना)। बुढ़ा जाना (वृद्ध हो जाना)। बिमारी के सेती झिटका जाना (बिमारी से कमजोर हो जाना)।

पटिया – खटिया–पाटी (खाट की पाटी)। बाजवट (तखत)। छान्हीं के बीचों–बीच एक लंभा अउ मोट्ठा लकड़ी जउन हा कड़ी जइसे काम करथे (छत्तपर के नीचे की एक लंबी एवं मोटी लकड़ी जो कड़ी के जैसा काम करती है)।

पटियाना – इंतकाल होना (मर जाना)। पाटी पारना (कंघी करना)।

पठवाना – भेजवाना (भेजवाना)। चिक्कन हो जाना (चिकना हो जाना)। कई रच जाना (काई जम जाना)।

परपराना – जीभ मा जलन होना (जीभ में जलन होना)। जाड़ के सेती चमड़ी मा झुर्री आना (ठंड के कारण त्वचा में खिंचवा होना)। पेंड़–पउधा ऊ मा नंगते हे फर धरना (पेड़–पौधे आदि में अधिक फल लगना)। पेंड़ ले फर मन के नंगते हे झरना (वृक्ष से फलों का अधिक मात्रा में झड़ना)।

पाना – पतई (पत्ता)। पना (पना)। कोरा मा पाना (गोद में लेना)। मिलना (प्राप्त करना)।

पार – जात बिसेस के खंझा (जाति विशेष का टुकड़ा)। नदिया–नरवा के कोर (नदी–नाले का कूल)। कुआँ के पार (कुएँ

	की जगत)। गम नइते हिआव (पता जया जानकारी)।
पेलना	– मछरी पकड़े के तीनकोनियाँ झोल्ली (मछली पकड़ने का एक तिकोना जाल)। मछरी पकड़े बर पानी मा झोल्ली डारना (मछली पकड़ने के लिए पानी में जाल डालना)। धकियाना (धक्का देना)। अपनेच बात ला मनवाना (अपनी ही बातों को मनवाना)।
पोक्खाना	– फर मा बीजा के पोक्खो होना (फल्ली में दाने का पुष्ट होना)। कोनो जिनिस के उपयोग नइते जादा होए ले अघा जाना (किसी वस्तु के उपयोग या अधिकता से तृप्त होना। धनवंता होना (धनवान होना))।
पोट्ठ	– मजबूत (मजबूत)। पोक्खा दाना वाला (पुष्ट दानों वाला)। मोंट्ठा (मोटा)। बड़े (बड़ा)। धनवंता (धनवान)। कड़ा (कड़ा)। बजनी (भारी)।
फरी	– ढार नाँव के औजार (ढाल नामक अस्त्र) साफ (स्पष्ट)।
फाँदना	– नहाँकना (लाँघना)। कूदना (कूदना)। गाड़ा मा बइला फाँदना (गाड़ी में बैल को जोतना)। बाँधना (बाँधना)। फाँसना (फाँसना)। बुता मा लगाना (काम में लगाना)।
फाँदा	– झोल्ली (जाल)। बँधना (बंधन)। परसानी (परेशानी)।
फुन्नाना	– साँप के फुफकारना (साँप का फुफकारना)। देहें आना (मोटा होना)। ताकती होना (ताकतवर होना)। बिक्कट उदबिरिस करना (अधिक उछल–कूद करना)।
फुरहरी	– नाक मा पहिरे के सोन के एक गहना (नाक में पहनने का एक स्वर्णाभूषण)। फूल–बाहरी (फूल–झाड़ू)। लउँग (लौंग)।
बइठना	– आसनी मा बिराजना (आसन ग्रहण करना)। पिचकाना (दबना)। कमती होना (कम होना)।
बजरहा	– बजारू (बाजार का)। सस्तहा (सस्सा)। बजार जवइया (बाजार जाने वाला)।
बरछा	– कटारी (कटार)। खुसियार के खेत (गन्ने का खेत)। बरोबर ऊँचई वाला पउधा (समान ऊँचाई वाला पौधा)।

बरना	– कंडिल के बातील (बर्नर)। जरना (जलना)। डोरी बरना (रस्सी बटना)। घेपना (सानिध्य में रहना)।
बिछना	– जठना (बिस्तर)। छिदरना (बिखरना)। मरना (मरना)।
बिसाना	– छिदराना (बिखरेना)। उपजाना (उत्पादन करना) सकेलना (संचित करना)। मोल दे के लाना (खरीदना)। हतिया करना (हत्या करना)।
बोहाना	– बोझा लादना (भार वहन कराना)। बोहा देना (प्रवाहित कर देना)। आदत–बेवहार ले गिरना (पतित होना)। गवाँ देना (गुमा देना)।
भड़कना	गुँस्सा होना (क्रुद्ध होना)। बइला, घोड़ा आदि के भन्नाना (बैल, घोड़े आदि का भन्नाना)। बड़े–बड़े लपट के संग आगी बरना (ऊँची लपटों के साथ आग जलना)। घाम मा झुखा के लकड़ी ऊ के चुर्रा जाना (धूप से सूखकर लकड़ी आदि का फटना)।
भदभदहा	– मोंट्ठा (मोटा)। गाढ़ (गाढ़ा)। भदर्रा (भद्दा)।
भन्नाना	– गुँस्सा होना (गुस्सा होना)। मुँड़ पिराना (मस्तक दर्द होना)। माछी आदि के भनभनाना (मक्खी आदि का भिनभिनाना)।
भरभराना	– गला भर जाना (गले का रूँधना)। पानी अउ घाम के सेती माटी ले ढेला नइ उपकना (वर्षा एवं धूप के प्रभाव से मिट्टी का असंगठित या कमजोर होना)। भभक के बरना (भर–भर करके जलना)। अगियाना (जलन होना)।
भितराना	– भीतर करना (अंदिर करना)। लुकाना (छिपाना)। बइलागाड़ा, नाँगर ऊ मा बइला नइते भइँस्सा ला डेरी कोती फाँदना (बैलगाड़ी, हल अदि में बैल या भैंसे को बाईं तरफ जोतना)।
मउर	– आमा के फूल (आम का बौर)। कुकरा नइते मंजूर के मुकुट (मुर्गे या मयूर की कलगी)। सेहरा (सेहरा)।
मरना	– झुखाना (सूखना)। दुख भोगना (दुख सहना)। बड़ मयाँ करना (अधिक प्रेम करना। इंतकाल होना (मृत्यु होना)।

मरहा	– रेगड़ा (दुर्बल)। कंगला (निर्धन)। मरझुरहा (मृतवत)।
मायाँ	– जोगानी (धन)। किरवार (परिवार)। मयाँ (मोह)।
मिसतिरी	– हलवई (हलवई)। राजमिसतिरी (राजगीर)। बढ़ई (कारीगर)। मसीन बनइया (मशीन सुधारक)।
मुँड़ी	– मुँड़ (सिर)। कोर (किनारा)। छोर (छोर)। कोनो जिनिस के दूनों छोर के जोंड़ (किसी वस्तु के दोनों सिरों की जोड़)।
मुँड़ेरना	मुरकेटना (मोड़ना)। डोरी आँटना (रस्सी बटना)। बाँधना (बाँधना)। भाँड़ी के ईंटा–पत्थर ला गिरे ले बचाए खातिर माटी चघाना (दीवार के ईंट–पत्थर को गिरने से बचाने के लिए मिट्टी चढ़ाना)।
मुड़ल	– मुँड़वाल (मुंडन किया हुआ)। लूटल (लूटा हुआ)। लहुटल (वापस हुआ)। नवल (झुका हुआ)। मुँड़े (मुड़ा हुआ)।
मुहेला	– मुँहजोरी (मुँहजोरीं। बिक्कट के मयाँ (अत्यधिक प्रेम)। सिंग दरवाजा (मुख्य दरवाजा)।
मोटइया	– मोंट्ठा होवइया (मोटा होने वाला)। हितइया (संतृप्त होने वाला) गुमान करइया (घमंड करने वाला)।
रंगझाब्र	– कंकलहिन (कलह पैदा करने वाली)। पुचपुचहिन (रंगीन मिजाज वाली)। बिक्कट सज–धज के रहइया तिरिया (अधिक साज–श्रृंगार करने वाली)।
रचना	– थप्पी मारना (किसी वस्तु को क्रमबद्ध रखना)। सिरजना (निर्माण करना)। रंगना (रंगना)।
रसाना	– डबके ले रसा के गढ़ियाना (उबल कर रस का गाढ़ा होना)। बरतन मा होय टोंकी ला धातु ले मूँदवाना (बर्तन आदि में हुए छेद को धातु से बंद कराना)। पानी मा धान के भीगे ले चाउँर के पिंउराना (पानी में धान के भीगने से चावल में पीलापन आ जाना)। जादू–टोना के असर होना (तांत्रिक शक्तियों से प्रभावित होना)।
रिरयइया	– रेंदियहा (हठी)। चिल्लइया (चिल्लाने वाला)। गिड़गिड़इया (गिड़गिड़ाने वाला)।
रोंठ	– बिसेस परकार के रोटी (विशेष प्रकार की रोटी)। मोंट्ठा (मोटा)। धनवंता (धनवान)। बड़े (बड़ा)।
सँटइया	– चुमइया (चयनकर्ता)। छँटइया (साफ करने वाला)। जोड़इया (जोड़ने वाला)
सवाँगा	– सजे–सँवरे के बुता (श्रृंगार करने की क्रिया या भाव)। सजे–सँवरे के जिनिस (श्रृंगार सामग्रियाँ)। तुरते (तत्काल)।

सँइतना	– सकेलना (संचित करना)। बाँचल भात मा पानी डारना (बचे हुए भात में पानी डालना)। दोहराना (मारना)। रमंजना (रगड़ना)। छेना बनाए के पहिली गोबर ला बने सानना (कंडा बनाने के पूर्व गोबर को रगड़ कर अच्छी तरह मिलाना)।
सधइया	– साद मरइया (इच्छा रखने वाला)। कोनो बुता के भरपूर जानकारी रखइया (किसी कार्य में दक्ष होने वाला)। अपने बुता ला पूरा करइया (अपने कार्य को पूर्ण करने वाला)। बचन के निभइया (वचन को निभाने वाला)।
सरी	– पुरूत (पर्त)। पूरा (पूर्ण)। बार (बार)
सानना	– मेलना (गूँथना)। मइलाना (गंदा करना)। मिंझारना (मिलाना)।
सेवर	– कोंवर (नरम)। गेदरहा (अधपका)। नानकुन (छोटा)। लिल्हर (कमजोर)।
सेसा	– छोल्टी (चोकर)। छेछन (नाक की सूखी मैल)। गुमान (घमंड)।
हँथेलना	– हाँत ले ढकेलना नइते पीटना (हाथ से धक्का देना या मारना)। हँथियाना (पकड़ना)। चोराना (चुराना)।
हड़बड़ना	– लकर–लकर करना (जल्दबाजी करना)। भड़कना (डाटना)। लड़बड़ाना (लड़खड़ाना)।
हबरना	– धरना (पकड़ना)। मुहीं–के–मुहाँ होना (आमने–सामने हो जाना)। गड़ना (चुभना)।
हरना	– हरिना (हिरण)। नँदा जाना (प्रचलन समाप्त हो जाना)। चोरी हो जाना (चोरी हो जाना)। गवाँ जाना (गुम जाना)।
हलर–हलर	– बिन डर नइते संकोच के (बिना भय या संकोच के)। लक–लकर (जल्दी–जल्दी)।
हिरोना	– पोसवा बनाना (पालतू बनाना)। हराना (हराना)। परखना (परखना)

विलोम शब्द

हिन्दी

जिन शब्दों से किसी दूसरे शब्द के उल्टे यानी विपरीत अर्थ का बोध होता हैं। उसे विलोम, विपरार्थी, विपरीतार्थी प्रतिलोम, प्रतिलोमर्थी, विरूद्धार्थी शब्द कहा जाता है।

जैसे :–

गोरा	काला (साँवला)
कम	ज्यादा
धूप	छाया
पुराना	नया
नर्क	स्वर्ग

प्रकार :– विलोम शब्द अनेक प्रकार के होते हैं।

1. **पूर्व निश्चित या रूढ़** – ऐसे विलोम शब्द विरोधी शब्द से एकदम अलग होते है।

छत्तीसगढ़ी

जेन शब्द ले कोनो दूसर सब्द के उल्टा अर्थ के बोध जानबा होथे ओला विलोम, विपरार्थी, विपरातार्थी, विरोधी, प्रतिलोम, प्रतिलोमार्थी सब्द केहे जाथे।

जइसे :–

ओग्गर	करिया / साँवर
कमी / कमती	बेसी
घाम	छाँव / छाँव
जुन्ना	नवाँ
नरक	सरग

प्रकार :– विलोम सब्द कई किसम के होथे।

1. अइसन विलोम उल्टा सब्द विरोधी सब्द ले अलगेच होथे।

1) पूर्व निश्चित या रूढ़ शब्द

ऐसे विलोम शब्द अनुलोम शब्द से सर्वथा भिन्न होते हैं। इनमें किसी प्रकार का साम्य नहीं होता है।

(अइसे विलोम सब्द अनुलोम सब्द ले अलगेच किसम के होथे। येमा कोनो किसम ले दूसर सब्द ले बरोबरी नई होवय)

जैसे / जइसे :

(i) स्वतंत्र शब्द

छत्तीसगढ़ी / हिन्दी	छत्तीसगढ़ी / हिन्दी
अँधियारी (अंधकार)	उजियारी / अंजोरी (प्रकाश)

अपन (अपना)	बिरान (परया)
अम्मट (खट्टा)	मीठ (मीठा)
उज्जर (स्वच्छ)	मइलहा (गंदा)
उठना (उठना)	बइठना (बैठना)
उतरना (उतरना)	चघना (चढ़ना)
उतलंगहा (शरारती / उत्पाती)	मिटकहा (शांत रहने वाला)
ओग्गर (गोरा)	साँवर (साँवला)
उबरना (शेष बचना)	खंगना (कम पड़ना)
कमी (कम)	बेसी (अधिक)
काँटना (काटना)	जोड़ना (जोड़ना)
खुहार (बर्बाद)	अबाद (आबदा)
घाम (धूप)	छाँव (छाया)
चघऊ (चढ़ाऊ)	उतारू (ढालू)
जुन्ना (पुराना)	नवाँ (नया)
झुक्खा (सूखा)	गिल्ला (गीला)
दतला (लंबे दाँतों वाला)	भोभला (दंतहीन)
दानी (दान देने वाला)	सूम (कृपण)
नरक (नर्क)	सरग (स्वर्ग)
निमारना (छाँटना)	मिंझारना (मिलाना)
पक्का / पाका (पका हुआ)	कइंच्चा / काँचा (कच्चा)
मोंट्ठा (मोटा)	पातर (पतला)
लट्ठा (निकट)	दुरिहा (दूर)
संझा (संध्या)	बिहिनियाँ (प्रातः)

(ii) लिंग के आधार पर – छत्तीसगढ़ी में भी कुछ रूढ़ शब्द लिंग के आधार पर विलोमार्थी होते हैं जो केवल संज्ञा शब्द होते हैं।

यद्यपि ऐसे रूढ़ विलोमार्थी शब्दों की संख्या बहुत कम है किंतु बहुप्रचलित, व्यावहारिक एवं महत्वपूर्ण हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। (छत्तीसगढ़ी मा घलोक रूढ़ सब्द लिंग के मुताबिक विलोमार्थी होथे, जेहा संज्ञा सब्द होथे। अइसना सब्द कमती होथे फेर मनखे के मुँह ले बेरा बखत मा निकलथे अऊ महत्व के होथे।

जैसे / जइसे :

छत्तीसगढ़ी / हिन्दी	**छत्तीसगढ़ी / हिन्दी**
कुकुर (कुत्ता)	कुतन्निन (कुतिया)
दमाँद (दामाद)	बेटी (पुत्री)
बइला (बैल)	गइया / गाय (गाय)
बबा (दादा)	दाई (दादी)
बाबू (लड़का)	नोनी (लड़की)
भाई (भाई)	बहिनी (बहन)
भतार (पति)	मेहेरिया (पत्नि)
मरद (पुरूषु)	तिरिया (स्त्री)

2) **निर्मित शब्द** – हिन्दी की भाँति छत्तीसगढ़ी में भी रूढ़ शब्दों की अपेक्षा निर्मित विलोम शब्दों की संख्या अधिक है। साथ ही इनकी निर्माण विधि में भी भिन्नता है। इसी भिन्नता के आधार पर इसे निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :–

(छत्तीसगढ़ी मा घलोक रूढ़ सब्द ले बनाए उलटा सब्द जादा हे, जेहा समे, जघा अऊ उपयोग के सती अलगेच होथे। येकरे सती ऐला अलग–अलग बाँटे गेहे)

(i) **स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय लगाकर** – छत्तीसगढ़ी में स्त्रीलिंग वाचक विलोमार्थी शब्द बनाने के लिए – 'ई', इन' एवं 'निन' प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इन प्रत्ययों के प्रयोग से संज्ञा एवं विशेषण दोनों प्रकार के स्त्रीलिंग वाचक शब्दों का निर्माण होता है। इनके पृथक–पृथक कुछ उदाहरण इस प्रकार है। (छत्तीसगढ़ी में स्त्रीलिंग वाचक उलटा सब्द बनाये बर 'ई', इन' एवं 'निन' प्रत्यय के लगाए जाथे। येकर ले संज्ञा अऊ बिसेषण दोनों किसम के उलटा सब्द बनथे।

जैस/जइसे :

(अ) संज्ञा शब्दों में

छत्तीसगढ़ी/हिन्दी	छत्तीसगढ़ी/हिन्दी
कुकरा (मुर्गा)	कुकरी (मुर्गी)
कुवाँरा (अविवाहित बालक)	कुवाँरी (अविवाहित बालिका)
गोसईया (पति, स्वामी)	गोसइन (पत्नी, स्वामिनी)
जेठौत (ज्येष्ठ का पुत्र)	जेठौती (ज्येष्ठ की पुत्री)
ठाकुर (मालिक)	ठाकुरइन (मालकिन)
बछरू (गाय का नर बच्चा)	बछिया (गाय का मादा बच्चा)
भइँसा (भैंसा)	भइँसी (भैंस)
सउँजिया (कृषि – नौकर)	सउँजनिन (कृषि–नौकर की पत्नी)

(ब) विशेषण शब्दों में

छत्तीसगढ़ी	छत्तीसगढ़ी/हिन्दी
उचका	उचकी (उछल–उछल कर चलने वाली)
उटकहा	उटकही (उलाहना देने वाली)
कबरा	कबरी (विविध रंगों वाली)
खपचलिहा	खपचलहिन (बहाना करने वाली)

गपोड़हा	गपोड़हिन (गप मारने वाली)
गुड़िहार	गुड़िहारिन (बैठकों में भाग लेने वाली)
गुनवंता	गुनवंतिन (गुणवती)
गोठकाहर	गोठकाहरिन (अधिक बातें करने वाली)
चेरिहा	चेरहिन (निंदा करने वाली)
छेरका	छेरकिन (बकरी चराने वाली)
जकहा	जकही (पगली)
जोदर्रा	जोदर्री (अधिक मोटी)
टसकहा	टसकहिन (चुपचाप खिसकने वाली)
टुटपुंजिहा	टुटपुंजहिन (सीमित साधन वाली)
टुमहाँ	टुमहीं (स्वप्रशंसक)
ठेपला	ठेपली (बौनी)
ढिंठहा	ढिंठही (जिद्दी स्वभाव वाली)
तरकहा	तरकहिन (चिढ़ने वाली)
दुलरवा	दुलवरिन / दुलवरी (लाड़ली)
धनमंता / धनवंता	धनमंतिन / धनवंती (धनी स्त्री)
धुमरा	धुमरी (मोटी)
नटकुटिहा	नटकुटहिन / नटकुटही (नटखट स्त्री)
निंदरा	निंदरी (गहरी नींद सोने वाली)
पंड़रा	पड़री (गोरी)
पढ़ंता	पढ़ंतिन (अधिक पढ़ने वाली)
बइहा	बही (पगली)
बउना	बउनी (नाटी)
बपुरा	बपुरी (बेचारी)

भजनहाँ	भजनहिन/भजनहीं (कीर्तन या भजन गाने वाली)
मुचमुचहा	मुचमुचहिन/मुचमुचही (होंठ दबाकर हँसने वाली)
रेगड़ा	रेगड़ी (दुबली)

(ii) उपसर्ग लगाकर – कुछ विलोम शब्दों का निर्माण शब्दों के पूर्व विपरीत अर्थवाचक उपसर्ग लगाकर किया जाता है। छत्तीसगढ़ी में ऐसे उपसर्गों के रूप में 'अ, अन, अप, अब, आन, आने, कु, न, बि' आदि प्रयोग में आते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार है। (कोनो–कोनो उलटा सब्द मन में उलटा अर्थ वाले उपसर्ग 'अ, अन, अप, अब, आन, आने, कु, न, बि' लगाये जाथे)

जैसे/जइसे :

उपसर्ग	शब्द	विलोम शब्द
अ	काट	अकाट (आकट्य)
	कारज	अकारज (व्यर्थ)
	गम	अगम (अनुमान से परे)
	गियानी	अगियानी (अज्ञानी)
	चेतहा	अचेतहा (बेसुध)
	छीम	अछीम (अक्षम्य)
	टल	अटल (स्थिर)
	नीत	अनीत (अन्याय)
	पीकहा	अपीकहा (अंकुरण रहित)
	बीजहा	अबीजहा (बीज के अयोग्य)
अन	गढ़ल	अनगढ़ल (प्राकृतिक)

	चिन्हाँर	अनचिन्हाँर (अपरिचित)
	थहाव	अनथहांव (जिसकी थाह न मिले)
	बनक	अनबनक (दुश्मनी)
	बासा	अनबासा (निवास रहित)
	बिसवाँस	अनिबिसवाँस (अविश्वास)
	भरोसा	अनभरोसा (अविश्वास)
	मेल	अलमोल (बेमेल)
	सुनल	अनसुनल (बिना श्रवण किया हुआ)
	सोंचे	अनसोंचे (बिना विचारे)
	हित	अनहित (अहित)
अप	अँगहा	अपँगहा (लंगड़ा)
	जस	अपजस (अपयश)
	पतिहा	अप्पतिहा (जिद्दी)
	सगुन	अपसगुन (अपशकुन)
अब / औ	गुन	अवगुन / औगुन (अवगुण)
	घट	अवघट / औघट (निर्जन स्थान)
	तरना	अवतरना / औतरना (अवतार लेना)
आन / आने	घर	आन / आने घर (अन्य गृह)
	जात	आन / आने जात (विजात)
	तरिया	आन / आने तरिया (अन्य या दूसरा तालाब)
	देस	आन / आने देस (विदेश)
कु	ठउर	कुठउर (गलत स्थान)

	नीत	कुनीत (नियम विरूद्ध)
	बेरा	कुबेरा (असमय)
	भाव	कुभाव (ईर्ष्या)
	पूत	कपूत (कुपुत्र)
	मत	कुमत (गलत विचार)
	मारग	कुमारग (गलत मार्ग)
	संग	कुसँग (गलत संगत)
	समे	कुसमे (खराब समय)
न	पता	नपता (लापता)
	राजी	नराजी (खिन्न, नाराजी)
	साना	नसाना (नष्ट होना, प्रचलन रहित होना)
बि	घर	बिघर (बेघर)
	चेत	बिचेत (बेहोश, अचेत)
	जात	बिजात (विजात)
	देस	बिदेस (विदेश)
बिन	गतगढ़न	बिनगतगढ़न (बेशक्ल–सूरत)
	गुदार	बिनगुदार (गिरी रहित)
	गुरमेटल	बिनगुरमेटल (बिना चयन रहित)
	चरागन	बिनचरागन (बिना चयन किए)
	पुछंता	बिनपुछंता (बिना पूछ–परख के)

(iii) भिन्न उपसर्ग लगाकर – कभी–कभी उपसर्ग युक्त शब्दों का विलोम उससे भिन्न उपसर्ग लगाकर भी किया जाता है। किंतु ऐसे उपसर्गों की संख्या छत्तीसगढ़ी में बहुत कम है –

एकरंगी	बिदरंगी (विविध रंगों वाला)
एकावँट	गुरावँट (विनिमय विवाह)
एबखत	आनबाखत (अन्य समय)
एदरी	आनदरी (दूसरी बार)
अगियानी	सगियानी (समझदार)
जियत बरेंडी	मरेबरेंडी (पति के मृत्युपरांत दूसरा पति बनाया हो)
बड़बोला	एकबोलिया (मितभाषी)
बिनियाँ छेना	थोपना छेना (हाथ से बनाया हुआ कंडा)

(iv) भिन्न प्रत्यय जोड़कर – कुछ शब्दों में जुड़े प्रत्यय के स्थान पर भिन्न प्रत्यय जोड़कर भी विलोम शब्द बनाते हैं। जैसे –

कुलतारक	कुलबोड़ुक (कुल का नाम डुबाने वाला)
कुलवंता	कुलकलंक/कुलघातिया (कुल को बदनाम करने वाला)
जातबाहिर	जातवाला (सजातीय)
देंहछोड़वा	देंहगिरा (प्रायः दूसरे से चिपक कर रहने वाला)
मइलछटहा	मइलखोरहा (धूप चिपकाने वाला)
मुँड़उघरी	मुँड़ढँक्की (सिर झुकाकर स्वीकार करने वाला)
मुँहलुकवा	मुँहछोर (जिसमें वाक्–संयम का अभाव हो)
हँथजोड़वा	हँथछोर (जो तत्काल मारपीअ के लिए तैयार हो जाता है)

(v) सामासिक शब्दों में प्रथम शब्द का परिवर्तन करके

अपने दुवारी	परदुवारी (दूसरे का द्वार)
एकमइहाँ	दुमइहाँ (दो मुँह वाला 'चुल्हा')
करिया – बादर	पँड़री–बादर (श्वेत बादल)
खारराख	माटीराख (मिट्टी राख)
ननंद–भउजई	देवर–भउजई (देवर – भाभी)
पनियाँ–अंकाल	झुक्खा – अंकाल (सूखा आकाल)
पहाती – सुकुवा	बुड़ती – सुकुवा (सूर्यास्त काल का शुक्र तारा)
बाउँत – पानी	पकौना – पानी (फसल पकाने के लिए खेतों में डाला जाने वाला जल)
मँहतारी – बेटा	बाप – बेटा (पिता–पुत्र)
लरीबाती	फूलबाती (फूलबत्ती)
सगबेटा	हिंगलबेटा (पत्नी के पूर्व पति द्वारा उत्पन्न पुत्र)
सतबचन	झूठबचन (असत्य वचन)

(vi) ऊनार्थक या न्यूनार्थक शब्द द्वारा – जिससे किसी वस्तु की लघुता का ज्ञान हो उसे ऊनार्थक या न्यूनार्थक शब्द कहते हैं। न्यूनार्थक शब्द भी अकारवाची विलोमार्थक शब्द होते हैं। जैसे –

अँगेठा	अँगेठी (जलती हुई पतली लकड़ी)
आरा	आरी (लकड़ी चीरने का एक औजार)
कंठा	कंठी (काष्ठ की एक मनिका)
कंसा	कंसी (धान की बाली का छोटा–छोटा टुकड़ा)

कटोरा	कटोरी (एक छोटा पात्र)
करसा	करसी (मिट्टी का बना लाल रंग का घड़ा)
कुढ़ेना	कुढ़ेनी (ढेरी)
कुरचा	कुरचुल (लकड़ी, लोहा, काँच आदि का छोटा टुकड़ा)
केरा	केरी (छोटे आकार का केला)
कोपरा	कोपरी (छोटी परात)
खटिया	माँची (छोटी खाट)
खाँचा	खैंचकुल (छोटा गड्ढा)
खूँटा	खूँटी (कील)
खेखसा	खेखसी (सब्जी के काम आने वाला एक फल)
खोक्सा	खोक्सी (एक मछली)
गघरा	गघरी (घड़ा)
गट्ठा	गठरी (गट्ठर)
गाड़ा	गाड़ी (बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी)
गैंती	कुदारी (कुदाली)
गोरसा	गोरसी (मिट्टी का बना कटोरानुमा पात्र)
चरखा	चरखी (तकली)
चरिहा	टुकनी (टोकरी)
चाँवरा	चाँवरी (चबूतरा)
जाँता	जतली (चक्की)
डोंगा	डोंगी (नाव)
डोर	डोरी (रस्सी)
ढोरगा	ढोरगी (प्राकृतिक रूप से बनी नाली)
तरिया	डबरी (छोटा तालाब)
थारी	थरकुलिया (थाली का छोटा रूप)

पढ़ीना	लपचा (पढ़ीना नामक मछली का बच्चा)
बसला	बसली (एक धारदार छोटा हथियार)
बाँबर	बाँबी (मछली विशेष)
लोढ़हा	लोढ़ही (सिल का छोटा बट्टा)
हँसिया	इल्ली (छोटा हँसिया)

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
कभी–कभी किसी विस्तृत विचारों या भावों को व्यक्त करने के लिए एक शब्द (पद) या वाक्यांश का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्दों या वाक्यांशों के प्रयोग से भाषा में भावों की गंभीरता, सुदृढ़ता एवं प्रभाव तो बढ़ते ही हैं, कम शब्दों के उच्चारण से श्रम और समय दोनों की बचत भी होती है। भावभिव्यक्ति की इस रीति को सामासिक पद्धति भी का जाता है। ऐसे शब्दों के प्रयोग के लिए आवश्यक है कि लेखक या वक्ता का शब्दों पर पूर्ण अधिकर हो, तभी कम शब्दों का प्रयोग 'गागर में सागर भरना' कहावत को चरितार्थ किया जा सकता है। यहाँ पर इसी प्रकार के कुछ शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं –	कभु–कभु कोनो घटना, बिचार नइते भाव ला गंभीर अऊ फरिया के प्ररगट करे बर एके किसम के सब्द बोले जाथे। येकर ले कम सब्द में जादा असर अऊ भाव भरे बात केहे जाथे।

छत्तीसगढ़ी सब्द	छत्तीसगढ़ी / हिन्दी वाक्यांश
अँकवार	– दूनों बइहाँ ला पसारे ले कोनो जिनिस हा जतका अकन धराथे। (दोनों बाहों को फैलाकर पकड़ने से प्राप्त वस्तु की मात्रा)
अँचरी	– कीरा मन के काँटे ने गिरे धान के बाली के छोटे–छोटे कुटका। (कीड़ों के काटने से गिरे धान की वाली के छोटे–छोटे टुकड़े)
अँजेरी	– ठेले कस गोठियाए के ढंग। (व्यंग्यात्मक शैली में बोलने की क्रिया या भाव)
अंकलहा	– अंकाल बखत के। (अकाल के समय का)

अकसरिया / अकतरिया	– किसनहिन मन के चौमासा मा पहिरे के चप्पल। (कृषक–औरतों की विशेष चप्पल जिसे वर्षाकाल में पहनते हैं)
अगमजानी	– बिन बताए घटना ला सहीं–सहीं बतइया या मन के बात ला जनइया। (बिना जानकारी दिये घटनाओं को सही–सही बताने वाला या मन की बातों को जानने वाला)
अगरी	– आँखी अउ कान के बीच वाला भाग। (आँख और कान का मध्य भाग)
अचवइन	– खटिया के गोड़तरिया मा बँधाए डोरी। (चारपाई के पैताने की रस्सी)।
अछाड़	– बइलागाड़ी के बीच मा लगे लंभा अउ मोट्ठा लोहा जउन मा चक्का लगथे। (बैलगाड़ी के मध्य में लगाया जाने वाला एक लंबा एवं मोटा लोहा जिसमें पहिये लगे होते हैं)
अछीम	– जउन हा छिमा के लइक नइ राहय। (जो क्षमा के योग्य न हो)
अजारा	– बिना नापे–तउले। (बिना नाप–तौल किए)
अटकपारी	– बेर के संगे–संग घट–बढ़ होवइया मुँड़ी पीरा। (धूप के आधार पर घटने–बढ़ने वाला सिर दर्द)
अठवाही	– नवरात पाख मा आठे के भोग। (नवरात्रि पक्ष में अष्टमी का भोग)
अड़कड़ी	– बड़ भगइया मवेशी के गोड़ मा बाँधे जाथे तउन लकड़ी। (अधिक भागने वाले जानकर के पैरों पर बाँधी जाने वाली लकड़ी)
अड़गड़	– कोठार के मुहाँटी मा मवेशी मन ला छेके बर लगाए जाथे तउउन बाँस। (गोशाला में पशुओं को रोकने के लिए दरवाजे पर लगाया जाने वाला बाँस)
अड़गसनी	– ओनहाँ झुखोए के बाँस नइते तार। (कपड़ा सुखाने का बाँस या तार)
अढ़वा	– घर बुता करइया लइकुसहा नौकर। (घरेलू कार्य करने वाला कम उम्र का नौकर)
अथानी	– अथान धरे के माँटी क बने करिया हाँड़ी। (अचार रखने के लिए प्रयुक्त मिट्टी का बना एक काला पात्र)
अदियावन	– जउन ला देख के दया आथे। (जिसे देखकर दया उत्पन्न हो)
अधिया	– उपज के आधा हिस्सा मा दूसर ला कमाए खातिर खेत देय के रीत। (कृषि भूमि को उसके उत्पादन के आधा हिस्से पर दूसरे को कमाने के लिए देने की एक पद्धति)
अधेड़	– आधा उम्मर के। (आधी उम्र का)
अनठेहरा	– तिरछा–तिरछा देखइया। (वक्र दृष्टि वाला)
अनथहाव	– जउन ला जाने नइ जा सके। (जिसे जाना नहीं जा सकता)
अनवासना	– नवाँ जिनिस ला बउरना। (नई वस्तु का उपयोग करना)
अनवासा	– जिहाँ बासा नइ होवय। (जहाँ निवास न होता हो)

अनवासा	– बिन सुने। (बिना श्रवण किया हुआ)
अनाकानी	– कोनो बुता बर कोताही करई। (किसी कार्य को जान बूझकर टालने की क्रिया)
अमानी	– रोजी मा कमाथे तउन बुता। (दैनिक मजदूरी पर किया जानेवाला कार्य)
अरिया	– खीला लगे लउठी। (लोहे की कील लगी हुई लाठी)
अवार	– एक घाँव के जोतई। (एक बार की जोताई)
अहरा	– छेना आगी के ढेरी। (कंडे की आग का ढेर)
आँतर	– जमे रथे तउन दही। (दही का थक्का)/हल से जुताई करते समय छेटे भाग
आँवर	– जचकी के बाद के फूल (प्रसव के बाद का फूल)
आवाँ	– माँटी के भाँड़ा पकोए के भट्ठी। (मिट्टी के बर्तनों को पकाने की भट्ठी)
इट्टे	– खेती करे बर पइसा के अभाव मा बीरता काँट के बनी के बलदा अनाज देय के रीत। (कृषि करने के लिए पैसे के अभाव में फसल काटकर मजदूरी के बदले अनाज देने की रीति)
उखरा	– गुर के पाग मा सौंदाए लाई। (गुड़ के सिरे से पगी लाई)
उटंग	– कांचे के बाद ओनहाँ के टुटई। (धुलाई के पश्चात कपड़े का सिकुड़ना)
उढ़रिया	– बिन बिहाव करे आने मनसे ला गोसइयाँ मान के ओकर संग रहई। (बिना विवाह किये पर पुरूष को पति स्वीकार कर साथ रहने की क्रिया)
उतेरना	– खड़े बीरता वोल छिपरनहाँ खेत मा बीज छींतना। (खड़ी फसल वाले गीले खेतों में बीज छिड़कना)
उधवा	– पेराँट मा दबे अनाज के दाना मन ला सकले के बुता। (पैरावट में दबे अनाज के दानों को संचित करने की क्रिया)
उपरिया	– ऊपरे–ऊपर ला देखइया। (अस्थिर दृष्टि वाला)
उरला	– बइलागाड़ी के पिछोत मा बजन के जादा होए ले आघू कोती टँगा जथे तउन स्थिति। (बैलगाड़ी के पीछे भाग में अधिक भार के कारण सामने भाग के ऊपर उठ जाने की स्थिति)
उलफुलहा	– बड़ई सुन के गद्‌गद्‌ होवइया। (बड़ाई सुनकर अति उत्साहित होने वाला)
उलेंदापूरा	– तेज धार के संग अवइया भयंकर पूरा। (जिसकी एक ही संतान हो)
ओकार	– मुसवा नइते आने कीरा–मकोरा ह कोड़े रथे तउन माँटी के चूरा। (चूहे या अन्य कीड़े–मकोड़े द्वारा खोदकर निकाला गया मृदा चूर्ण)
ओरछई	– सुवागत खातिर मुहाँटी मा पानी डरई। (स्वागत के लिए प्रवेश द्वार पर पानी डालने की क्रिया)

ओल्होत	– मवेशी मन ला रेंगाए खातिर देय जाथे तउन अवाज। (जानवरों को चलाने के लिए दी जाने वाली आवाज)
ओसहा	– छेवरिया मन ला खवाए बर जरी–बूटी ले बने ताकत के दवई। (प्रसूति का स्त्रियों को खिलाने के लिए जड़ी–बूटी से बनी पौष्टिक औषधि)
कँदियाना	– पानी नइते चिखला के कारन हाँत–गोड़ मा घाव होना। (पानी या कीचड़ के कारण हाथ–पैर में घाव होना)
कंसहा	– डारा–खाँधा वाले पौधा। (अनेक शाखाओं से युक्त पौधा)
कइथला	– निच्चट घोंघटहा अउ चिरहा (ओनहाँ)। (अधिक गंदा एवं फटा–पुराना (कपड़ा))
कछेरिया	– कछेरी के बुता करइया। (कचहरी का कार्य करने वाला)
कजरा	– करिया आँखी वाला। (काली आँखों वाला)
कठलइया	– पेट के फूलत ले हँसइया। (हँसते–हँसते लोट–पोट होने वाला)
कड़हा	– जउन मा कीरा पर जाए रथे। (जिसमें कीड़े पड़ गए हों)
कनघटोर	– सुन के घलो नइ सुने के बहाना करइया। (सुनकर भी अनसुना करने वाला)
कनमनहाँ	– घेरी–बेरी मुँड़ी ला झटकरइया मवेसी। (बार–बार सिर झिटकने वाला पशु)
कपटहा	– झूठ–मूँठ के बेवहार करइया। (मिथ्या व्यवहार करने वाला)
कपिला	– मुँड़–गोड़ ले करिया रंग के गाय। (सिर से पैर तक काले रंग की गाय)
कबार	– धान के कटाए पौधा। (धान का कटा हुआ पौधा)
कमासू	– ओ भुइयाँ जेमा खेती करे जात हे। (वह भूमि जिस पर कृषि की जा रही हो)
कमासू	– ओ भुइयाँ जेमा खेती करे जात हे। (वह भूमि जिस पर कृषि की जा रही हो)
करछटहा	– करियहा बानी के। (हल्के काले रंग का)
करवाही	– नाँगर चलाए ले उपके माँटी के ढेला। (हल चलाने पर निकलने वाला मिट्टी का कड़ा टुकड़ा)
कलोर	– पहिली घाँव गाभिन होवइया गाय। (प्रथम बार गर्भिणी होने वाली गाय)
कानी	– खाँसड़ा अउ गरदेवाँ ला जोड़थे तउन होरी। (जानवरों की लगाम के एक छोर में लगी वह रस्सी जो जानवरों के गले में लगी रस्सी को जोड़ती है)

किलबिलई	– कमती जगा मा अनसम्हाँर भीड़ होय के स्थिति। (कम जगह पर अत्यधिक भीड़ होने की स्थिति)
कुँवरकलेवा	– बिहाव मा भाँवर के बाद बिसेस सनमान खातिर दुलहा ला खवाए जाथे तउन पकवान।
कुँवरबोड़का	– गजब उम्मर वाला कुँवारा टूरा। (अधिक उम्र का अविवाहित युवक)
कुकरी–उड़ान	– थोरकिन के खुसी नइते बल। (अल्पकालिक उत्साह या ताकत)
कुटहा	– बिक्कट मार नइते गारी खवइया। (अधिक मार या गाली खाने वाला)
कुड़बुड़ई	– धीम आवाज नइते अटपट भाखा मा बोलई। (धीमी आवाज या अस्पष्ट शब्दों में बोलने की क्रिया)
कुलबोरूक	– कुल के नाँव बोरइया। (कुल का नाम डुबाने वाला)
कोड़ान	– मिंजई बेखन पैर कोड़े के बुता। (मिंजई के समय धान की पुआल को पलटने की क्रिया)
कोरहा	– कोरा मा रेहे के आदी। (गोद में रहने का आदी)
कोल्लर	– बइलागाड़ी के टाटी के बरोबर भराए जिनिस। (बैलगाड़ी के किनारों में बाँस आदि से बनाए गए घेरे के बराबर सामान की मात्रा)
खक्खी	– खए बर हमेसा ललाय रहइया। (खाने क लिए सदा लालायित रहने वाला)
खटकार	– रोक–ठोक बोलइया। (सच्ची–कड़ी बातें कहते वाला)
खबड़ा	– घेरी–बेरी या बिक्कट खवइया। (बार–बार या अधिक खाने वाला)
खरिकाडाँर	– गाँव के बाहिर मा मवेशी मन लाल सकेले के जगा। (गाँव के बाहर पशुओं को एकत्रित करने का स्थान)
खादर	– बड़ बेखन ले पानी सकलाय रथे तउन जगा। (देर तक पानी संचित रखने वाला भू–भाग)
खुर्री	– अकरस पानी मा खेत के जोंतई। (आकस्मिक वर्षा से खेत की जोताई)
खुराजमोंगी	– सरखाए के बुता। (प्रमाणित करने की क्रिया)
खोड़हा	– पेड़ मा बने खोधरा। (वृक्ष का खोखला भाग)
गड़हा	– बइलागाड़ी मा कोनो जिनिस ला लनइया–लेगइया नइते अवइया–जवइया। (बैलगाड़ी में सामान ढोने या यात्रा करने वाला)
गदेली	– हैंथौरी के उभरे माँस वाला भाग। (हथेली का उभरा हुआ मांसल भाग)
गफेलना	– घेंच ला धर के धकियाना। (गला पकड़ कर धक्का देना) मुफ्त में मिलने पर गपागप खाना

गरी	– मछरी फँसाए के काँटा। (मछली पकड़ने का काँटा)
गरेगा	– डूमर पेड़ मा हावा के टकराए ले निकले भयंकर आवाज। (वायु के गूलर वृक्ष से टकराने पर उत्पन्न गंभीर ध्वनि)
गवना	– बिहाव के बाद बिदई के एक रसम। (नव–विवाहिता को दी जाने वाली बिदाई)
गाभी	– खेत जोंतत खानी पहिली हरिया के छूटे भाग जउन ला दूसर हरिया के संग जोते जाथे। (जोते जाने वाले खेत का वह अवशिष्ट भाग जिसे दूसरे चरण में पूरा किया जाता है)
गावा	– चिरइ मन हा खाए दाना ला नरी कना जमा करके राखथे तउन थैली। (पक्षियों द्वारा चुगे हुए दानों को गले क पास जमा करके रखने की थैली)
गिरमा	– मवेसी मन ला बाँधे के डोरी। (जानवरों को बाँधने की रस्सी)
गुखरू	– तरपौंरी मा काँटा गड़े ले बने गठान। (पैर की तली में काटा चुभने से बनी गाँठ)
गुराँवट	– अदला–बदली बिहाव। (विनियम विवाह)
गुलमा	– एक मोट्ठा डोरी जेकर एक मुँड़ी मा आगी सिपचाके राखे जाथे। (एक मोटी रस्सी जिसके एक सिरे पर आग लगाकर रखी जाती है)
गेरवाँ	– मवेसी के गर मा बाँधे जाथे तउन डोरी। (पशुओं के गले में बाँधी जाने वाली रस्सी)
धुमनी	– कलेचुप रहइया (माईलोगिन)। (चुप रहने वाली महिला)
घेंघरी	– दार वाले बीरता के मिंजई करे मा अधफुटहा नइते बिनफूटे फर। (दलहनी फसल की मिंजाई करने पर अधफूटी या बिना फूटी हुई फल्ली)
घउहा	– जेकर तन मा बारो महिना घाव रथे। (जिसके शरीर में सदा घाव रहता है)
चउथिया	– बिहाव के बाद दुलहिन ला लेगे बर ओकर मइके ले अवइया बरात। (विवाहोपरांत वधू को वापस ले जाने के लिए उसके मायके से आने वाली बारात)
चटकारना	– जीभ अउ मुहूँ के ऊपरी तल्ला के सहयोग ले अवाज निकालना। (जीभ और तालू की सहायता से ध्वनि निकालना)

चढ़ाव	– बिहाव बखत दुलहा डाहर ले भेजे गहना, ओनहाँ अउ सिंगार के जिनिस। (विवाह के समय वर पक्ष से भेजे जाने वाले आभूषण, वस्त्र एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुएँ)
चबेना	– समे काँटे बर नइते मुहूँ के सुवाद बदले खातिर खाथें तउन खई। (समय काटने या मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाया जाने वाला खाद्य पदार्थ)
चमकुटवा	– बहुँत कूद–फाँद करइया। (अधिक उछल–कूद करने वाला)
चमरछौकन	– झप ले नइ सिराय तइसन समसिया। (जल्दी समाप्त न होने वाली उलझन)
चरखाडाँड़	– खुसियार पेरे के जगा। (गन्ना पेरने का स्थान)
चर्रा	– पेरौड़ा के चेम्मर छोलटी। (वृक्ष के तने की कड़ी छाल)
चिलउटी	– तात भाँड़ा मा धरे के फरिया। (गर्म बर्तन को पकड़ने का कपड़ा)
चुरेना	– माँटीराख मा चुरोए ओनहाँ। (मिट्टी राख डालकर खौलाए गए कपड़े)
चेरियाना	– आमा मा चेर बँधना। (आम की गुठली में कवच बनना)
छटपटइया	– बियाकुल होवइया। (व्यग्र होने वाला)
छटारा	– मवेशी मन के गोड़ के मार। (पशुओं के पैर की मार)
छरवट	– बाहना मा छरे। (ओखरी में कूटा हुआ)
छिंटहा	– परसाद भर के (रंग वाला बूंदी वाले) बनाए लाड़ू। (प्रसाद भर कर रंगीन बुंदियों से बनाया जाने वाला लड्डू)
छेपकहा	– चेपटा नाक वाला। (चपटी नाक वाला)
जपर्रा	– बिक्कट सुतइया। (अधिक सोने वाला)
जिठौत	– कुरासससुर के बेटा। (जेठ का पुत्र)
जियतबरेंडी	– अइसन सुवारी जउन हा अपन मरद ला छोंड़ के दूसर मरद बना डरे हे। (वह स्त्री जिसने अपने पति को छोड़कर दूसरा पति बना लिया हो)
जीवबरार	– जीव बचाए खातिर गाँव के देवी–देवता मन के पूजा बर बमाँगथे तउन बरार। (प्राण–रक्षा के लिए ग्राम्य देवी–देवताओं की पूजा क निमित्त माँगी जाने वाली दान–राशि)

जुअतिया	– करिया रेसम के डेरा। (काले रंग का रेशमी डोरा)
जुठरइया	– जूठा करइया। (जूठा करने वाला)
जुड़वास	– माता के सांति खातिर करथें तउन पूजा। (माता की शांति के लिए की जाने वाली पूजा)
जेठासी	– बड़े भैया ला बँटवारा मा देथे तउन उपरहा खेत। (ज्येष्ठ भ्राता को बटवारे में दी जाने वाली अतिरिक्त जमीन)
जेवनासा	– बरात ठहराय के जगा। (बरात ठहराने का स्थान)
झकोरा	– चौमासा के जोरलगहा हावा। (वर्षा ऋतु की वेगपूर्ण हवा)
झिरसना	– थोरिक समे से फुसुर–फासर पानी। (पानी की अल्पकालिन हल्की फुहार)
झीक–फापड़ा	– बन–बूटा मा तोपाय खोचका–डीपरा भुइयाँ। (घास से आच्छादित ऊबड़ खाबड़ धरातल)
झुठलंगरा	– अब्बड़ लबारी मरइया। (अधिक झूठ बोलने वाला)
टनटनाना	– घाव के सपूरन पाकना। (घाव का पूर्णतः पकना)
टसकना	– कलेचुप चले जाना। (चुपचाप खिसकना)
टेचरहा	– अँजेरी बोलइया। (व्यंग्य वचन बोलने वाला)
टेटरा	– आँखी के पुतरी मा बनथे तउन सफेद गठान। (आँख की पुतली में बनने वाली सफेद गाँठ)
टोटका	– अनहोनी ले बाँचे खातिर फूँकाझारा करवाना। (अनिष्ट के निवारणार्थ किया जाने वाला तांत्रिक अनुष्ठान)
ठग–फुसारी	– लबारी मार के धन हड़पई। (झूठ बोलकर धन हड़पने की क्रिया)
ठुँठरना	– पेड़ के खाँधा मन ला काँटना। (वृक्ष की शाखाओं को काटना)
ठौरियइया	– एक जगा एकठ्ठा करइया। (एक स्थान पर संचित करने वाला)
डँगनी	– खेत नापे बर निसचित लंबान वाला बाँस। (खेत नापने के लिए प्रयुक्त निश्चित लंबाई का बाँस)
डड़ोरिया	– दू एलंग मा ढरहा छान्हीं। (दो दिशाओं में ढाल वाला छाजन)
जमरूवा	– बघवा के पीला। (बाघ का बच्चा)
डहडहई	– आगी के डाह। (आग की जलन)
डिपरा	– भुइयाँ नइते खेत के ऊँच भाग। (धरातल या खेत का ऊँचा भाग)

डीही	– ओ डिपरा जेमा पहिली बसे गाँवे क चिन्हाँ मिलथे। (वह टीला जिसमें पूर्व में बसे गाँव का अवशेष मिलता है)
ढोंकना	– एके साँस मा पीना। (एक ही साँस में पीना)
ढोलकहा	– ढोल बजइया। (ढोलक बजाने वाला)
तखियइया	– जाँच–परताल करइया। (जाँच–पड़ताल करने वाला)
तिजनाहँवन	– काठी के तीसर दिन के नाहँवन। (मृतककर्म के तीसरे दिन का स्नान)
तिजहारिन	– तीजा रहइया। (हरितालिका व्रत रहने वाली)
तितरा	– तीन झन नोनी के पाछू जनम लेवइया बाबू। (तीन लड़कियों के बाद जन्म लेने वाला लड़का)
तिहरा	– तीन पुरूत वाला। (तीन पर्तों वाला)
तीरखा	– कोनो जिनिस ला मढ़ाए खातिर कोठ मा गड़ियाए पथरा। (दीवार में उभार कर लगाया गया वह पत्थर जिस पर सामान रखा जाता है)
थनवार	– घोड़ा मन क देख भाल करइया। (घोड़ों की देखभाल करने वाला)
थुथेलना	– लात ले लतेलना। (पैर से ठोकर मारना)
दरबा	– दू ठन कोठ के बीच के खाली जगा जेमा टुटहा–फुटहा जिनिस मन ला फटिक दे जाथे। (दो दीवार के मध्य का वह छोटा स्थान जिसमें खराब वस्तुओं को फेंक दिया जाता है)
दहरा	– पानी भराए खइहा जगा। (जलमग्न खाई)
दाब	– मींजे के बाद बिन ओसाए अनाज के ढेरी। (मिंचाई के बाद बिना उड़ाए हुए अनाज की ढेरी)
दुघेरा	– कोनो मनखे क रहवास गाँव ला छोंड़ के दूसर गाँव मा अउ खेती होना। (किसी व्यक्ति के निवास ग्राम के अतिरिक्त दूसरे ग्राम में और कृषि भूमि होना)
दुधरू	– दूध के रंग के। (दूध के रंग का)
दोखहा	– हरदम टोंका – टांकी करइया। (हमेशा टोकने वाला)
दोबला / दोगला	– लबारी मरइया। (झूठ बोलने वाला) / दो तरफ की बातें करने वाला
धरसा	– बइलागाड़ी के रावन। (बैलगाड़ी का रास्ता)

धरिहारिन	– ईंटा मन ला झुखोय बर लेगइया माईलोगिन। (ईंटो को सुखाने के लिए ले जाने वाली स्त्री)
धिंगरा	– ऊँच–पूर अउ मोट्ठा बदन वाला। (शारीरिक रूप से ऊँचा और मोटा)
धुमान	– कोनो मनखे क मरे ले गाँव मा मनाए जाथे तउन दुख। (किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मनाया जाने वाला ग्राम – शोक)
धोवन	– जूठा बरतन– भाँड़ा के धोवल पानी। (जूठे बर्तनों को धोया हुआ पानी)
नकडेवरा	– लंबा नाक वाला। (लंबा नाक वाला)
नकरोनहाँ	– बात–बात मा दोख देखइयो अउ सिकाएत करइया। (बात–बात में दोष निकालकर खिन्न होने और शिकायत करने वाला)
नटइया	– जबान के निभाव नइ करइया। (मुकरने वाला)
नरेड़ी	– टोंटा के आघू वाला भाग। (गले का सामने वाला भाग)
नारिक	– टुटहा–फुटहा ला सुधार के बनाए बरतन। (पुराना सुधारा हुआ बर्तन)
निंगऊ	– नींगे के लइक। (प्रवेश करने योग्य)
निपोरवा	– बिक्कट के हँसइया। (अधिक हँसने वाला)
नियाँइक	– नियाँव करइया। (न्याय करने वाला)
निसत्ता	– जउन ला दूसर ऊपर भरोसा नइ राहय। (जिसे दूसरे पर विश्वास नहीं रहता)
नुनचरा	– बिना तेल वाले आमा के अथान। (बिना तेल डाले बनाया गया आम का अचार)
नेमहाँ	– नीत– धरम के सपूरन निभाव करइया। (धर्म और नियमों को कट्टरता पूर्वक पालन करने वाला)
नेरना	– घर मा छान्हीं छाए बर भदरी पीटना। (मकान में खप्पर छाने के लिए बाँस की खपच्चियों का आधार बनाना)
नेवतहार	– नेंवता बँटइया। (निमँत्रण बाँटने वाला)
नोखियई	– कोनो बुता ला करवाए खातिर घेरी–बेरी मनई। (कार्य–विशेष को कराने क लिए बार–बार मनाने की क्रिया)

नोना	– दूहे खातिर गाय नइते भइँस के पाछू के दूनों गोड़ ला नाई मा बाँधना। (दूहने क लिए गाय या भैंस के पिछले पैरों को रस्सी से बाँधना)
नौसिखिया	– जउन हो कोनो बुता ला नवाँ–नवाँ सीखे रथे। (जो किसी कार्य को नया–नया सीखा हो)
पँचहर	– दुलही के मामा घर ले टिकावन मा टीके पाँच ठन बरतन। (वधू के मामा पक्ष द्वारा उपहार स्वरूप प्रदत्त पाँच प्रकार के बर्तन)
पँजरी	– धरम के काम–बुता मा देवी–देवता मन के भोग खातिर पिसान अउ सक्कर ले बनाए परसाद। (धार्मिक कार्यों में देवी–देवताओं के भोग के निमित्त आटे और शक्कर से बनाया जाने वाला प्रसाद)
पँड़रू	– भइँस्सी के नर पीला। (भैंस का नर बच्चा)
पइठू	– अपन घर – गोसइयाँ ला छोंड़ के पर मनख के घर रखेल बन के जवइया। (अपने पति को त्याग कर पराये पुरूष के घर रखैल के रूप में प्रवेश करने वाली)
पइरथन	– रोटी बेले खातिर अलगाय पिसान। (रोटी बेलने के लिए अलग किया हुआ आटा)
पखार	– ऊँच भुइयाँ नइते खेत के डिरा भाग। (ऊँची भूमि या खेत का ऊँचा भाग)
पचकुल	– पाँच किसम के जरी–बूटी ले बने दवई। (पाँच प्रकार की जड़ी–बूटियों से बनी दवाई)
पजहा	– धार बनावल। (धार किया हुआ)
पठउनी	– बिहाव के बाद नोनी के पहिली बिदा। (कन्या को विवाहोपरांत दी जाने वाली प्रथम बिदाई)
पढ़ंता	– अब्बड़ पढ़इया। (अधिक पढ़ने वाला)
पनकल	– आघू ले बाढ़ल। (पहले से बढ़ा हुआ)
पनियर	– पानी कस पातर। (पानी जैसा पतला)
परजाँवर	– आने–आने जोंड़ी वाला। (विषम युग्म वाला)
पहिरहा	– जउन ला पहिरत रथे। (जिसे पहना जा रहा हो)
पिछवाड़ा	– घर के पाछू के जगा। (महान के पीछे का स्थान)
पिलखहा	– वाजिब (मूल) आकार ले छोटे अनाज के दाना। (अनाज का अपेक्षित आकार से छोटा दाना)
पुचर्रा	– एके ठन बात ला घेरी–बेरी बोलइया। (एक ही बात को बार–बार बोलने वाला)

पुरोना	– कमती ला पूरा करना। (कमी को पूरा करना)
पेंउस	– जनमें गाय या भइँस के पियँर दूध। (ब्याई गाया या भैंस का पीला दूध)
पेटबोजवा	– पेट भरे खातिर खाए जाथे तउन खई जेमा सुवाद नई राहय। (क्षुधातृप्ति के लिए खाया जाने वाला स्वादहीन खाद्य)
फुँदरा	– रेसम ले ने बेनी गाँथे के फीता। (केशविन्यास के लिए रेशमी धागों से बना फीता)
फुनइया	– सूपा ले अनाज आदि ला साफ करइया। (सूप से अनाज आदि को साफ करने वाला)
बँकडाइया	– एक जगा बइठ के गवई–बजई। (एक स्थान पर बैठकर गाने–बजाने की क्रिया)
बरदाना	– गाय, भइँस या छेरी के गाभिन होना। (गाय, भैंस या बकरी का गर्भ धारण करना)
बाफुर	– मुहूँ के गाजा। (मुँह का झाग)
बिबकी	– चिढ़ाय खातिर मुहूँ मटकाना। (चिढ़ाने के लिए बनाई जाने वाली मुद्रा)
बिरवाना	– पहिनावा नइते आदत–बेवहार के नकल उतारना। (वेशभूषा या आदत व्यवहार की नकल करना)
बिल्होरन	– गोठ बात मा अरझा के रखइया। (बातों में उलझाकर रखने वाला)
बिहौअ	– दुसरइया मरद ले सुवारी के पहिली मरद ला देय जाथे तउन डाँड़। (द्वितीय पति द्वारा पत्नी के प्रथम पति को दिया जाने वाला विवाह का हरजाना)
बुढ़ियार	– खेती के बुता बर खेती के आधार दिन मा नउकर लगई। (कृषि कार्यों के लिए कृषि वर्ष क आधे दिनों में नौकर लगने की क्रिया)
बुरक्की	– उकुल–बुकुल होय ले मवेसी मन के नरियई। (व्याकुलवश पशुओं द्वारा की जाने वाली अनाज)
बोझहार	– बोझा ढोवइया। (बोझ ढोने वाला)
भँगेलना	– रोका–छेंका ला टोरना। (अवरोध को तोड़ना)
भजनहाँ	– भजन–कीर्तन गवइया। (भजन–कीर्तन गाने वाला)
भठना	– चलन नइ होना। (प्रचलन में न रहना)
भतपरहाबेरा	– संझौती जेवन के बेरा। (संध्याकालीन भोजन का समय)
भनेटी	– लउठी के दूनों मूँड़ी मा बंबर बार क चलई। (दोनों किनारों पर आग लगाकर लाठी चलाने की क्रिया)

भभकई	— आगी के बंबर बरई। (ऊँची लपटों के साथ आग जलने की क्रिया)
भरमाना	— भरम मा राखना। (भ्रमित करना)
भहरना	— बोझा के सेती अंग–अंग मा पीरा भरना। (बोझ का दर्द अंग–प्रत्यंग में फैलना)
भारा	— कटाल बीरता के बोझ। (कटी हुई फसल का गट्ठर)
भुर्रा	— पेट के अगियई। (पेट में होने वाली जलन)
भूतीपेरा	— डोरी बरे के पेरा। (रस्सी बटने का पैरा)
भेंभनहाँ	— घिनघिना दिखइया। (घिनौना दिखने वाला)
मउहारी	— मउहाँ के बगिच्चा। (महुआ का बगीचा)
मतराना	— मंतर बोल–बोल के पानी ला मथना। (मंत्रोच्चारण के साथ पानी को मथना)
मनखहा	— मनखे मन के तीरे–तीर रहवइया (पशु–पक्षी)। (मनुष्यों के पास–पास ही रहने वाला (पशु–पक्षी))
मनगम	— अपने सोंच–बिचार मा मस्त रहइया। (अपने विचारो में खाया रहने वाला)
मनघोपिया	— उदास रहइया। (उदासीन रहने वाला)
मनुखमार	— मनखे के कतल करइया। (मनुष्य की हत्या करने वाला)
मसगिद्धा	— माँस खवइया। (मांस भक्षण करने वाला)
मसरमोटिया	— उदबिरिस सुभाव वाला। (नटखट स्वभाव वाला)/मनकानी करने वाला
मुँहबाड़	— बढ़–चढ़ के बोलइया। (बढ़–चढ़ कर बोलने वाला)
मुँड़ेरना	— घर मा छान्हीं छाए के पहिली कोठ मा माटी मढ़ना। (महान में छाजन बनाने के पूर्व दीवार पर मिट्टी चढ़ाना)
मुनारा	— गाँव नइते राज के सियार के चिन्हाँ। (गाँव या राज्य का सीमा निर्धारक चिन्ह)
रतमुहाँ	— लाल मुहूँ वाला। (लाल मुँह वाला)
रूखवार	— पेड़ मन मा चघइया। (वृक्षों पर चढ़ने वाला)

रोखमा	– साग के रसा गढ़ियाए खतिर मिलाथे तउन पिसान। (सब्जी का रस गाढ़ा करने के लिए डाला जाने वाला आटा)
लइकोरिन	– दूध पियइया लइका के महतारी। (दूध पीते बच्चे की माँ)
लबडेना	– फटिक के मारे के काम मा लाथे तउन छोटकुन लकड़ी। (फेंक कर माने के लिए पुयक्त की जाने वाली छोटी लकड़ी)
लमेरा	– अपन मन के जागल पौधा नइते नार। (स्वभाविक उगा हुआ पौधा या बेल)
संगभतारी	– घर–गोसइयाँ संग रहइया सुवारी। (पति के साथ रहने वाली स्त्री)
सउँखिया	– सउँख रखइया। (शौक रखने वाला)
सत्तहा	– सत्तनरायन के कथा करइया। (सत्यनारायण की कथा कराने वाला)
सधइया	– कोनो बुता के एकदम जानकार। (किसी कार्य में दक्ष होने वाला)
सरेखना	– बात ला परमानित कराना। (बात की पुष्टि कराना)
सीथा	– भात के दाना। (पके हूए चावल का दाना)
सुठौरा	– छेवारिन ला खवाथें तउन दवई वाले लाड़ू। (प्रसूता को खिलया जाने वाला औषधीय लड्डू)
सुपेला	– चिरई–चिरगुन ला खवाए खातिर गूँथे धान के बाली। (पक्षियों के चुगने के निमित्त गूँथी जाने वाली धान की बाली)
सेंधरा	– बेर उवे के पहिली के ललियहा अँजोर। (सूर्योदय के पूर्व की लालिमा)
हँड़हेरा	– एक परिवार नइते गोत वाले आदमी। (एक ही परिवार या गोत्र का व्यक्ति)
हरेरा	– हवा के चले ले पीपर पेड़ ले निकले आवाज। (वायु चलने से पीपल वृक्ष से उत्पन्न होने वाली ध्वनि)
हाही	– कोनो जिनिस ला पाए के एकदम लालच। (किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा)
हुमकी	– ओकियई क पहिली अवइया डकार। (उल्टी होने के पूर्व आने वाली डकार)

लोकोक्ति (हाना)

कहावतें लोक साहित्य का अभिन्न अंग हैं। इसे छत्तीसगढ़ी में हाना कहते हैं। जिसका उपयोग सीधा सपाट रूप से किसी विशेष बात को रखने के लिए किया जाता है।

छत्तीसगढ़ी हाना		हिन्दी अनुवाद
1	गेहूँ के संग में कीरा रमजाना	गेहूँ के साथ घुन पीसना
2	कउवाँ कान ल लेगे त, कान ल टमर के देख	कौआ कान ले गया इससे पहले छू कर तो देख
3	चलनी म दूध दूहे, करम ल दोष दे	चलनी म दुध दूहना और भाग्य को दोष देना।
4	कथरी ओढ़ के घी खाय	कंबल ओढ़कर घी खाना
5	एके लउठी म सबला हाँकना	एक लाठी में सबको हाँकना
6	बइरी बर उँच पीढ़ा	बैरी को ऊचाँ आसन देना
7	दूधो गे दुहना गे	दूध भी गया, दोहनी भी गयी
8	दूबर बर दू असाढ	दुर्बल के लिए दो असाढ़
9	घानी कस बइला पेराना	घानी के बैल समान पीसना
10	बाँटे भाई परोसी	बँटवारे के बाद भाई भी पड़ोसी होता है
11	ररूहा सपनाये दार भात	दीन मनुष्य को सपने में दाल–भात दिखता है
12	दूधयारिन गाय के लात मीठ	दूध देने वाली गाय की लात मीठी
13	गाँव के कुकुर गाँव डहर भूकँही	गाँव का कुत्ता गाँव तरफ भौंकता है
14	आय न जाय, चतुरा कहाय	आना जाना नहीं, चतुर कहाना
15	परोसी के बूती साँप नइ मरै	पड़ौसी के भरोसा साँप नहीं मरता
16	कोइली अऊ कउवाँ बोली ले चिन्हाथे	कोयल और कौवे की पहचान बोली से होती
17	हाथी के पेट सोहरी म नइ भरय	हाथी का पेट छोटी सी रोटी खाने से नहीं भरता
18	जेकरे बेंदरा तेकरे ले नाचे	जिसका बंदर उसी से नाचता है
19	खेत चरे गदहा, मार खाय जुलाहा	गदहा खेत चरता है मार जुलाहा खाता है
20	जेकरे खाय, तेकरे गाए	जिसका खाना उसका गाना

21	केहे आन, करे आन	कथनी ओर करनी में अंतर
22	कहइ ले करइ बने	कहने से करने भला
23	महतारी परसे, मघा के बरसे	माँ का परोसा और बादल का बरसा
24	कब बबा मरही, त कब बरा चुरही	कब बबा मरेगा तब घर में बड़ा बनेगा
25	हपटे बन के पथरा, फोरे घर सील	जंगल में किसी पत्थर से ठोकर लगी, आकर सिल फोड़ रहा है
26	केरा कस पान हालत हे	केले की पत्ती की तरह हिलना
27	ररूहा बेंदरा बर पीपर अमोल	लोभी बंदर के लिए पीपल का पत्ता अनमोल
28	धान पान अऊ खीरा, ये तीनों पानी के पीरा	धान, पान और खीरा के लिए अधिक पानी लगता है
29	जइसन बोही, तइसन पाही	जैसा बोओगे, वैसा पाओगे
30	एक नाऊ के मुड़े	एक ही नाई द्वारा मुंडन हुआ

मुहावरा

हाना के असन मुहावरा घलो लोक जीवन ले आथे। एकर बिना कोनो वाकय के अरथ पुरा नई होय। ए मन मनखे के सहज मं मुँह ले निकलथे। बोले के बेरा आय जेन कोनो बिसेस बात ला केहे बर उपयोग करे जाथे। एहा भाखा के सुन्दरई ल बढ़ाथे अउ एमन सार रूप के बात ल रखे बर बढ़िया उदीम आय।

छत्तीसगढ़ी मुहावरे – हिन्दी अर्थ

छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ	छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ
अंग लगना	– असर होना	करम फाटना	– अभागा होना
अइठ के रहना	– मन मसोस कर रहना	घाठा परना	– अभ्यस्त होना
रोना राही परना	– किसी की की मृत्यु होना	कुआँ म कूदना	– खतरा मोल लेना

नाक रखना	– इज्जत बचाना	तइहा के बात बइहा होना	– पुरानी बातों का महत्त्वहीन होना
करम ठठाना	– भाग्य को दोष देना	बारा कुआँ म बाँस डालना	– बहुत परेशानियाँ झेलना
कुकुर बिलई होना	– दर–दर भटकना	थूँक–थूँक म बरा चूरना	– मुफ्त में काम करा लेना
छाती म चढ़ना	– उपद्रव मचाना	हाथ मारना	– लाभ होना
मूड़ म चढ़ना	– उपद्रवी होना	छाती छोलना	– परेशान करना
मीठ लबरा होना	– चापलूस होना	तरूआ ठठाना	– पछताना
कनिहा टूटना	– असहाय होना	साँप के बिला म हाथ डालना	– खतरा मोल लेना
आँसू पोंछना	– ढ़ाँढ़स बँधाना	कान देना	– ध्यान से सुनना
कोंचई काँदा होना	– विचार सीमित होना	नाक कटाना	– इज्जत गवाना
घुरूवा गांगर होना	– बेकार होना	आँखी म धुर्रा झोंकना	– धोखा देना
गदहा ल ददा कहना	– विपत्ति में अपात्र की खुशामद करना	दाँत निपोरना	– लज्जित होना
अँचरा लमाना – आँचल फैलाना	– टोना करना	चेथी खुजवाना	– बहाना बनाना
अंडा सेना	– घर में व्यर्थ बैठकर समय गवाँना	कान म तेल डालना	– निश्चिंत रहना
अटर्रा होना	– पूछ परख में कमी होना	चुचवा के रहना	– निराश होना
आँखी के पुतरी होना	– प्यारा होना	दिन – बहुरना	– सुख के दिन आना
हँड़िया अलग करना	– बँटवारा होना	लाहो लेना	– उत्पात मचाना
रगड़ा टूटना	– परस्त होना		

मुहावरा

कहावतें की तरह मुहावरें भी लोकजीवन से आते हैं। ये वाक्यांश होते हैं वाक्य में इनके उपयोग के बिना अर्थ पूरा नहीं होता ये बोलियों की देन हैं जो किसी विशेष अर्थ के रूप में प्रयोजन में ले लिया जाता है। मुहावरे भाषा के सौंदर्य को बढ़ाते है और अभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं।

छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ	छत्तीसगढ़ी मुहावरे	हिन्दी अर्थ
अंग लगना	असर होना	अइठ के रहना	– मन मसोस कर रहना
रोना राही परना	मरजाना	नाक रखना	इज्जत बचाना
करम ठठाना	भाग्य को दोष देना	कुकुर बिलई होना	दर–दर भटकना
छाती म चढ़ना	उपद्रव होना	मूड़ म चढ़ना	उपद्रवी होना
मीठ लबरा होना	चापलूस होना	कनिहा टूटना	असहाय होना
करम काटना	अभागा होना	घाठा परना	अभ्यस्त होना
कुआँ म कूदना	खतरा मोल लेना	तइहा के बात बइहा होना	पुरानी बातों का महत्वहीन होना
बारा कुआँ म बाँस डालना	बहुत परिशानियाँ झेलना	थूँक–थूँक म बरा चूरना	कोरी कल्पना
हाथ मारना	लाभ होना	छाती छोलना	पेरशान करना
तरूआ ठठाना	पछताना	साँप के बिला म हाथ डालना	खतरा मोल लेना
कान देना	ध्यान से सुनना	नाक कटाना	इज्जत गवाना
आँखी म धुर्रा झोंकना	धोखा देना	दाँत निपोरना	लज्जित होना
चेथी खुजवाना	बहाना बनाना	कान म तेल डालना	निश्चिंत रहना
चुचवा के रहना	निराश होना	दिन–बहुरना	सुख के दिन आना
लोहा लेना	उत्पात मचाना	हँड़िया अलग करना	बँटवारा होना
रगड़ा टूटना	परस्त होना	अँचरा लमाना	आँचल फैलाना
अंडा सेना	घर में व्यर्थ बैठकर समय गवाँना	अटर्रा होना	पूछ परख में कमी होना

आँखी के पुतरी होना	प्यारा होना	आँसू पोंछना	ढाढस बंधाना
कोंचई काँदा होना	विचार सीमित होना	पाके केरा होना	नाजुक होना

वाक्य विचार

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
परिभाषा:— जिन शब्द समूह से बात पूरी तौर से समझ आ जाए, उसे वाक्य कहा जाता है। हर वाक्य में क्रिया अवश्य होनी चाहिए। वाक्य के दो भाग हैं: 1. उद्देश्य 2. विधेय	**परिभाषा:**— जेन सब्द समूह ले कोन्हों बात हा सही ढंग ले समझ में आ जाए, उही ला वाक्य कथे। हर वाक्य में क्रिया जरूर होना चाही। वाक्य के दू भाग हे:— 1. उद्देश्य 2. विधेय
उद्देश्य:— किसी वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। उदाहरण: रमा खा रही है। उपरोक्त वाक्य में रमा के बारे में बताया गया है, अतएत यहाँ उद्देश्य रमा है।	**उद्देश्य:**— कोन्हो वाक्य में जेकर बारे में कुछु बताय जाथे, वोला उद्देश्य कथे। उदाहरन:— जगेसर भात साग खावत हे। उपर के वाक्य में जगेसर के बारे बताय गेहे, जगेसर ह उद्देश्य हरे।
विधेय:— किसी वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ बताया जाता है उसे विधेय कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरण में 'खा' उद्देश्य है और 'खा रही है विधेय है। हाँ, यह भी जान लें कि आज्ञा सूचक वाक्यों में उद्देश्य छिपा हो सकता है।	**विधेय:**— कोन्हों वाक्य में उद्देश्य के बारे में कुछु बात बताय जाथे वोला विधेय केहे जाथे। उप्पर के नमूना में 'जगेसर' उद्देस्य हरे अउ 'भात—साग खावत हे' ये हा विधेय हरे। हमला ये भी जाने ल परही कि आज्ञा सूचक (आदेश वाले) वाक्य में उद्देस्य हा लुकाय रथे।

उदाहरणः— (क) उधर घूमो।

(ख) शांत रहों।

उपरोक्त दोनो में 'तुम' उद्देश्य छिपा है।

वाक्य के भेद

रचना के आधार परः—

1. सरल या साधारण वाक्य – सीता गाना गाती है।
2. संयुक्त वाक्य – छात्र पढ़ रहे हैं और वर्षा हो रही है।
3. मिश्रित वाक्य – अध्यापक कहते हैं कि सुबह उठकर पढ़ना चाहिए।

अर्थ के आधार परः—

1. विधानवाचक
2. निशेधात्कम या नकारात्मक
3. प्रश्नवाचक
4. विस्मयादिबोधक
5. इच्छावाचक
6. आज्ञावाचक
7. संकेतवाचक
8. संदेहवाचक

इनके बारे में विस्तार से जानकारी आगे की कक्षाओं में मिलेगी।

उदाहरनः— (क) जाव खेलो।

(ख) चुपचाप रहो।

उप्पर के दूनो वाक्य में 'तुमन' उद्देस्य ह लुकाय हे।

वाक्य के भेद

रचना के अधार लेः—

1. सरल या सधारन वाक्य – छोटू रोज स्कूल आथे।
2. संयुक्त या जुड़े वाक्य – लइकामन पढ़त हे अउ पानी गिरत हे।
3. मिसरित या मिंझरा वाक्य – गुरूजी कथे कि बिहनिया ले उठ के पढ़ना चाही।

अरथ के अधार लेः—

1. विधानवाचक
2. निशेधात्मक या नकारात्मक
3. प्रस्नवाचक
4. विस्मयादिबोधक या अचरित वाक्य
5. इच्छावाचक
6. आज्ञावाचक
7. संकेतवाचक
8. संदेहवाचक

इँखर बारे में बिसतार ले जानकारी आघू के कक्षा मा मिलही।

संदर्भ ग्रंथ

⇒ डॉ. चितरंजन कर/डॉ. सुधीर शर्मा, 2006, बोलचाल की छत्तीसगढ़ी (स्पोकन छत्तीसगढ़ी) वैभव प्रकाशन, आमीनपारा चौक पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.)

⇒ पुनीत गुरूवंश, 2016 शब्दसागर, (छत्तीसगढ़ी शब्दकोश), छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग, रायपुर (छ.ग.)

⇒ हरि ठाकुर/डॉ. पाले वर शर्मा, शिक्षादूत, छत्तीसगढ़ की लोकभाषा छत्तीसगढ़ी, शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन, समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.).

⇒ राम कुमार वर्मा, 18 अप्रैल 2011, हाना, छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ और कहावतों, भाारदा आफसेट प्रिंटर्स, प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर (छ.ग.).

⇒ लेखक मंडल, 2019, शाखा गुड़ी छत्तीसगढ़ी भाषा शिक्षण विकास हेतु संदर्शिका जिला शिक्षा एवम् प्रशिक्षण संस्थान, अछोटी दुर्ग (छ.ग.).

⇒ हरिराम पटेल, 2016, हमर छत्तीसगढ़ी भाषा अऊ व्याकरण, कॉम्पिटिशन एकेडमी बिलासपुर (छ.ग.).

⇒ डॉ. शंकर शेष, 1973, छत्तीसगढ़ी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (म.प्र.).

⇒ आस्था अग्रवाल, मेरी व्याकरण पुस्तक कक्षा 6वीं, युगबोध प्रकाशन, 6 समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

⇒ डॉ. नारायण स्वरूप भार्मा 'सुमित्र', 2012, व्यावहारिक हिन्दी, मंगल प्रकाशन, एक–96, वेस्ट ज्योति नगर, दिल्ली.

⇒ दयाशंकर शुक्ल, 1968 छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, छत्तीसगढ़ी शोध– संस्थान–रायपुर (छ.ग.).

⇒ संपादक मंडल 2017, प्राथमिक स्तर पर सीखने प्रतिफल, कक्षा 1–5, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर (छ.ग.).

⇒ डॉ. दीक्षा द्विवेदी, 2013, अच्छी हिन्दी तथा व्याकरण प्रयोग, दिल्ली पुस्तक सदन, शाहदरा, दिल्ली.

⇒ ऊषा टण्डन, 2008, आओ व्याकरण सीखें, पलक प्रकाशन, इलाहाबाद (उ.प्र.).

⇒ डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा/डॉ. सुधीर शर्मा, 2006, मानक छत्तीसगढ़ी का सुलभ व्याकरण पोथी प्रकाशन, भिलाई (छ.ग.).

⇒ डॉ. चितरंजन कर, 1993, छत्तीसगढ़ी की व्याकरणिक कोटियाँ, भाषा विज्ञान अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय – रायपुर (छ.ग.).

⇒ डॉ. चन्द्रकुमार चंद्राकर, 2008, मानक छत्तीसगढ़ी व्याकरण, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.).

⇒ प्यारे लाल गुप्ता, 1973, प्राचीन छत्तीसगढ़, लीडर प्रेस इलाहाबाद (उ.प्र.).

⇒ मदन लाल गुप्ता, 1996, छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (प्रथम भाग) भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, बिलासपुर (म.प्र.)

⇒ मदन लाल गुप्ता, 1996, छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (द्वितीय भाग) भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, बिलासपुर (म.प्र.)

⇒ एस.पी. परमहंस/डॉ. शिखा त्रिवेदी, 2006, हिन्दी मुहावरा कोष, दिल्ली पुस्तक सदन, शाहदरा दिल्ली.

⇒ राजेन्द्र चन्द्रकांत राय/नर्मदा प्रसाद इन्दुरख्या, 2009, आधुनिक हिनदी निबंध, मुकेश पुस्तक निलम, जबलपुर (म.प्र.)

⇒ डॉ हरिचरण शर्मा, 2005 हिन्दी साहित्य का इतिहास, माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर (राजस्थान).

⇒ डॉ मन्नू लाल यदु, 25 जून 2001, छत्तीसगढ़ की अस्मिता, छत्तीसगढ़ कला, भाषा और संस्कृति, कृष्ण सखा प्रेस, टूरी हटरी, रायपुर (छ.ग.)

⇒ डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा, 2002, छत्तीसगढ़ी लेखन का मानकीकरण, वैभव प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)

⇒ डॉ. विजय नारायण सिंह, 2007, लोकोक्तियों मुहावरा कोष, ग्रंथलोक, दिल्ली.

⇒ डॉ. हरदेव बाहरी, 2004, हिन्दी वर्तनी और व्याकरण अशुद्धि शोधन, विद्या प्रकाशन मंदिर नई दिल्ली.

⇒ डॉ. (श्रीमती) कृष्णा चटर्जी, 2006, छत्तीसगढ़ के प्रकाशित आंचलिक उपन्यासों का अनुशासीन, भावना प्रकाशन, दिल्ली.

⇒ सत्यव्रत शास्त्री, 2006, सुभाशितसाहस्त्री, राश्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.

⇒ श्रीमती दविन्दर कौर ब्राईट, ब्राईट्स, हिन्दी व्याकरण, ब्राईट पब्लिकेशंस, दरियागंज, नई दिल्ली.,

⇒ डॉ. पुरूषोत्तम आसेपा, 2005, छन्दों में व्याकरण, सूर्य प्रकाशन मंदिर, दाऊजी रोड, बीकानेर, राजस्थान.

⇒ डॉ. शिवराज छंगाणी, 1997, बाल ज्ञान पर्यायवाची काश, रूपान्तर, बीकानेर, राजस्थान.

⇒ मदन मोहन उपाध्याय, 2008, पुरखौती, लोकोक्तियाँ, मुहावरे और पहेलियाँ (बिलासपुर अंचल की भाषायी विविधता का संकलन) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

⇒ डॉ. पुरूषोत्तम आसोपा, 2005, बाल शब्द कोश, संधि, समास, शब्दकोश, सूर्य प्रकाशन मंदिर दाऊजी रोड, बीकानेर, राजस्थान.

⇒ डॉ. ओमप्रकाश, 2006, विद्‌यार्थी हिन्दी शब्दकोष, शिक्षा भारती, क मीरी गेट, दिल्ली.

⇒ श्रीपत राय, सचित्र प्राथमिक हिन्दी बालकोष.

⇒ मनोरमा जफा, 2006, सचित्र हिन्दी, बाल शब्दकोष, वंदना बुक एजेंसी, ग्राउंड फ्लोर, 109, ब्लॉक बी, प्रीत विहार, दिल्ली.

⇒ डॉ. मन्नू लाल यदू, 1979, छत्तीसगढ़ी, लोकोक्तियों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, भाषिका प्रकाशन, रायपुर (म.प्र.)